लहास अबिते रहत

(मैथिली उपन्यास)

रामकृष्ण परार्थी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-48495-26-6

लहास अबिते रहत
(मैथिली उपन्यास)

© रामकृष्ण परार्थी

प्रथम संस्करण : 2025
मूल्य : 250/-

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार-847211
पटना : 63, एम.आई.जी., हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Lahas Abite Rahat
Maithili Story by Ramkrishan Pararthi
First Edition : 2025, Price : 250/-

गरीबी-बेरोजगारीसँ फिरिसान भ’
अपन मातृभूमि मिथिलासँ पलायन करबा लेल बाध्य
मजदूर भाइ सभकेँ
सादर समर्पित।

पराभव ओ स्वप्न-भंगक आख्यान

ई बहुत खुशीक बात थिक जे एकैसम शताब्दीमे मैथिली उपन्यासक संसार बहुत अर्थे व्यापक भेल अछि। से नहि केवल विषय-वस्तुक स्तर पर अपितु सामाजिक परिवेश ओ सौहार्द्रक स्तर पर सेहो। ओना मैथिली उपन्यास शुरूहेसँ समाजमे व्याप्त कुरीति, समस्या, मानसिकता ओ व्यवस्थागत संकटकेँ लक्ष्य बनाक' लिखल जाइत रहल अछि। एहि शताब्दीमे मुदा एहि प्रकारक सामाजिक सोचमे व्याप्ति आयल अछि। मिथिलामे बाढ़िक समस्या हो, सामाजिक सौहार्द्रक समस्या हो, निरन्तर अपन जड़िसँ कटैत जयबाक अनुभव हो, समाजमे पसरल स्त्री-सम्बन्धी मान्यता हो, धिया-पूताक प्रति सोच आ व्यवहार हो वा सनातनी ब्राह्मणवादी मानसिकता वा जाति आधारित व्यवस्था पर प्रतिरोधी प्रहार हो, एकैसम शताब्दीमे मैथिली उपन्यास विभिन्न विषय-वस्तु पर सचेष्ट ओ साकांक्ष होइत आगाँ बढ़ल अछि। एहि कड़ीमे नव बात ई भेल अछि जे आब उपन्यास मिथिलाक अर्थ-तंत्र, गरीबी आ ओहिसँ उत्पन्न विभिन्न समस्या सभकेँ सेहो सम्बोधित कर' लागल अछि। जीवनयापनक कठिनता, स्वप्न-भंग ओ विभिन्न तरहक पराभव, पलायन आदिसँ छहोछित भेल परिवार, दुश्चिन्ता आ आशंकामे जीबैत समाजक चित्रण आ समस्याकेँ स्वर भेटब मैथिली उपन्यास लेल नव परिघटना थिक। रामकृष्ण परार्थीक ई उपन्यास 'लहास अबिते रहत' एही तरहक नव परिघटनाक अन्यतम साक्ष्य थिक। एहिमे हाशिया पर जीबैत परिवार आ समाजक मार्मिक चित्रण भेल अछि। परार्थी जी एक कविक रूपमे प्रसिद्ध छथि। हिनक कवितामे मिथिला-मैथिली अस्मिताक संग दलित चेतनाक प्रखर स्वर मुखर भेल अछि। अपन कविताक बाद ओ मैथिलीमे उपन्यासक माध्यमसँ जोरगर उपस्थिति दर्ज करौलनि अछि।

हमरा लोकनि जनैत छी जे अंग्रेजक जमानेसँ मिथिलाक आर्थिक-तंत्र पर हमला होयब प्रारम्भ भ' गेल छल। अंग्रेज ओ ओकर पिट्ठू जमीन्दार-सामंती वर्ग द्वारा सामान्य जनताक आर्थिक शोषण आ सामाजिक दलनसँ जीवनयापन कठिनसँ कठिनतर होइत गेल। कृषि-व्यवस्था, उद्योग-धंधा, शिल्पकारी

आदि जे किछु आर्थिक उद्यम छल, तकरा नष्ट-भ्रष्ट कयल गेल। लोककेँ ई आशा छल जे देश स्वाधीन होयत त' अपन राजमे सामान्य जनताकेँ पराभवसँ मुक्ति भेटत। मुदा से स्वप्न जमीन पर कहियो न उतरल।

मिथिलाक लोकक मुख्य जीवनयापनक साधन खेती-पथारी दिन-दिन छहोछित होइत गेल। बाढ़ि आ सुखाड़, खेती लेल आवश्यक संसाधनक अभाव, पूंजीक कमी, छोट-छोट जोत-भूमि आदि सभ मीलि कृषि-व्यवस्थाकेँ अलाभकर बनबैत चलि गेल। पारम्परिक उद्योग-धंधा नष्ट होइत गेल। नव-नव उद्योग-धंधाक सृजन नहि भ' सकल। फलस्वरूप मिथिलाक सामान्य जनताकेँ अपन भूमि पर रहि जीयब, परिवारक भरण-पोषण करब कठिनसँ कठिनतर होइत गेलैक। एहनामे भूमिकेँ छोड़ि देश-परदेशमे कमेबाक लेल, शारीरिक श्रम द्वारा जीविकोपार्जन हेतु पलायन एकमात्र उपाय बचि गेलैक। वस्तुकः पढ़ल-लिखल लोक आ बिन पढ़ल-लिखल लोक, दुनूक लेल अपन क्षेत्रमे रहि जीविकोपार्जन आ अपन विकास करब सम्भव नहि रहि गेलैक। दुनू अपन श्रम बेचबाक लेल विवश भेल। बौद्धिक श्रम आ शारीरिक श्रम, दुनूक आधार पर परदेश जाक' जीविकाक लेल देसकेँ छोड़ब, माटिकेँ छोड़ब विवशता भ' गेलैक। बहुतो त' ओत' जाक' बसियो गेल। क्रमशः अपन भूमिसँ सम्पर्क कम होइत गेलैक। सम्पर्क टुटबाक परिणति सामाजिक-सांस्कृतिक विछिन्नताक रूपमे सेहो समक्ष आबि रहल अछि। छिन्नमूलताक जड़िमे सैह अछि।

दोसर दिस, शारीरिक श्रम द्वारा जीविका अर्जित केनिहार लोक लेल अपन पूंजी, शरीरकेँ बचाक' राखब कठिन होइत गेलैक। मालिक, पूंजीपति द्वारा अत्यधिक शारीरिक शोषण, सामजिक सुरक्षाक अभाव, प्रशासनिक भ्रष्टाचार ओ विमुखता ओकरा मरणासन्न स्थितिमे आनिक' छोड़ि देलकैक। कतेक त' अपन जान सेहो एहिमे गमा देलक। परिवार बेलल्ल भ' गेलैक। वस्तुतः बिहार, विशेष क' मिथिला क्षेत्र एहि स्थितिसँ विशेष रूपेँ संकटापन्न भ' गेल अछि। वर्त्तमानमे वैश्वीकरण अथवा भूमण्डलीकरणक समयमे कॉरपोरेट पूंजीक नृशंस चाँगुर तर कार्यकालक समयावधि बढ़ैत चलि जायब सभ तरहक श्रमिककेँ आर पराभवमे झोंकि देलक अछि। दिमाग आ देह, दुनूक शोषण चरम पर अछि।

परार्थी जी अपन उपन्यास द्वारा एहि बातकेँ स्पष्टता संग रखलनि

अछि जे यदि एहन स्थिति नहि बढ़लत त' लहास अबिते रहत। प्रतिभावान लोको एहि व्यवस्थामे पिसाइते रहत। अपन स्वप्न ओ क्षमताक अनुसार ने जीवन जीबि सकत आ ने उन्नति क' सकत। देशक एक प्रतिभाशाली नवांकुर नष्ट हैत से फराकसँ सोचनीय। रोचकता, गतिशीलता ओ संवेदनात्मकतासँ ओतप्रोत एहि उपन्यासकेँ पाठक लोकनि स्वागत करताह, से विश्वास कयल जा सकैत अछि।

रामकृष्ण परार्थी मैथिली भाषा-साहित्यकेँ अपन विचार ओ संवदेनासँ, बहुमूल्य रचना सभक लगातार सृजनसँ समृद्ध करैत रहताह, ताहि शुभकामनाक संग—

लोहना **—अशोक**

21 मई 2025

-

.

लहास अबिते रहत

एक

अगहन महीना समाप्त होइबला छलै। अस्सी फीसदी किसान अपन धानके ट्रेक्टरस' दौनि-दौगानि क' क' घर भीतरा लेने छल। हँ, किछु बड़का गिरहत सभक किछु खेत एखनो धरि जरूर आबाद छलै, मुदा कॉस्को क्रिकेट टूर्नामेन्ट कमेटी एकताराक युवक सभके खेती-गृहस्थीस' कोन मतलब आ धान-गहूँमक की चिन्ता! ओ सभ भरल-पूरल घरस' सम्बन्ध रखैत छल। ककरो बाप गृहस्थ छलै त' ककरो बाप नौकरिहारा। उत्तरदायित्वक बोधस' अनभिज्ञ युवा चंचल मोनमे जे जखन अबै छलै, ठानि दैत छल। ई सभ एमकी अगहने महीनामे राजकीय उच्च विद्यालय एकताराक प्राँगणमे पंचायत स्तरक कॉस्को क्रिकेट टूर्नामेन्टक आयोजन कएने छल।

आइ मैचक पहिल दिन छलै। दर्शकक भीड़ देखि नहि बूझना जा रहल छलै कि एखन अगहन महिना चलि रहल छै। हरेक उमर आ हरेक वर्गक लोकस' फिल्ड खचाखच भरल छलै। स्कूलक छत पर नङरीमे नङरी बान्हल चारिगो भोम्हा रेडिओ चारू दिस मुँह कएने आइपीएलक धुनि पर एतुका वातावरणके एमदमस' क्रिकेटमय बना देने छलै। सभक माथमे क्रिकेटक दिवानगी चढ़ल छलै।

अजुका लीग मैच अरेड़ उत्तरी बनाम करही पंचायतक बीच छलै। निर्धारित समय दिनक अढ़ाइ बजे पाँच-सातगो कमेटीक सदस्य मुख्य अतिथि एकतारा पंचायतक मुखिया आ विशिष्ट अतिथि उच्च विद्यालय एकताराक प्रधानाध्यापक महोदयके ल' क' फिल्डमे उपस्थित भ' गेल। हुनका सभके फिल्डमे उपस्थित देखिक' दुनू क्रिकेट टीमक सदस्य सभ सेहो फिल्डमे चलि आएल आ पंक्तिबद्ध भ' फिल्डक बीचमे खड़ा भ' गेल। दुनू अतिथिगण सभस' पहिने खिलाड़ी सभस' हाथ मिलाक' जान-पहिचान कएलक आ तकर पछाति सभकियो सावधानक मुद्रामे खड़ा भ' राष्ट्रगान

गाबए लागल। दर्शक लोकनि सेहो राष्ट्रगानके सम्मान देबक लेल अपना-अपना जगह पर सावधानक मुद्रामे खड़ा भ' गेल।

राष्ट्रगानक उपरान्त मुखियाजी दुनू टीमक कप्तानके अपना नजदीक बजौलथि आ फेर अपना जेबीस' एगो सिक्का निकालि टॉस उड़ौलथि। टॉस अरेड़ उत्तरी पंचायत जीति गेल। दर्शक संग दुनू टीम थपड़ी बजाक' टॉसक स्वागत कएलक आ तकर बाद प्रधानाध्यापक महोदयक एगो गेन्द पर मुखियाजी बल्ला चलाक' मैचक शुभारम्भ क' देलक।

कमेन्टेटर माइक पकड़ि लेलक आ बाजए लागल—'अरेड़ उत्तरी टीमक सलामी बल्लेबाज टुन्नू पासवान स्ट्राइक सम्हारत आ ननस्ट्राइक छोर पर हुनका संग देबए लेल आबि रहल अछि अरेड़ उत्तरी टीमक कप्तान स्वयं रोहित सहनी, संगहि अपने लोकनिके एगो जनतब दी जे टुन्नू दुनू टीमक सभस' कम उमेरक क्रिकेटर अछि। हिनक उमर मात्र तेरह बर्ख छनि, मुदा क्रिकेटक क्षेत्रमे ई नम्हर-नम्हर कीर्त्तिमान बनौने अछि, अपन एगो अलग पहिचान बनौने अछि। एहि पंचकोशी भरिक लोक हिनका विस्फोटक बल्लेबाजीक चलते 'बौआबम'क उपनामस' जानए छनि आ रोहित सहनी बुझू जे एकदमस' राहुल द्रविड़, जँ एकबेर जमि गेल त' फेर उखड़नाय बड़ मस्किल, तेँ हम चाहब जे अपने लोकनि थपड़ीक गड़गड़ाहटिस' दुनू सलामी ओपनर बल्लेबाजक स्वागत करी।'

कमेन्टेटरक आह्वान पर दर्शक लोकनि पुरजोर थपड़ीक गड़गड़ाहटिस' दुनू आरम्भिक जोड़ीक स्वागत कएलक।

कमेन्टेटर मैचक आँखिदेखार हाल सुनबए लागल—'करही टीमक तेज गेन्दबाज नवीन कुमार नम्हर रनअपक संग टूर्नामेन्टक पहिल मैचक पहिल गेन्द फेकबाक लेल तैयार अछि आ बौआबम ढीठ लगौने गेन्दक प्रतीक्षा क' रहल अछि आ हे लिअ बौआबम विस्फोट कएलक, चौका!' आ ओम्हर भोम्हा रेडिओमे जोशगर आइपीएलक धुनि बाजए लागल।

पहिल ओवरमे टुन्नू कुल एगारह रन बनौलक। पहिल गेन्द पर चौका, दोसर-तेसर गेन्द सुरक्षात्मक ढंगस' खेललक आ चारिम गेन्द पर छक्का मारलक आ फेर पाँचम गेन्दस' अपन विकेट बँचबैत ओवरक अन्तिम गेन्द पर एक रन बनाक' दोसर ओवरमे फेर स्ट्राइक पर चलि आएल।

टुन्नू लेग स्लिप, ऑफ स्ट्रेट, चारू दिस छक्का-चौकाक बरसात

करए लागल। ओकरा एहि तरहे अन्धाधुन शॉट मारैत देखि दर्शक सभ अचम्भित छल। सभ ओकर देह-दशास' ओकर शॉटमे लागल ताकतिक तुलना क' रहल छल। एगो दर्शक ओकर प्रशंसाक पुल बान्हैत बाजल—'हौ, छौड़ाके देहमे त' एको रत्ती माउस नहि बूझाइ छै त' एते नम्हर-नम्हर शॉट मारै लेल ताकति कत'स' आनै छै?'

दोसर बाजल—'की कहलहक ताकति! छौड़ा स्टील बॉडी छै, हम एकरा चिन्है छियै, छौड़ा लूटन पाँड़ेक जोन सुम्खूआक बेटा छै, पहिने भरि दिन तीनकोनमा गाछीमे बकरीके छोड़िक' छौड़ा सभक संग क्रिकेट खेलाइत रहै छलै, गरीबक बेटा छै। नान्हिटास' बोझ-पाँज ढोने छौंड़ा दम पचा लेने छै।'

तेसर आदमी बाजल—'हौ भाइ, गाम-घरमे प्रतिभाक कमी नहि छै, खोजला पर हरेक गाममे कतेको सचिन तेन्दुलकर आ विराट कोहली मिल जेतह मुदा पहुँच-पैरवी आ पैसाक अभावमे एहन-एहन प्रतिभावान खिलाड़ीके प्रतिभा मटियामेट भ' जाइ छै।'

फेर पहिल आदमी बाजल—'सही गप कहलहक भाइ, ई जे कोनो रइस बापक बेटा रहितै त' जरूर क्रिकेटक भविष्य बनितए, मुदा की करतए बेचारा, किछु दिन आउर अपन सौख पूरा क' लै छै, आइ ने काल्हि त' अपन दुख-धनियाँमे पंजाब-गुजरात बौआहि पड़तै।'

सोलह ओवरक मैच छलै, एखन सातम ओवर प्रगति पर छल। टुन्नू लमसम दू सयके ऊपर स्ट्राइक-रेटस' तेइस गेन्द पर सैंतालिस रन बनाक' स्ट्राइक सम्हारने छल। रोहित सहनी चौदह गेन्द पर चौदह रन बनाक' कप्तानीक उत्तरदायित्व निमाहि रहल छल, सातम ओवरक दोसर गेन्द पर जखन टुन्नू स्ट्रेटमे एगो गगनचुम्बी छक्का जड़लक त' दर्शक लोकनि जोश आ उत्साहस' भरि गेल। सभ अपना-अपना जगह पर खड़ा भ' टुन्नूके अर्द्धशतकीय पारीक लेल थपड़ी बजा-बजाक' जोरदार ढंगस' स्वागत कएलक। टुन्नू सेहो अपना बल्लाके हवामे लहराबैत चारू दिस घुमिक' दर्शक लोकनिके धन्यवाद ज्ञापित कएलक मुदा दर्शक लोकनिक ई उत्साह अधिक समय धरि नहि टिकल। टुन्नू पुनः अगिला गेन्द पर एगो छक्का लगाक' सातम ओवरक चारिम गेन्द पर स्लीपमे कैच भ' क' पवेलियनक रस्ता ध' लेलक। फिल्डमे उदासी आ सन्नाटा पसरि गेल।

नीक खिलाड़ीक प्रति ओनाहितो कमेन्टेटरके सहानुभूति रहिते छै,

से कमेन्टेटर उदास भ' कमेन्ट क' रहल छल—'बौआबम, दुर्भाग्यपूर्ण तरीकास' छब्बीस गेन्दमे उनसठि रन बनाक' पवेलियन जा रहला अछि मुदा ओ जाधरि फिल्डमे रहला अपन उपनामक अनुरूप लगातार विस्फोट पर विस्फोट करैत रहला। दर्शकगणमे उत्साह आ रोमांच भरैत रहला, संगहि ओ अपना टीमके एगो मजगूत आधार द' क' गेलाह अछि। हम हुनकर बल्लेबाजीक सराहना करैत छियनि। आब अरेड़ उत्तरी टीमक आबयबला अगिला बल्लेबाज अछि वीरेन्द्र कुमार आ अरेड़ उत्तरी टीमक वर्तमान स्कोर अछि सात ओवर चारि गेन्दक बाद तिहत्तरि रन।'

फिल्डमे किछुए देर तक उदासी पसरल रहल कियैक त' आब रोहित सहनी सेहो खुलिक' टुन्नूक भरपाइ करय लागल छल आ ओम्हर वीरेन्द्र कुमार सेहो आक्रामक रूप अख्तियार कएने छल। मात्र बीस गेन्द पर दुनू खिलाड़ीक बीच एकतालीस रनक एगो नीक साझेदारी भ' चुकल छल। एगारह ओवरक पछाति अरेड़ उत्तरी टीमक स्कोर छल एक सए पाँच रन।

ओना त' सभ खेल अनिश्चितास' भरले रहै छै, ताहूमे क्रिकेट कने बेसिए। बारहम ओवरक पहिल गेन्द पर वीरेन्द्र कुमार क्लीन बोल्ड भेल, आउर बिनु एम्पायरक अँगुरीक इशाराक प्रतीक्षा कएने पवेलियन विदा भ' गेल, आ फेर पाँचम गेन्द पर रोहित सहनी कैच आउट भ' क' पवेलियनमे बैसि गेल मुदा नीक शुरूआतक चलते आबयबला बल्लेबाज सभके खुलिक' खेलयमे कोनो खास दिक्कति नहि भेलै। सोलहम ओवरक समाप्ति पर अरेड़ उत्तरी पंचायत आठ विकेटक नुकसान पर एक सए छियालिस रनक एगो विशाल स्कोर खड़ा क' देलक।

दोसर पारीमे खेलय आएल करही टीमक शुरूआत ओतेक नीक नहि रहल। दोसर पारीक पहिल ओवर जे अरेड़ उत्तरी पंचायत टीमक वीरेन्द्र कुमार फेकि रहल छल, ओकर तेसर फुलटॉस गेन्द पर करही टीमक स्टार बल्लेबाज मोनू कुमार शून्यक स्कोर पर कैच आउट भ' क' पवेलियन विदा भ' गेल। फेर तेसर ओवरक पहिल गेन्द पर टुन्नू करही टीमक कप्तान रमण कुमारके क्लीन बोल्ड क' क' विपक्षी टीम पर जबर्दस्त दबाव लाबि देलक। खींचि-तीरिक' करही टीम मैचके चौदह ओवर तक ल' गेल मुदा जे चाही से प्रदर्शन नहि क' पौलक। चौदह ओवरमे मात्र अन्ठानबे रन बनाक' सभ आउट भ' गेल।

छब्बीस गेन्द पर उनसठि रनक ताबड़तोड़ बल्लेबाजी आ चारि ओवरक गेन्दबाजीमे सतरह रन खर्चा क' तीन विकेट लेबयबला टुन्नू अपन उत्कृष्ट प्रदर्शनक दम पर अजुका मैचक 'मैन ऑफ दी मैच' चुनल गेल। सैकड़ो लोकक भीड़मे मुखियाजी आ प्रधानाध्यापक महोदय संयुक्त रूपस' ओकर हाथमे 'मैन ऑफ दी मैच'क ट्रॉफी द' क' पुरस्कृत कएलनि आ ओ प्रफुल्लित आ प्रोत्साहित होइत घर विदा भ' गेल।

जाड़क महीनामे दिन कोना-कोना बीति जाइत छै, कोनो पते नहि चलै छै! टुन्नू जखन घर पहुँचल त' मुनहारि साँझ भ' गेल रहै। पन्द्रह बरखक बड़की बहिन असिया आँगन बहारैत रहय आ माय ओरियानीमे असोरा पर टाँग लटकाक' बैसल दस बरखक छोटकी बहिन निरियाक गरदनि-पीठ ससारैत रहय। टुन्नू 'मैन ऑफ दी मैच'क पुरस्कार पाबि उत्साहित छलहे से ओ कने काल लेल बिसरि गेल छल जे आइ माय-बाबू आ दुनू बहिन गिरहतक दसकठबा खेतमे पसही बान्हय लेल गेल छलै। ओनाहितो बाल-बुतरू अपन सफलताक सूचना माय-बापके देबयमे गौरवान्वित महसूस करिते छै से टुन्नू गौरवान्वित होइत 'मैन ऑफ दी मैच'क कप माय दिस बढ़बैत बाजल—'माय गै, आइ फेर हमरा सभस' नीक खेलै लेल कप भेटलै ग'।'

टुन्नू खजौलीबालीक इकलौता बेटा छल से ओ जल्दी ओकरा कोनो काम-धन्धा नहि अढ़ाबय छल, मुदा आइ गिरहतक दसकठबा खेतमे धानक पसही बान्हयके रहय तेँ ओ टुन्नूके भिनसरे कहनहुँ रहै, 'बौआ रे, आइ नहि कतहु जइहे, सभ मायधिन आ बापे-पुते मिलिक' पसही ढो लेब, जेहे कुछ धान घरमे चलि एतहु त' पाबिन-तिहारमे भात-माँड़क दिक्कत नहि होतौ।' लेकिन टुन्नू नहि मानलक, क्रिकेट खेलाइ चलि गेल।

ओम्हर टुन्नूआक बाप सुक्खू एसगरे दसो कट्ठा खेतक धानके बोझा बान्हलक आ खजौलीबाली दुनू बेटीक संग दिन भरि बोझा ढोक' गिरहतक खरिहान पहुँचौलक। खजौलीबालीके अपन फिरसानीक कोनो चिन्ता नहि रहै। हँ, एतेक अफसोस जरूर होइ कि आइ जे टुन्नूआ किछु बोझ ढो दितै त' एहि दुनू छौंड़ीके किछु आराम भ' जइतै, से आइ ओकरा बोझा ढोइत काल जखन-जखन टुन्नूआक यादि अबय छलै, तखन-तखन ओकरा मुँहस' टुन्नूआक लेल अपशब्द निकलि जाइ छलै। ओकर तामस एखनो धरि नहि उतरल छलै। ओ टुन्नूआक हाथस' कप ल' क' आँगनमे

फेकि देलक आ टुन्नूआके अंट-संट गरियाबय लागल—'नान्हिटा हमर दूधपीबा बेटी भरि दिन मरदाबा जकाँ धानक बोझा ढोलक ग' आ ई सरधुआ बबुआनी करैत घुमै हैक', जइसे कुछ होना नहि जोना से ल' क' आयल ग' सुरखुरू कहबय लेल जे हम बड़का पहाड़ उन्टाक' एली ग'! चढ़बाके लाख दिन समझाबै-बुझाबै छियैक', रौ बौआ एहन काम कर जइसे पाँचो अँगुरी मुँहमे जाउक से हमर कहल नहि मानत आ गिरहत-महाजनक बेटाके देखा-देखी करत, मचरूआ ऊ सभ त' नहिओ कमैतइ-खटैतइ तइयो बाप-दादाके अरजलहा पर फूटानी झाड़तै आ तोहर भिखमंगा सभ कत' हौ तमघैल गाड़िक' रखने जइ पर फूटानी करबे!'

टुन्नू लेल ई सभ कोनो नव गप नहि छलै, ओ क्रिकेट खेलै लेल कतेको दिन माय-बापस' मारि-गारि खैने छल मुदा आइ पहिल दिन छलै जे माय कोनो ट्रॉफीके एना अपमानित क' क' फेकने छलै। ओनाहितो अपन प्रतिभाक दम पर पाओल पुरस्कार आ सम्मानस' लोकक स्वाभिमान जुड़ि जाइ छै। ओ अपना स्वाभिमान पर लैत आवेशमे आबिक' मायस' कहलक—'तोँ जते गारि पढ़बे तते आउर नहि हम कोनो काम करबौ।'

खजौलीबाली सेहो खिसियाले छल, बाजल—'नहि काम करबे तँ घरमे नहि खाइ देबौ।'

—'हँ नहि खेबौ।' एते गप बाजिक' टुन्नू बकरीबला घरमे मचान पर जाक' पेटकुनियाँ लाधि देलक आ असिया अँगनामे फेकल 'मैन ऑफ दी मैच' कपके उठबैत मायके डाँटय लागल—'अँय गै, ऊ नहि गेलौ ग' त' तोहर धान नहि ढोएलौ ग' जे भरल साँझ घिनब' लगै छहीक'!'

—'तोँ जे पक्ष ल' क' उठै छहीक' से अपना धिया-पूताके लोक नीक-बेजाय नहि समझैतै आ जे नीक-बेजाय समझैनाइ तोरा घिनाउन बुझाइ हौउक' त' हो, आब तोरो कुछ नहि कहबौ। जे मनमे होतउ से तोहूँ करिहे ग'।'

असिया असोरा परहक टाटमे बनल धनहारिमे (जाहिमे पहिनेस' किछु शील्ड कप आ ट्रॉफी सभ राखल छलै) कप राखैत मायके उतारा देलक—'तोँ नीक-बेजाय समझबै छहीक' कि मुँह छूटल हौउक', चटसे गारि दिअ लगै छहीक'!'

—'जे हमर कहल नहि मानतै त' गारि सुनबे करतै, तोरा बड रीस लगै हौउक त' कही जे किरकेट-फिरकेट छोड़िक' जे घरक काम-धन्धा

हइक' से करतै आ नहि त' पढ़तै-लिखतै।'

बड़ी देरस' चुपचाप बैसल निरियाके जेना बाजैक एगो मौका मिल गेल छलै, बाजल—'कहिआ से कहै हौउक' टिसन धरा दिअ से धराइए नहि दै छहीक' आ कहै छहीक' पढ़ही-लिखही लागि! हमरा जे डरेस लेल पाइ मिलल रहै सेहो खा गेलही। आइ-काल्हि करै छैक' आ हमरा डरेस नहि सीआ दै छैक'। फाटल-चीटल डरेस पेन्हक' हम इसकुल जाइ छीक'।'

निरियाक गपस' खजौलीबाली निरुत्तर भ' गेल आ मोने-मन सोचय लागल, छौंड़ी सही कहै हइक'। ओकरा जे डरेस लागि पाइ मिलल रहै से हमरे बेमारीमे खर्चा भ' गेलै। छौड़ो कहिआस' कहै हइक' जे दू साल बाद हमर मेटरीक परीक्षा हैक', हमरा कतहु टिसन धरा दे नहि त' फेल भ' जायब, ककरो देह पर ढंगक कपड़ा-लत्ता नहि हइक'। छौड़ाके कहिआ कत' जे एकतारा हाट परसे एगो पैजामा (लोअर) आ टीसट आनि देलियै, वैहे राइतो-दिन पेनन्हे रहै हइक'। एम्हर असिया सेहो बिआह जोकरक भ' गेलै आ घरमे एको छिद्दी पाइ नै देखै छियैक' मुदा शादी-बियाह आ सुइ-सराध कहीं रूकलै ग'! एमकी कर्जो-बिआन ल' क' निमाहे पड़तै। छौंड़ीके घरदेखी लग पेन्ह-ओढ़िक' जाइ लेल तक कोनो नीक सलवार-समीज नहि हइक'। ओना की कोनो छौंड़ी कम सुन्नरि हइक' मुदा सिंगार-पेटारक अभावमे भिखमँगनी जकाँ लगै हइक'। कोनो बड़का घरक बेटी रहितै त' सिंगार-पेटार कयने छौंड़ी भगवती जकाँ लगितै, हमरा सन जरलाहीके घरमे त' ढंगस' माथमे तेलो नहि जुड़ै हइक'!

मरदबोके की कहियै, उहो त' भरि दिन गिरहतक खेतसे खरिहान धरि खटिते रहै हइक'। एगो असगर कमौआ आ पाँच परानीक आश्रम, तैपर दर-दवाइ आ बच्चा सभके पढ़ाइ-लिखाइ से अलगे, कतयस' की करतै!

वात्सल्यता आ विपन्नताक भावनात्मक हिलकोरस' खजौलीबालीक हीयाक आक्रोश नोर बनि आँखि मेहें बहय लागल। आब ओकरा हीयामे आक्रोशक जगह ममता भरि गेल छलै। ओ पश्चाताप करय लागल, 'बेकार एते गारि-फजिहति केलिए टुन्नूआके, उहो त' कोनो दोसर छौड़ा सभ जकाँ पान-गुटका, बीड़ी-सिकरेट नहि खाइ-पीयै हइक' आ ने ताश-जुआ खेलाइ हइक'। रहलै किरकेट, त' ऊ त' नीक-नीक घरक बाल-बच्चा सभ खेलाइ हइक', बच्चा सभ अइ उमेरमे नहि खेलेतै त' कहिआ बूढ़मे खेलेतै ग'!

मायक आँखिस' नोर चूबैत देख निरिया अपराधबोधस' ग्रसित भ' बाजल—'कयला कानै छैक', हम कोनो अखनिए कहै छियौक' डरेस सीआब' लेल, जहिआ पाइ होतउ तहिया सीआ दिहे।'

खजौलीबाली अपन आँचरस' आँखिक नोर पोछिक' प्रतिउत्तरमे निरियाके पँजियाक' दुलार करैत बाजल—'दुनू खस्सी बिका जेतह त' तीनू भाइ-बहिनके कपड़ा कीन देब', जाउ छिट्टामेस' घास निकालिक' बकरी-खस्सीके द' अबिऔ ग'।'

खजौलीबालीके घरक नाम पर दू टा मरैया आ एगो घास-फूसस' घेरल छोट-छिन अँगना भरि छल। एकटा घर जाहिमे तीनू मायधिन सुतै छल, ओकरा अहाँ आश्रमी आ कि गोसाँइबला घर कहि सकैत छी। ओ लेबल-मूनल, नीपायल-पोतायल, खूब चिक्कन-चुनमुन रहै छलै आ दोसर बकरीबला घर, जाहिमे खरहीके टाट लागल छलै। ओहि घरक एक कोनामे बकरी-खस्सी बन्हाइ छलै आ दोसर कोनामे भनसा-भात होइ छलै आ ओहि घरक बीचमे सुक्खू मचान गाड़ने छल जाहि पर रातिक' दुनू बाप-बेटा आराम करै छल।

गाममे बिजली चलि आएल छलै, खजौलीबाली सेहो अपना घरमे लाइट लगा लेने छल। असिया बल्ब सभके स्वीच द' क' पहिने गोड़ लगलक आ फेर मायस' कहलक—'कपड़ा-लत्ताके बादमे सोचिहे, पहिने टुन्नूआके केकरो लग टीसन धरा दिही।'

खजौलीबाली शान्त भावस' कहलक—'हँ, अबय हौउक' बाप त' कहै छियैक' जे टुन्नूआके टीसन धरा दिऔ।'

भनसा-भातक समय होइबला छलै। असिया मायस' पुछलक—'माय, खेनाय कथी बनबिऔ ग'!'

—'कथी बनेबहि ग'! घरमे कोनो आटा हौउक' जे कहिऔ रोटी बनालेग', दुनू टेम भात खेलास' पेटमे गैस बनि जाइ हैक' आ डिलरबा हइ से गहूम दैके नाम नहि लै हइक', सभ गहूम बलैक क' दै हइक'।'

—'दालि-तरकारी सेहो नहि हौउक' घरमे।'

—'अल्लू हउ किने।'

—'अलुओ चारि-पाँचगो हौउक' लेकिन आइ भरि भ' जेतउ।'

खजौलीबाली आँचरक खूँटस' एगो बीसटकिया निकालि निरियाके

दैत कहलक—'ले दाइ, दस रुपयाके सोयाबिन आनि दिही ग' अल्लू-सोयाबिनके तरकारी आ भात बना लेतै।'

निरिया बीसटकिया ल' क' दोकान चलि गेल आ असिया एम्हर जरना-काठी ओरियाब' लागल।

सुक्खू जखन धानक अन्तिम बोझ खरिहानमे पहुँचाक' घर जाय लागल रहय, तखन ओकर गिरहत लूटन पाँड़े ओकरा रोकिक' कहने रहै—'सुक्खू, कने पुआरक कुट्टी काटिक' गायके सानी-पानी लगा दिही, तखन घर चलि जइहेँ।' दिन भरिक थाकल-ठेहिआएल सुक्खूके मोन भेल रहै जे कहियै ई रोज-रोजके एगारी-बेगारी हमरा से करल पान नहि लागत, मुदा एगारी-बेगारी ओकरा लेल एगो पुश्तैनी परम्परा रहै। कियैक कि ओकर बाप गुलाम पासवान सेहो लूटन पाँड़ेक ओहिठाम बोनिहारि करैत रहै आ ओहि समय लूटन पाँड़ेक दुअरा पर ट्रैक्टर नहि रहै, हर-बैलस' खेती होइत रहै। गुलाम दिन भरि हरवाही क' क' बेगारीमे दुनू बैलके सानी-पानी खुअबैत रहय। से सुक्खू नान्हिएटास' अपना आँखिए देखने छल। ओकरा ई पुश्तैनी परम्परा तोड़बाक सहास नहि भेलै आ ओ मोन मसोरिक' पुआरक कुट्टी काटय लागल।

सुक्खू जखन गायके सानी-पानी लगाक' घर पहुँचल त' घरमे भनसा-भात भेल रहै मुदा कियो खैने-पीने नहि रहै। खजौलीबाली तीनू मायधिन टुन्नूआके बौंसाबयमे लागल रहै। स्थिति देखिक' सुक्खूके बुझबामे कनिको भाङठ नहि भेलै, कियैक कि ओ टुन्नूआक प्रति खजौलीबालीक तामस दिनमे देखने रहै, तइयो अनठियाक' खजौलीबालीस' पुछलक—'की भेलै ग', कथी लेल नहि खाइ हैक' टुन्नू, अहाँ कुछ कहलिए ग'?'

खजौलीबाली पश्चातापक भावमे बाजल—'हमहीं कने डाँटि देने छलियै ग'।'

टुन्नू मायक फूसि पकड़ैत बाजल—'झूठ कयला बजै छहीक', खाली डँटनहि छलही ग' कि खूब गरिएबो केलही ग'।'

खजौलीबाली किछु जवाब दितै ताहिस' पहिने सुक्खू मचान पर बैसि गेल आ टुन्नूआक पैर अपना जाँघ पर राखि दबाबैत बाजल—'अच्छा की करबहक, माय-बापक गारिके लोक खराब नहि मानै हइक', कोइ माय-बाप अपना बाल-बच्चाके भलाइए लेल डाँट-डपट करै हइक'।'

टुन्नू आब असली गप पर आएल—'मारि-गारि दैत त' हमरा हानि नहि होइत, ई हमरा ओतेक लोकके बीचमे जे हाइ इसकुलक हेड मास्टर साहेब आ एकताराके मुखियाजी मिलिक' पुरस्कारमे कप देने छल, ओकरा खिसियाक' अँगनामे फेकि देने छल ग'।'

हालाँकि शुरूमे सुक्खू सेहो टुन्नूआक क्रिकेटक खूब विरोध करै छलै, कय बेर ओ टुन्नूआके क्रिकेट खेलेबाक कारण मारनहुँ-पीटनहुँ छल मुदा कय गोटे मुँहस' सुनलक जे टुन्नू खूब नीक क्रिकेट खेलाइ छै। कतेक गोटे समझेनहुँ रहै कि आब क्रिकेटमे सेहो नीक कैरियर होइ छै, नीक खिलाड़ीके आइपीएलमे चयन भ' जाइ छै त' ओ करोड़पति बनि जाइ छै, जाहि चलते ओ किछु-किछु प्रभावित होबय लागल छल आ जखन टुन्नूआ ई गप कहलकै कि मास्टर साहेब आ मुखियाजी मिलिक' हमरा पुरस्कार देलथि त' ओ गौरवान्वित भ' खजौलीबाली पर निशाना साधैत टुन्नूआस' कहलक—'ई की जानय गेलै पुरस्कार! एकरा नहिरामे कोइ पढ़ल-लिखल रहितै तबे ने बूझितै कि पुरस्कार की होइ हइक'!'

नहिराक बुड़ाइ पर स्त्रीगणके खौंझेनाइ स्वाभाविक होइ छै। खजौलीबाली खौंझाइत बाजल—'आ ई अपने कोन इए-बीए पास हैक', एकरो दादा-पुरखा त' सभ दिन हरबाहीए-चरबाहीए केलकै।'

माय-बापक बीच विवाद बढ़ैत देखि असिया बीच-बचाव करैत मायस' कहलक—'हो, आब तोँ दुनू लड़' लाग।'

खजौलीबाली खौंझाइते बाजल—'सुनलही ग' नहि जे केहन बढ़ि-चढ़िक' बात बजलै ग', जे हमरा नहिराके अदखोइ-बदखोइ करतै तकरा बाप-दादाके उकटि देबै।'

निरिया मुँह बिजकाबैत बाजल—'उकटि देबही कि उकटि देलही।'

सुक्खू आ खजौलीबालीक दाम्पत्य जीवनक अठारह वर्ष पूरा भ' गेल छलै। दुनू एक संग रहैत-रहैत एक-दोसराक स्वभाव आ विचारस' पूर्णरूपेण परिचित छल। सुक्खू खूब नीकस' बूझै छल जे हम जखन ओकरा नहिराक बुड़ाइ करबै त' ओ विष उगलबे टा करत मुदा टुन्नूआके बौंसाबय लेल गपके दोसर दिशामे मोड़नाइ ओकरा लेल अनिवार्य बुझना गेलै से ओ जानि-बुझिक' विषपान कएलक आ फेर खजौलीबालीस' क्षमायाचनाक भावमे बाजल—'हम जानि-बुझिक' अहाँ नहिराके नाम नहि लेने छली ग'।

हमरा धोखास' बजा गेल छल, आब माफ करू।'

एहि बेर खजौलीबाली किछु नहि बाजल— चुपचाप रहि गेल, ओकर मौनके माफी बूझि सुक्खू असियास' कहलक—'जो बेटी, राति भेल जाइ हौउक', खेनाइ निकाल ग'।' आ फेर टुन्नूआके समझाबय लागल—'बौआ, क्रिकेट खेलै छह से नीक बात भेलह, लेकिन पढ़नाइ-लिखनाइ पर सेहो धिआन दहक, कहबी हइक' बुड़बकहाके बेटा टके काबिल होइ हइक'। पाइ रहतह त' सभ कोइ पुछतह आ पाइ नहि रहतह त' कोइ नहि आदमी कहतह, हम नहि पढ़ली-लिखली त' बोनिहारि करै छीक'। कम-से-कम तोँ पढ़ि-लिखिक' आदमी बनह।'

जाधरि सुक्खू टुन्नूआके समझाबयमे लागल छल ताधरि निरिया एक लोटा पानि लाबिक' बापक आगूमे ध' देलक। असिया सेहो बाप आ भाइके एकहि थारीमे खेनाइ परोसिक' थारीके मचान पर बापक आगूमे रखैत बापस' कहलक—'बाबू, टुन्नूआके केकरो लग टिसन धरा दहक, एकरा दू साल बाद मैटरीकक परीक्षा हइक'।'

सुक्खू हाथ धोइत असियास' कहलक—'चौक पर जे करहीबला मास्टर साहेब पढ़बै छथिन, हुनका चारिम दिन कहने रहियै जे हमरो बेटाके टिसन पढ़ा दियौ जे फीस होत से कतौ मजदूरी क' क' द' देब त' कहने रहथिन अगिला महीना एक तारीखसे एगो नभका किलास शुरू होतय, तैमे भेजि दिअ लेल।' आ फेर टुन्नूके उठबैत कहलक—'उठ बेटा, खेनाइ खा ले, अगिला महीनामे एक तारीखके यादि पाड़िक' टिसन ध' लिहे।'

टुन्नू 'हँ-नहि' किछु नहि बाजल। उठिक' मुँह-हाथ धो लेलक आ बापक संगे खाय लागल। दुनू बाप-बेटाक खयलाक उपरान्त खजौलीबाली सेहो तीनू मायधिन खा-पीक' सुति रहल।

दू

आइ अरेड़ उत्तरी बनाम बेनीपट्टीके बीच पंचायत स्तर कॉस्को क्रिकेट टूर्नामेन्टक फाइनल मैच रहै। कमेटी द्वारा दुनू टीमके पहिनहिस' सूचना द' देल गेल रहय कि फाइनल मैचमे मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक आ विशिष्ट अतिथिमे प्रखण्ड विकास पदाधिकारी महोदय, बेनीपट्टी रहता, ताहि कारणे मैच कने जल्दीए शुरू हैत, तेँ सभ आदमी एगारह बजे धरि फिल्डमे उपस्थित भ' जाएब से टुन्नू लमसम दस बजे घरस' खा-पीक' मैच खेलय लेल विदा भ' गेल छल।

सोम आ वृहस्पति क' सप्ताहमे दू दिन एकतारा हाटा लगय छलै हाटक सटले उत्तरबारी भागमे मिडिल स्कूल छलै आ मिडिल स्कूलस' लमसम सए मीटर दूरी पर पूरबमे एकतारा हाइ स्कूल छलै। ओहि दिन वृहस्पतिक दिन रहै, मतलब एकतारा हाटक दिन, खजौलीबाली जे सभ परानी भरि अगहन बोनि कयने छल से झाड़ि-फटकिक' चारि क्विंटल धान भेल रहै, धान सुखा-अबाक' ओ कोठीमे राखि लेलक आ झट्टा छः सय रुपयामे एगो जादबक हाथे बेचि लेलक, असिया दुनू बहिनके चप्पल टूटि गेल रहै आ घरमे तर-तरकारी, नून-मशाला सेहो घटि गेल रहै। खजौलीबालीके हाथ पर पाइ रहबे करै से ओ बेरूपहर निरियाके संग क' क' हाट विदा भ' गेल। एखन ओ हाट पहुँचलो नहि छल कि भोम्हा रेडिओमे दूरेस' सुनाय लागल— 'हे बौआबमक जबर्दस्त चौका, हे बौआबम एक रन बड़ आसानीस' चोरा लेलक, हे बौआबम गगनचुम्बी छक्का जड़लक।' खजौलीबाली सभ परानी ई नीकस' बूझैत छल कि बौआबम छौड़ा सभ टुन्नूके नाम रखने छै, कियैक कि कहिओ काल जखन केओ टुन्नूआस' भेंट करय लेल आबै छल त' ओ टुन्नूके बौआबमक नामस' बजबैत छल, बेरमबेर भाइके नाम सुनि निरिया मायस' कहलक—'माय गै, बूझाइ हौउक' अखनि भैया खेलाइ हइक'।'

खजौलीबाली अपन सहमति दैत बाजल—'हँ, रेडिओमे बेर-बेर ओकरे नाम लै हइक'।'

निरिया उत्साहित होइत मायस' कहलक—'चल न, कने काल देखि लेब।'

खजौलीबाली लजाइत कहलक—'नहि गै, हम नहि जेबौ, ओत' मारि छौड़ा-मरदाबा सभ भरल होतै।'

—'मरदाबा-छौंड़ा सभ भरल होतै त' की भ' जेतै, कनिक दूरसे देख लेब।'

—'नहि, नहि जो, कीने-बेसाह'मे अबेर भ' जेतौ।'

निरिया जिद्द करय लागल—'चल न गै, खाली भैयाके खेला देखिक' चलि आएब।'

निरियाक जिद्दस' विवश भ' खजौलीबाली ओकरास' कहलक—'पहिने देखि अबै ग', पाँचो-दसटा मौगी-मुड़ारि होतै त' कतौ ठाढ़ भ' क' देखि लेब।' एतेक गप सुनिते निरिया लुत्ती भ' गेल। हाटक दिन रहै, दर्शकस' पूरा फिल्ड खचाखच भरल रहै। स्कूलक गेट पर किछु जनीजाति सेहो एक जगह जमा भ' क' मैचक आनन्द लैत रहय। निरिया जनीजातिके देखिते दौड़ैत मायक लगीच आएल आ हाँफैत बाजल—'इसकूलक गेट पर मौगी सभके भीड़ लागल हइक', चल न ओतयस' देखि लिहे।'

आश्वस्त भेलाक बाद खजौलीबाली निरिया संग मैच देखय लेल चलि गेल। मैचक चौदहम ओवर प्रगति पर छलै, बेनीपट्टी टीम पहिल पारीमे बल्लेबाजी क' क' एक सय एकावन रनक विशाल स्कोर खड़ा कयने छल, अरेड़ उत्तरी टीम लक्ष्यक पाछू करैत तेरह ओवर तीन गेन्दमे आठ विकेटक नुकसान पर एक सय छब्बीस रन बना लेने छल। मैच काफी रोमांचक स्थितिमे छलै। अरेड़ उत्तरी टीमके एखनो पनरह गेन्दमे छब्बीस रन बनबयके छलै, ओना लक्ष्य ओतेक मुस्किल नहि छलै लेकिन आठ विकेट गिड़लास' टुन्नू कने दबावमे जरूर छल। ओ खूब नीकस' बूझैत छल जे हमरा अलावा आब कियो ओहन बल्लेबाज नहि रहि गेल छै जे मैचके अन्तिम परिणाम धरि पहुँचा पाओत, से ओ सम्हरि-सम्हरिक' मुदा आक्रामक रूख अख्तियार कयने छल।

चौदहम ओवरके चारिम गेन्द ओ सुरक्षात्मक ढंगस' खेललाक बाद पाँचम गेन्द पर शॉट फिल्डरक माथक ऊपरस' एगो बेहतरीन चौका मारलक आ फेर ओवरक अन्तिम गेन्द पर एक रन ल' क' स्ट्राइक अपना

हाथमे राखि लेलक। आब स्कोर छलै चौदह ओवरक समाप्ति पर आठ विकेट एक सय एकतीस रन आ आ जीतयके लेल चाही छलै बारह गेन्द पर बीस रन।

दर्शक लोकनिक मोनमे अनिश्चितता भरल छलै। कियो कहै छलै अरेड़ उत्तरी टीमक जीत सुनिश्चित छै त' केकरो बूझना जाइत छलै कि बेनीपट्टी टीमक पलड़ा भारी छै कि संयोगस' पनरहम ओवरक पहिल गेन्द पर टुन्नू ऑफ साइडमे एगो जबर्दस्त छक्का जड़लक आ सभ तरहक अनिश्चितताके समाप्त कएलक। कमेन्टेटर जोशमे आबि कॉमेन्ट करय लागल—'हे लिअ बौआबमक एगो आउर शानदार टेक्नीकल छक्का।' आ फेर आइपीएलक जोशीला धुनि सुनि दर्शक जोशस' भरि गेल। सभकियो थपड़ी बजाक' ओहि शानदार छक्काक स्वागत करय लागल। देखा-देखी खजौलीबालीक हाथ सेहो अनयासे थपड़ीके रूपमे बाजि गेल। थपड़ीक आवाज सुनि बगलमे ठाढ़ निरिया माय दिस मुस्कियाइत देखलक त' ओ लजाक' तुरन्ते हाथ नीचाँ मुँहे क' लेलक। किनसाइत चारि-पाँच गेन्दक खेल देखलाक बाद ओकरा क्रिकेट किछु-किछु बूझैमे आबय लागल छलै।

पनरहम ओवरक दोसर गेन्दके टुन्नू अपना भरि प्रसास कएलक जे कहुनाक' सीमा-रेखाक पार कएल जाय मुदा दुर्भायवश गेन्द बाउण्ड्रीके भीतरे रूकि गेलै। तखन ओ गेन्द आ फिल्डरक बीच दूरीके अन्दाजैत दू रन लेल नन-स्ट्राइक छोड़ दिश दौड़ल लेकिन ओकर अन्दाज सेहो गलत भ' गेलै, ओकरा एक रन पूरा करिते-करिते गेन्द गेन्दबाजक हाथमे चलि एलै आ ओकरा विवश भ' नॉन-स्ट्राइकर छोड़ पर रूक' पड़ि गेलै। स्ट्राइक आब गोलू पाँड़ेक हाथमे छल आ गोलू पाँड़े अपन गेन्दबाजीक दम पर टीममे शामिल भेल छल, बल्लेबाजी ओकर ओतेक नीक नहि छलै आ ई गप टुन्नू नीकस' बूझैत छल से ओ चहलकदमी करैत गोलू लग आएल आ धीरेस' ओकरा कानमे कहलक—'भैया, जे मैच जीत' के हैक' त' केनाहितो क' एक रन ल' क' छोड़ बदलू।' गोलू सहमतिमे मूड़ी हिलौलक आ क्रीजमे आबि सावधान भ' गेल। टुन्नू सेहो नॉन-स्ट्राइकर छोड़ पर आबिक' एक रनक लेल अधीरतास' प्रतीक्षा करय लागल, लेकिन ओकर प्रतीक्षा-प्रतीक्षे रहि गेलै। बेनीपट्टी टीमक कप्तानके जेना गोलू पाँड़ेक कमजोर बल्लेबाजीक पहिनहिस' अन्दाज छलै, तहिना ओ चारू दिशक चारिगो बाउण्ड्रीक फिल्डर छोड़िक'

बाँकी सभ फिल्डरके नजदीक बजाक' गोलूके एकदमस' घेरि लेलक, पनरहम ओवरक तेसर-चारिम गेन्द गोलू बीट कएलक आ पाँचम गेन्द पर एगो आसान कैच द' क' पवेलियन दिस विदाह भ' गेल। फिल्डमे जेना मातम पसरि गेलै। फेर वैह अनिश्चितता— बेनीपट्टीके जीत सुनिश्चित छै त' नहि मैचमे एखन एक ओवर बाँचल छै आ बौआबम क्रीज पर मौजूद छै त' किछु नहि कहल जा सकैत अछि।

गोलू पाँड़ेके आउट भेलाक बाद नव बल्लेबाज सन्दीप महतो पहिने टुन्नूस' विचार-विमर्श क' लेलक आ तखन फेर बल्लेबाजी करय लेल स्ट्राइक पर चलि आएल। बेनीपट्टी टीम अपना रणनीतिमे परिवर्तन करैत एक रन लेल सन्दीपके स्वतंत्र छोड़ि कैच लपकय लेल आ बॉउण्ड्री रोकय लेल अपना फिल्डरके चारू दिश लगा देलक। पनरह ओवरक अन्तिम गेन्द सन्दीप महतो पूर्व निर्धारित योजनाक तहत सुरक्षात्मक ढंगस' खेलिक' अपन विकेट सुरक्षित क' लेलक। आब मैचक अन्तिम ओवरमे स्ट्राइक छलै टुन्नूक हाथमे आ अरेड़ उत्तरी टीमके जीतै लेल चाही छलै छः गेन्दमे तेरह रन।

मैच बहुत रोमांचक स्थितिमे पहुँचि गेल छलै लेकिन टुन्नू पर टीमके मैच जीतेबाक लेल दबाव बढ़ि गेल छलै। ओ सोलहम ओवरक पहिल गेन्द जखन दबावमे बीट कएलक त' दर्शकगणमे घोर निराशा भरि गेल, कमेन्टेटर सेहो ओकरा पर कॉमेन्ट करैत बाजल—'बौआबम, यैह ओवर अहाँक खेलक असली परीक्षा अछि। जँ एना बीट करैत रहब त' मैच अहाँक हाथस' निकलि जाएत।' कमेन्टेटरक गप सुनि सभदिन टुन्नूआक क्रिकेटक प्रबल विरोधी ओकर माय आइ ओकरा क्रिकेट लेल अपन इष्ट देवता सलहेश बाबाके मोने-मोन गोहराबय लागल।

सोलहम ओवरक दोसर गेन्द पर सेहो टुन्नूआक ऊपर दबाव स्पष्ट नजरि आएल। ओ जे चाही छल से अपना बल्लास' गेन्दके कभर नहि क' पौअलक। गेन्द बैटक ऊपरी किनारा छूबैत स्लीपमे सीमा-रेखाके पार त' क' गेल मुदा ओ कैच होबयस' बँचि गेल। आब मैच जीतय लेल चाही छलै चारि गेन्दमे नौ रन। टुन्नू अपन बिसरायल आत्मविश्वासके लाबय लेल बैटक सहारा लैत क्रीजमे दू-चारि बेर उठक-बैठक लगयलक आ फेर मोने-मोन करय आ मरयके लेल दृढ़ संकल्पित होइत फिल्डमे चारूभर नजरि घुमाक' देखय लागल। एम्हर खजौलीबाली अपना बेटाक ई क्रिया-कलाप

सभ देखिक' मोने-मन सोचय लागल, छौंड़ा कते अबर-दुबर लगै हइक', कने मोटाएल-सोटाएल रहितै त' देखहुमे नीक लगितै आ बाँहिओमे ताकति रहितै। एक त' हमरा घरमे नीकस' खेनाइ नहि जुड़ै हइक'। जे रुख-सुख बनबो करै हइक' त' खेलक पाछू खेनाइ पर धिआन नहि दै हइक', आइ जाइ छियैक' त' केकरो से दूध उठाना लगाक' दू-चारि महीना खिआ देबय।

आत्मविश्वासस' लबालब भरल टुन्नू सोलहम ओवरक तेसर गेन्द पर जखन अपन मनपसन्द दिशा स्टेटमे एगो गगनचूम्बी छक्का जड़लक त' दर्शक लोकनिमे जबर्दस्त उत्साहक संचार भेलै। सभ अपना-अपना जगह पर खड़ा भ' हो-हल्ला करैत ओहि छक्काक स्वागत करय लागल। मैच एखन बाँकी छलै से कमेटीके स्वेच्छाकर्मी सभके अन्देशा भेलै कि कहीं दर्शक सभ सीमा-रेखाक भीतरमे प्रवेश क' मैचमे कोनो तरहक व्यवधान नहि उत्पन्न क' दिअ से ओ सभ सीमा-रेखाक चौकसी करय लागल। एम्हर किछु समय मिललै त' बेनीपट्टी टीमक कप्तान अपना गेन्दबाजके समझाबय-बूझाबयमे लागि गेल आ फेर समझा-बूझाक' अपना जगह पर आबि क्षेत्ररक्षणक लेल तैयार भ' गेल मुदा टुन्नू मैच जीतबाक लेल अपनाके दृढ़ संकल्पित कयने छल। ओ केकरो रुकने रूक'बला नहि छल आ ने ओ कोनो रणनीतिमे फँसयबला छल। सोलहम ओवरक चारिम गेन्द पर एगो आत्मविश्वासस' भरल चौका मारि ओ जीतके अपना मुट्ठीमे बान्हि लेलक।

आइ ओ अठावन गेन्द पर नाबाद एकासी रनक मैच जीताउ पारी खेलिक' अपन आ अपना टीमक नाम जगजियार कएलक।

टुन्नूके जीतक चौका मारिते किछु लोक घर लेल विदाह भ' गेल त' किछु उत्साही दर्शक सभ बीच फिल्ड दिश दौड़ल आ ओहिमेस' एक व्यक्ति टुन्नूके अपना कन्हा पर बैसाक' एगो नीक भीड़क संग मंच दिश आबय लागल। ई सभ दृश्य देखिक' खजौलीबालीक अन्तर्आत्मा प्रफुल्लित छलै। आइ ओकरा पहिल दिन अपना बेटा पर गुमान भ' रहल छलै। आइ ओहि बोनिहारिनके पहिल दिन अपना पर स्वाभिमान भ' रहल छलै। मैच समाप्तिक पछाति कनिए देरमे आधास' अधिक फिल्ड खाली भ' गेल छलै। दू-चारिगो स्त्रीगणके छोड़ि बाँकी स्त्रीगण सभ सेहो चलि गेल छलै मुदा ओ आइ सभ चिन्ता-फिकीर बिसरिक' मुँहमे आँचर दबौने निरियाक कन्हा पर हाथ राखि आगूक कार्यक्रम देखबाक लेल मंच दिश टकटकी लगौने ठाढ़ छल।

आब आयोजक दिशस' पुरस्कार-सम्मान वितरण होबयबला छलै, सभस' पहिने बेनीपट्टी टीमस' खेलाड़ी गौतम कुमारके मंच पर बजाओल गेल। ओ चारि ओवरमे उनतीस रन खर्च क' क' चारि विकेट लेने छल आ पैंतालीस रन सेहो बनौने छल, ताहि लेल ओ अजुका मैचक 'मैन ऑफ दी मैच' चुनल गेल छल। माननीय स्थानीय विधायक आ प्रखण्ड विकास पदाधिकारी महोदय बेनीपट्टी द्वारा संयुक्त रूपस' ओकरा हाथमे 'मैन ऑफ दी मैच'क ट्रॉफी द' क' सम्मानित कएल गेल। दर्शक सभ थपड़ी बजाक' गौतमके प्रोत्साहित कएलक। तकर बाद टुन्नूके पूरा टूर्नामेन्टमे उत्कृष्ट प्रदर्शनके देखैत 'मैन ऑफ दी सीरीज'क लेल मंच पर बजाओल गेल। 'मैन ऑफ दी सीरीज'क लेल ट्रॉफीक संगमे एगारह सय रुपयाक नगद इनाम सेहो पहिनहिस' निर्धारित छलै से माननीय विधायक ओकरा हाथमे ट्रॉफी द' क' सम्मानित कएलक त' पदाधिकारी महोदय ओकरा हाथमे एगारह सय रुपयाक नगद पुरस्कार द' क' प्रोत्साहित कएलक। दर्शक लोकनि सभ थपड़ी बजाक' ओकरा पुरस्कार आ सम्मानके स्वागत कएलक।

एम्हर बेर डूबैत देख निरिया मायस' कहलक—'माय, चल न हाटके अबेर भेल जाइ हौउक', कहीं चप्पलबला चलिओ नहि जाइक!'

खजौलीबाली मंच दिश देखैत निरियास' कहलक—'कनिके देर आउर रूक न त' चलै छीक'।'

निरिया घोंघनाइत बाजल—'पहिने कहै छलियौ ग' चल त' कहै छलही ग' जे हमरा लाज होइ हैक' आ आब निसनी गड़ेने छैक'।'

अपन सन्ततिक सफलता पर कोनो माय-बापके खुश होनाय स्वाभाविक छै से ओकरो अपन बेटाके एहि तरहे मान-सम्मान पाबैत देखि अन्तर्मन प्रसन्न छलै। ओ निरियाक घोंघनाइके सुनिओक' अनठिया देलक आ चुपचाप मंच दिश देखैत रहल।

मंच पर ट्रॉफी आ पुरस्कार वितरण समारोह चलिए रहल छलै, आब बारी छल रनर ट्रॉफीक, ताहि लेल मंच पर उपविजेता टीमके बजाओल गेल आ टीमक कप्तानक हाथमे दुनू सम्मानित अतिथि संयुक्त रूपस' रनर ट्रॉफी आ पूर्व निर्धारित सात हजार रुपयाक नगद प्रोत्साहन राशि द' क' उपविजेता टीमक मनोबल बढ़ाओल गेल। अन्तमे विनर ट्रॉफी लेल मंचस' विजेता टीमके आवाहन भेल। विजेता टीमके मंच पर चढ़िते किछु लोक

अरेड़ उत्तरी पंचायत जिन्दाबादक नाराके जयघोष करय लागल त' किछु लोक थपड़ी बजाक' विजेता टीमक मंच पर स्वागत करय लागल। दर्शकक जयघोष आ थपड़ीक बीच सम्मानित अतिथिगण विजेता टीमक कप्तान रोहित सहनीक हाथमे विनर ट्रॉफी आ दस हजार एक सय एकाबन रुपयाक नगद पुरस्कार द' क' टीमके पुरस्कृत कएलक।

विनर ट्रॉफी लेल मंच पर चढ़ल टुन्नूके अनयासे अपना माय-बहिन पर नजरि पड़ि गेलै आ ओ आगूक सभ कार्यक्रम बिसरि गेल। ओ बिसरि गेल कि यार-दोस्तक संग मैचस' सम्बन्धित विषय पर चर्चा-परिचर्चा एखन बाँकी अछि। ओ बिसरि गेल कि यार-दोस्तक संग जीतक जश्न मनेनाय एखन बाँकी अछि। ओ मंचस' उतरि सोझे मायक लगीच आएल आ मायके भरि पाँज पजियाक' दुलारू बनैत पुछलक—'कखनि से छहीक', हम अखनि देखलियौ ग'।'

टुन्नूआक हाथमे एखनो 'मैन ऑफ दी सीरीज'बला चमचमाइत ट्रॉफी छलै, जकरा देखिते खजौलीबालीके पसही बान्हयबला दिनक घटना मोन पड़ि गेलै। ओ आत्मग्लानिस' भरि गेल, मोने-मोन पश्चाताप करय लागल। बेकार ओहि दिन हम खिसियाक' कपके अँगनामे फेकि देने रहियै, बड़ मेहनति से ई कप मिलै हइक', बड़का-बड़का लोक अइ कपके अपना हाथस' दै हइक' ओहोमे जे सभस' नीक खेलै हइ तकरे, आइ ओकरा कपक असली महत्व बूझा गेल छलै। ओ बेटाके बिनु कोनो उत्तर देने ओकरा हाथस' ट्रॉफी ल' क' निहारैत बाजल—'आइ इहे कप मिलल' ग'।'

टुन्नू छोट-छिन जवाब देलकै—'हँ' आ ओ ओहि कपके दुनियाँक सभस' अनमोल रत्न मानिक' झोरामे नुकाक' राखि लेलक।

टुन्नू अपना लोअरक जेबीस' पाइबला लिफाफा निकालिक' मायक हाथमे दैत बाजल—'एहिमे एगारह सय रुपया हौउक', चल तोँ अपना लेल एगो साड़ी आ निरियाके इसकूल ड्रेसक कपड़ा खरीद दिही ग'।'

खजौलीबाली बेटा-बेटीक संग फिल्डस' विदाह होइत बाजल—'ऊँ...हँ, साड़ी ल' क' अखनि हम की करब, हमरा लग साड़ी हेबे हैक', असियाके कोनो नीक कपड़ा नहि हइक', ओकरे एगो नीक सलवार-समीज कीन दहक आ तोँ अपना लेल एगो पैन्ट आ बुसट खरीद लिह'।'

निरियाक नाम खजौलीबालीस' धोखामे छूटि गेल छलै, ओ चेहाइत

बाजल—'आ हमरा लेल कुछो नहि!'

—'हँ गै, तोरो लेल ड्रेसक कपड़ा खरीदक' ओतय चौक पर सीअ लेल दर्जीके द' देबै।'

टुन्नूके बूझल छलै जे मायके कतहु जाय-आबय लेल नीक साड़ी नहि छै से जिद्द करय लागल—'नहि, हम नहि लेबौ पैन्ट-शर्ट, तोंही एगो नीक साड़ी खरीद ले ग'।'

आइ फिल्डमे खजौलीबालीके सेहो पहिल बेर बूझायल छलै कि जाहि हिसाबे छौंड़ाके पैघ-पैघ लोक सभस' जानि-पहिचान हइ तय हिसाबे ओकरा कोनो ढंगक कपड़ा नहि हइक' से ओहो जिद्द करैत बाजल—'हम नहिरा छोड़िक' आनठाम कत' जाइ छीक' आ नहिरा जेबौ करय छीक' त' साल-दू सालमे कहिओ एक-आध बेर, फेर कहिओ पाइ होत तँ कीन लेब आ तोँ त' दू दिन-चारि दिन पर कतौ नहि कतौ किरकेट खेल' लेल जाइते रहय छ'क', सभ दिन इहे पैजामा आ आँगी पेन्हने देखिक' लोक कि कहैत होतह कि एकरा लग नहि हइक' कोनो दोसर कपड़ा, तबे न सभ दिन यैहे पेन्हने रहय हइक'!'

दुनू माय-बेटा एहिना जिद्दा-जिद्दी करैत एकतारा चौक परहक कपड़ा दोकानमे पहुँचि गेल।

अन्ततः खजौलीबालीक गप रहलै। हँ, एकटा बदलाव जरूर भेलै, टुन्नू शर्ट-पेन्ट नहि ल' क' फेर एगो लोअर आ टीशर्ट खरीद लेलक। तीनू भाइ-बहिनके नौ सयके कपड़ा भेलै आ एक सय रुपया दर्जी निरियाक ड्रेसक सीआइ कहलकै। अन्हार होबय लागल रहै आ खजौलीबालीके हाट पर एखन कीनय-बेसाहयके बाँकीए रहै से चौक परस' कने झटकारिएक' हाट पर चलि आएल आ जल्दी-जल्दी कीन-बेसाहिक' घर लेल विदाह भ' गेल।

घर आबि खजौलीबाली खेबा-पीबा राति धरि सुक्खूके टुन्नूआक गौरव-गाथा सुनबैत रहल आ निरिया भाइक अभिनय करैत हवामे नम्हर-नम्हर चौका-छक्का मारिक' माय-बाप, भाइ-बहिन सभके हँसबैत रहल, पूरे परिवार खुश आ प्रसन्न छल, टुन्नू लेल एहिस' बढ़िक' आर कोन दोसर जीतक जश्न छल!

तीन

बर्खा ऋतु समाप्त भ' गेल छलै मुदा उत्तरी बिहार खासक' मिथिला क्षेत्र जकर अतिवृष्टि आ अनावृष्टि नियति बनि गेल छै, एमकी भारी बर्खा आ कमला-कोशीक ताण्डवस' पूर्णरूपेण तबाह भ' गेल छलै, किसानक उपजल धान गलि गेल छलै त' गरीब-गुरबाक घर-घररी दहि-भासि गेल छलै हालाँकि आने बर्ख जकाँ एहू बेर बिचखाना गाममे बाढ़िक पानि नहि घुसलै मुदा भारी बर्खा आ झटक-बिहाड़िस' केकरो फूसक घर सुरक्षित नहि रहलै, सुक्खूक गोसाँइबला घरक पछबरिया टाट सेहो भासिक' दाबास' नीचा भ' गेल छलै, ओकरे मरम्मति लेल ओ साठि रुपयेके हिसाबस' दिवाकर महतोक बँसबारिस' तीनगो बाँस काटिक' अनने छल, जकरा दुनू बाप-बेटा मिलिक' सलहेश बाबाक गहबरक आगू चीड़-फाड़ि रहल छल कि अकस्माते खजौलीबाली धड़फरायल आयल आ कहय लागल—'अखनि बन्न करू ई काम, सभ फट्टा-फट्टी आ खुट्टा-खुट्टीके एक जगह समेटिक' राखि दियौ, राँटीबालीके मोबाइलमे हमर भाइ अशोकक फोन आएल छलै ग', कहलकै ग' दू घंटामे हम भकुआस' तीन-चारिटा कुटुमके ल' क' अबै छियौक', असियाके देखबय लेल, तोँ व्यवस्थामे लागि जो ग'।'

सुक्खू कने खौंझाइत बाजल—'मरबँहि, इहो कोनो बात भेलै ग', कर-कुटुमके ल' क' आबहींके छलै त' दू-चारि दिन पहिने खबर करितय किने, भोजक बेरमे कुम्हर रोपय हैक'।'

खजौलीबाली सुक्खूके समझाबैत कहलक—'अच्छे की करबै, काँच-कुमारक घरमे एहिना होइ हइक'।'

सुक्खू खुट्टा आ फट्टाके समेटैत पुछलक—'घरमे कुछ पाइ-कौड़ी हैक' कि केकरोस' पैंचा-उधार लिअ पड़तै?'

खजौलीबाली सुक्खूके आश्वस्त कएलक—'हँ, धार परबला भैयाके जे घरहट कएने रहिए से नौ सय रुपया मजूरीबला पाइ घरमे रखले हैक'।'

—'त' ओइमेस' सात-आठ सय रुपया बौआके दियौ, केकरोस' साइकिल माँगिक' अरेड़ चलि जेतै, तर-तरकारी आ नाश्ता-पानि ल' एतै।'

ओ सुक्खूक गपके काटैत कहलक—'नहि, बौआके ओते चीज नहि फुरेतै, अहीं रामकृपालस' साइकिल ल' क' अरेड़ चलि जाउ, एक लीटर पैकिटबाला दूधो खरीद लेब, चीनी-चायपत्ती सभ हम एतहि जोगार क' लै छीक'। आ फेर अपने-अपने बतियाए लागल—'अखनि टेम हइक' जाइ छीक' हम ताबे अँगना-घर नीप-पोत लै छीक'।'

सुक्खू आश्वस्त हेबाक लेल पुछलक—'घरमे चाउर-दालि हैक' कि कीन' पड़तै?'

—'हँ, काँच-कुमारके घर हैक' इहे सोचिक' हम दस किलो खेरही संजोगिक' रखने छियैक', लेकिन चाउर त' कोटाबला हइक', कर-कुटुमके कोटाबला चाउरक भात केना खिएबै।' फेर किछु सोचिक' सुक्खूस' कहलक—'निरियाके गिरहत ओहिठाम भेज दै छियैक', गिरहतनीस' दू-तीन किलो घरैया पुरना चाउर ल' एतै, पाइए लेतै त' बादमे देखल जेतै।'

सुक्खू अरेड़ जाइस' पहिने टुन्नूआके समझा-बूझा देलक—'बौआ हौ, गहबर दुअराके नीकस' खड़ैर-बहारिक' चिकन-चुनमुन क' दिहक आ टोलामेस' आठ-दसटा कुर्सीओ आनिक' एत' राखि दिहक, कर-कुटुमके संगमे दू-चारिटा सर-समाजक लोक सेहो बैठि जेतै।'

टुन्नू बापके निश्चिंत कएलक—'तोँ निश्चिंत रह', सभ भ' जेतै।'

कुटुम्ब ससमय दू घंटाक उपरान्त दूगो मोटरसाइकिल गहबर प्राँगणमे लगा देलक, ओतय राखल कुर्सी पर दू-चारि गो बूढ़-पुरनियाँ आ अधवयस्क व्यक्ति सभ पहिनेस' बैसल छल ओ सभ कुटुम्बके देखिते देरी कुर्सी परस' खड़ा भ' गेल आ कुटुम्बके आग्रह-सत्कारमे लागि गेल, सुक्खूक भतीजा दीना गहबर प्राँगणके एक कातमे राखल भरल बाल्टी पानि आ लोटा ल' क' कुटुम्ब सभके हाथ-पैर धुआबय लागल त' वयोवृद्ध बौन बूढ़ा अपना गमछास' कुर्सीके झाड़ैत कुटुम्ब सभके आसन ग्रहण करबाबय लागल आ मातृभाषा प्रेमी छोट-छिन मैथिली कवि रामकृपाल पासवान कुटुम्ब सभस' हाल-चाल पूछैमे लागि गेल। पाँच-सात मिनट कुटुम्ब सभस' एम्हर-ओम्हरके गप-सप कयलाक पछाति रामकृपाल सुक्खूके किलोल करैत बाजल—'की हौ सुक्खू भाइ, एखन धरि चाय-पानिके व्यवस्था नहि भेल' ग' की, जल्दी चा-पानि भेजबाबह न।'

रामकृपालक किलोल पर सुक्खू आँगनस' निकलिक' गहबरक प्राँगणमे

आएल आ कुटुम्ब सभके नमस्कार-पाती क' क' एगो कुर्सी पर बैसि गेल, रामकृपाल सुक्खूस' आर किछु कहितय ताहिस' पहिने टुन्नू आ ओकर दुगो संगी एगो चँगेरामे डिब्बा बन्न नाश्ताक पैकिट, एक बाल्टि पानि, एगो मग आ किछु पीओ-फेको गिलास ल' गहबरक प्राँगणमे पहुँचि गेल। ओ सभ पहिने कुटुम्ब सभक हाथमे एक-एक गो नाश्ता पैकिट पकड़ाक', फेर ओतय बैसल सर-समाजक लोकके नाश्ता पकड़ाबय लागल। तैपर रामकृपाल सुक्खूके कहबो कएलक—'कर-कुटुम्ब धरि त' ठीक हइ सुक्खू भाइ मुदा ई कोन जरूरी छलह सभके भोज करयके, हम सभ कोइ एक-एक कप चाय पी लिती।'

सुक्खू मुस्कियाइत बाजल—'आ जे अपना मिथिलाके संस्कार हइक' से छोड़ि दिअइ भाइ।'

—'यैह अनावश्यक खर्चाबला संस्कार आ अन्नक बर्बादीबला रीति-रिवाजके कारण अपन मिथिला दिनोदिन कंगाल भेल जा रहल ह'। हौ, जेते अपना ओहिठाम लोक पत्ता पर रसगुल्ला आ गुलाब जामुन छोड़ि दै हय, ओतेक देशक कोनो कोनामे भोज-तिहारमे बनबो नहि करै हइक'।'

कुटुम्बमेस' एगो अधेर व्यक्ति अपन नाश्ताक पैकिट खोलैत रामकृपालक समर्थन कएलक—'अपने सही कहलियै श्रीमानजी, अपना मिथिलाके छोड़िक' देशमे कतौ दोसरा जगह भोजो-तिहारमे एक-दूगो रसगुल्लास' बेसी नहि परोसय हइक'।'

कर-कुटुम्ब आ बर-बुजुर्ग सभके नाश्ता बाँटि टुन्नू ओतय खड़ा भेल बाल-बुतरु सभस' कहलक—'तहूँ सभ अँगना चल, तोरा सभके अँगनेमे नाश्ता करा देबौ।'

नाश्ताक डिब्बामे दूगो सिंघारा, दूगो रसगुल्ला आ दू-दू छिम्मी केरा राखल छलै, बौन बूढ़ा केरा खाइत कुटुम्बस' पुछलक—'अपने सभमे लड़काबला के भेलखिन?'

धोती-कुर्ता पहिरने एगो अधेर उमेरके आदमी बाजल—'हमरे बचबा भेलै साहेब।'

—'कएगो धिया-पूता हैक' अपनेके?'

—'चारि गो, जेठ दुनू बचियाके बियाह क' देने छियैक', ई तेसर बचबा हइ आ एकर बाद एगो आउरो छोट बेटा रहि जायत।'

रामकृपाल सिंघारा खाइत लड़काक पितास' पुछलक—'लड़का कतेक पढ़ल अछि श्रीमान आ की करै हैक'?'

—'झूठ कएला कहू, लड़का बेसी पढ़ल-लिखल नहि हैक', लेकिन एतेक जरूर अबै हइक', अपन नाम-गाम लिख लै हैक' आ हिसाब-किताब जोड़ि लै हैक', अखनि तीन बरीखस' जयपुरमे मार्बल घिसाइके काम करै हैक', पनरह हजार रुपया महीना दै हइक', ओकरे कमाइ पर दू कोठली मकान ढलबेली ग' आ एगो पैखाना घर बनेली ग'।'

बौन बूढ़ा रसगुल्ला गलगलाबैत बाजल—'आ कुछ जगह-जमीन हैक' किने?'

लड़काक पिता एकदम सोझमतिया बुझना जाइत छल, साफ-साफ कहलक—'कुछ नहि, मात्र एक-सबा कट्ठा घराड़ी भरि हैक' लेकिन अन्न-पानिके कोनो दिक्कत नहि हैक' साहेब, गिरहतके एक बिघा बँटाइ करै छी आ बोनि-बुता कमा लै छीक', साल भरिके खर्चा निकलि जाइ हैक' आ रहलै जगह-जमीनक बात त' सतगुरुके कहै छियनि, धिया-पूताके समाँग देथिन, धीरे-धीरे उहो भ' जेतै।'

इन्टर तक पढ़ल रामकृपाल पासवान मैथिलीमे कविता त' लिखिते छल संगहि समाजसेवास' सेहो जुड़ल छल। परिवार राँटीबाली आँगनबाड़ीमे पढ़बैत छलै तेँ मजूरक टोल दुसधटोलीमे अपेक्षाकृत आर्थिको स्थिति किछु बढ़ियाँ छलै। ओ अपना व्यक्तित्वक अनुरूप लड़काक पितास' पुछलक—'लड़का किछु नशा-पानि नहि ने करै अछि?'

लड़काक पिता अपन कुर्ताक भीतरस' तुलसी माला निकालि देखबैत बाजल—'साहेब, हम खानदानी दुद्धा वैष्णव छीक' आ हमर चारू धियो-पूता सभ सेहो दुद्धा वैष्णव हैक', ई हमर छोट दमाद भेल (बगलमे बैसल युवकके देखबैत) इहो पुश्तैनिए वैष्णव छथिन आ अशोक कहलखिन ग' जे एम्हरो सभ वैष्णवे परिवार छथिन, ताहि लेल हम एतय एबो केली ग'।'

'हँ, अशोकजी सही कहलथि ग', हमरा ओहिठाम पासवानमे नब्बे फीसदी वैष्णवे परिवार मिलत।'

गप-सप करिते-करिते सभ कियो अपन नाश्ता समाप्त क' लेने छल आ आब टुन्नूआक एगो संगी पानि चला रहल छल। बौन बूढ़ा एक गिलास पानि लैत बाजल—'बड़ नीक संजोग मिलल' ह' क' सुक्खू, हमरा विचारस'

कुटमैती क' ल'।'

बूढ़ाके सुक्खू किछु उतारा दितय ताहिस' पहिने रामकृपाल खौंझाइत बाजल—'अहूँ कहिओ काल आब बूढ़मे भसिया जाइ छी कक्का, पहिने कुटुम लड़की देखथिन, पसिन करथिन, तबे ने कोनो बात आगू बढ़तै कि पहिनहि कुटमैता भ' जेतै?'

'मर तोरीके, सुक्खूक बचिया कोनो काटयबला हइक' जे तोँ एना बाजय छह!'

एहि बेर दीना बाजल—'अच्छा, अइ बातके अखनि छोड़ू बाबा, बुच्ची अबय हइक' त' इहो सभ अपना नजरिस' देखि लेथिन, हमहुँ सभ एकबेर लड़काके जाक' देखि लेबै, तबे कोनो बात होतै।'

रामकृपाल दीनाके समर्थन कएलक—'यैह तरीको होइ हइ।'

एतेक देरमे टुन्नू चाय सेहो ल' क' आबि गेल छल, रामकृपाल चाहक चुस्की लैत कुटुम्बस' पुछलक—'एमकीके बाढ़ि त' अहाँ सभके आउर हालति खराब क' देने होत?'

कुटुम्बमेस' अधेर व्यक्ति बाजल—'मत पुछू, कहबी नहि हइक' जे गुड़क मारि धोकरे जनै हइ, सेहे बुझू जे बाढ़िक हाल कमला-कोशी कछेरमे बसल लोके जनै हइक'। पाँच-सात सालमे हमरा सभके एकबेर एहन विकट परिस्थितिके सामना करहि पड़ै हइक'। एमकी त' बुझू जे अछैत अन्न पाँच-सात दिन उपासे रह' पड़ल रहय, बाढ़िके पानि घरमे आबि गेल रहय, जल्दी निकलबे नहि करैत रहय, माल-मवेशीक खोराकीके सेहो भारी दिक्कत भ' गेल रहय।'

—'तब त' धान अहाँ सभके एकदमे नहि भेल होत?'

—'से नहि कहियौ, अहाँ सभस' लाख गुणा बढ़ियाँ धान हमरा सभके हैक'। अबै कालमे देखली ग' अहाँ सभके आधास' बेसी बाध परता-पराँत पड़ल हैक' आ हमरा सभके एतबो पर पूरा बाध धानस' लहलहाइत हइक'।'

रामकृपाल सशंकित भ' पुछलक—'से केना यौ?'

—'हम सभ बाढ़िक क्षेत्रमे रहयबला लोक बाढ़िके नस-नस चिन्है छियैक', अहाँ सभके देखै छीक' एक बेर कहिओ काल बाढ़ि आबि जाइ हैक' आ धान गलि जाइ है त' दोबारा धान रोपबे नहि करै छीक' आ हमरा

सभके एकबेर के कहय कोनो-कोनो साल त' तीन-तीन बेर कतौस' नहि कतौस' धानक बिरार आ ने त' खाँउरे ऊपर क' क' रोपिए लै छियैक'। हम सभ जल्दी खेतके परता नहि छोड़ै छियैक', अबेर-सबेर बाढ़िक पाँकीबला माटि पर धान उपजिए जाय हइक'।'

'सही कहलियै अपने, महान कृषि वैज्ञानिक नार्मन बोरेलॉग ओहिना नहि कहने रहथिन कि उत्तरी बिहारक खेती सूतल बाघक समान हइ जे एतेक बाढ़ि-विपदाक बादो अपना सभके अन्न-पानि नहि घटै है। सभ आदमी नीकस' खा-पी लै छी मुदा तइयो ई गप त' मानहि पड़त अपना सभके जे चारि-पाँच बर्खमे उन्नति करै छी ऊ चारि-पाँच बर्खमे एगो एहन बाढ़िओ अबै है जे नीप-पोतिक' बरोबरि क' दै छैक'।'

अधेर व्यक्ति रामकृपालक समर्थन कएलक—'हँ, इहो बात अहाँके सच्च हैक'।'

टुन्नूआक एगो संगी प्लेटमे आठ-दसटा लगाओल पान आ जर्दा-सुपारी ल' क' चलि आएल छल। पान खायबला सभ प्लेटमेस' पान उठाक' गलोठय लागल। लड़काक बहनोइ किनसाइत पान नहि खाइत छल। ओ पानक लेल मना करैत टुन्नूआक संगीस' कहलक—'आब लड़कीओ के बजबियौ न, अबेर भ' रहल हइक'।'

बौन बूढ़ा बाजल—'अँय यौ, कतेक देर एला भेल ग' जे अगुता गेली, अखनि त' अधो घंटा नहि भेल होत!'

लड़काक बहनोइ अपना जेबीस' मोबाइल निकालि टेम देखैत बाजल—'हूँ...! बाबा अधो घंटा नहि एला भेलै ग', एक घंटास' ऊपरे भ' गेलै। हमसभ एतय दू बाजिक' पाँच मिनटमे पहुँचल छलिअह आ अखनि तीन बाजिक' बारह मिनट होइ हइक'।'

टेम ज्ञात भेलै त' सुक्खूक सार अशोक सुक्खूस' कहलक—'अँगना जा न पहुना, देखहक न बुच्ची तैयार भेलै की नहि!'

सारक कहला पर जखन सुक्खू अँगना गेल आ असियाके देखलक त' कने देर तक टकटकी लगौने निहारिते रहि गेल। टोलाक युवती सभ असियाके पहिरा-ओढ़क' आ श्रृंगार-पेटार क' क' खूब नीकस' सजा देने छलै। सुक्खू मोने-मोन सोचय लागल, खजौलीबाली तेँ बात-बातमे कहैत रहै छलै हमर बेटी कि केकरोस' कम सुन्नरि हैक'। पहिन-ओढ़ि लेतय त'

अनमन भगवती जकाँ लगतै। बापक हीया भावुक होबय लगलै। ओ अपनाके सम्हारैत युवती सभस' कहलक—'कुटुम सभ अगुताइ हइक', आब जल्दीस' ल' चलय चली दाइके।' एते कहि सुक्खू गहबरक प्राँगणमे आपस चलि आएल। तकर कनिए देरक बाद भरि टोलाक स्त्रीगण आ नवयुवती सभ असियाके ल' क' सेहो गहबर प्राँगणमे उपस्थित भ' गेल। रामकृपाल एगो कुर्सी खाली करबाक' ओहिपर असियाके बैसा देलक आ कुटुम्ब सभस' कहलक—'यैह छै लड़की, जे कुछ पूछ' के है से पूछि लिअ।'

लड़काक पिता असियाके एकटक निहारिक' पूछ' लागल—'की नाम हैक' बुच्ची?'

—'आशा कुमारी।'

—'बाबूजी आ दादाजीके की नाम भेल?'

—'बाबूजीके नाम श्री सुक्खू पासवान आ दादाजीके नाम स्व. गुलाम पासवान।'

—'कए भाइ-बहिन छियैक'?'

—'दू बहिन, एगो भाइ।'

—बहिन आ भाइ पढ़ै-लिखै हैक'?'

—'हँ, बहिन नीरा कुमारी सतमामे पढ़ै हइक' आ भाइ टुन्नू पासवान दसमामे, अइ साल मैट्रिकके परीक्षा देतै।'

—'अहूँ पढ़ल-लिखल छियैक'?'

असिया एहिबेर किछु नहि बाजल, चुप रहि गेल, रामकृपालके बूझल छलै जे असिया किछु पढ़ल-लिखल छै, लेकिन कम पढ़ल छै ताहि लेल संकोचवश जवाब नहि द' रहल छै। ओ असियास' कहलक—'ऊहूँ... चुप ने रह बौआ, पढ़ल-लिखल छही कि नहि से कुटुमके खोलिक' कही।'

असिया लजाइते बाजल—'पाँच तक पढ़ने छियै।'

एहिबेर लड़काक बहनोइ बाजल—'अपन नाम-ठेकान लिखल अबै हैक'?'

असिया छोट-छिन जवाब देलक 'हँ' तँ लड़काक बहनोइ अपना जेबीस' एगो छोटका डायरी आ पेन निकालिक' असियाक आगू बढ़बैत कहलक—'अइ पर अपन नाम-पता लिखियौ त'।'

रामकृपाल असियाके लिखै काल ग'रस' निहारि रहल छल। कम

पढ़ल-लिखल ज्ञाने बहुत सुन्दर लिखावट छलै असियाके, कने बेसी देर त' जरूर लगलै मुदा सही-सही अपन पता-ठेकान लिखिक' असिया रामकृपालक हाथमे डायरी दैत बाजल—'लिखल भ' गेलै कक्का।' रामकृपाल गौरवान्वित होइत ओ डायरी लड़काक बहनोइक हाथमे दैत बाजल—'लिअ देखि लियौ लिखाबट, देखिक' कोइ कहतै कि मात्र पाँच क्लास पढ़ल विद्यार्थी लिखने हइ!'

—'नहि, बहुत सुन्दर लिखलखिन ग'।'

जनीजातिक भीड़स' एगो बूढ़ महिला बाजल—'आउर कुछ पूछ' के हैक' त' पूछि लियौ, बुचिया रूप-गुणस' भरल हइक', सुक्खू अपने दुनू परानी त' भरि दिन बाध-बोनमे कमाइत-खटाइत रहै हइक', पूरा आश्रमक भार यैह उठौने रहै हइक'।'

लड़काक पिता बूढ़के उतारा दैत बाजल—'नहि, बुच्ची कतौस' काटयबाली नहि छथिन।'

अशोक बूढ़ महिलास' कहलक—'माय, लड़को अनमन एनाहिते अपने बुच्ची जकाँ सुन्दर हइक', दुनूके जोड़ी राम-सीता जकाँ लगतै।'

बूढ़ी ईश्वरक प्रार्थना करैत बाजल—'भगवान करै दुनूके जोड़ी लागि जाइ।'

बौन बूढ़ा सभ तरहे आश्वस्त भेलाक बाद लड़काक पितास' पुछलक—'त' आब बुचिया अँगना जाउक?'

—'हँ-हँ, आब जाथिन।'

असिया कुटुम सभके पैर छूबय लागल त' लड़काक पिता अपन कुर्ताक जेबीस' एगो पनसहिया निकालिक' असियाक हाथमे धरा देलक, से देखि बौन बूढ़ा खिन्न भ' गेल आ बाजल—'ई उचितगर गप नहि भेल, पहिने महादेवक पूजा होइ हइक' तबे गौड़ी पूजल जाइ हइक'।'

असिया कुटुम्ब सभके गोड़ लागिक' उपस्थित बड़-बुजुर्ग सभके पैर छूबय लागल। लड़काक पिता बौन बूढ़ास' कहय लागल—'साहेब, अधलाह नहि मानब, हम कबीर पंथके मानयबला लोक छीक'। केना होइ हइक' महादेव आ गौड़ीके पूजा से हमरा ओतेक नीकस' नहि बूझल हैक' लेकिन एतेक बात जरूर बूझै छियैक' जे आइ-काल्हि बेटा-बेटीमे कोनो अन्तर नहि रहलै ग'।'

रामकृपालक मुँहस' अकस्माते निकलि गेलै—'वाह, बहुत उत्तम

विचार।'

जनीजाति सभ असियाके ल' क' अँगना चलि गेल छल मुदा बौन बूढ़ा आगिबबूला भ' क' रामकृपाल पर बरिस रहल छल—'कथिके उत्तम विचार हौउ, हमहुँ कबीर पंथीए छीक'। हमरो गड़ामे तुलसीके माला हैक' त' की अपन सभके जे मिथिलाके रीति-रिवाज हइक' तकरा छोड़ि दियै!'

—'हँ, बहुते घिसाएल-पिटाएल रीति-रिवाजके छोड़हि पड़त आ समय-परिस्थिति हिसाबे छोड़बो केली ग'। पहिने बाभन सभमे विधवा बियाह मनाही छलै आ देखियौ अपने पड़ोसक गाममे चुन्नू मिश्र अपना विधवा बेटीके बियाह कएलकै ग' कि नहि! पहिने अधबेसू बाभन सभके बियाह कुमारि नाबालिग कन्यास' होइत छलै, मुदा आब देखै छियै जल्दी बाभनो सभमे बेमेल बियाह होइत आ दोसरा जातिमे छोड़ू, अपन दुसाधेके नीरहल सीधा मलाह, कोइरी, गुआर आकि आन कोनो पिछड़ो जाति खाइ छलै आ अहीं पोताके बियाहमे अहाँके गिरहत रंजनजीके हम अहींके असोरा पर बैठाक' खियाबयबला छी, आ जदि हम झूठ कहै छी त' कहू अहाँ तोँ झूठ बजै छह!'

बूढ़ा निरूत्तर भ' गेल छल मुदा लड़काक पिता बूढ़ाक मान राखय लेल कहलक—'साहेब, जे अपने बूझै छियैक' से सोचिक' हम बुच्चीके पाइ नहि देलियै ग', हम ओनाहिते बुच्चीके पाँच सय रुपया मिठाइ खाइ लेल देलियै ग', अइ बातके ओतेक गम्भीरतास' नहि लेल जाउ।'

बौन बूढ़ा छोट-छिन जवाब देलक—'अच्छा होउ, भेलै।'

दीना गपक दिशा बदलैत बाजल—'एहि बातके एतय खत्म क' दिऔ, आ ई कहू जे लड़की पसिन भेल?'

कुटुम्ब सभ एक सुरमे बाजल—'हँ, हमरा सभके पसिन हैक'।'

—'तब आगू की बात-विचार होतय से कहय जाउ।'

कुटुममेस' अधवयस्क बाजल—'आब आगू की होतय, अहूँ दू-चारि दिनके बाद हमरा एगो निश्चित समय दिअ आ पाँच-सातगो सर-समाजके ल' क' आउ, लड़का देखि जाउ।'

नवयुवक दीना व्यवहारिकतामे ओतेक परिपक्व नहि छल, कुटुम्बस' सीधा-सीधी प्रश्न कएलक—'माँग-चाँग केना की हइक'?'

अशोक दीनाके समझाबैत कहलक—'बौआ हौ, एना अगुताक'

नहि होइ हइक' कुटमैती, तोँ नहि बूझै छह त' चुपे रह', हम जे हिनका सभके एतय ल' क' आएल छियै से कुछ सोचिए-समझिक' ने।'

दीनाक प्रश्नक उत्तर दैत लड़काक पिता कहलक—'यौ बौआ, कुटुम जते सकथिन, तते अपन बेटी-दमादके देथिन। हमर कुछ नहि माँग-चाँग हैक।' आ एतेक गप कहि कुर्सी परस' उठैत बाजल—'त' आब हमरा सभके आदेश देल जाउ, दूर जाइके हइक'।'

बड़ी देरस' कुर्सी पर गुमसुम बैसल सुक्खू ठड़ा भ' क' बाजल—'नहि-नहि, भोजन बनि गेल हइक', खा-पी लेथिन तब जाइ जेथिन।'

—'भेलै, जर-जलखै केलिए, चाय-पान खेलिए, आब जाय देथिन, नहि त' अबेर भ' जेतै।' लड़काक पिता सुक्खूस' कहलक।

सुक्खू लड़काक पिताक बाँहि पकड़िक' आदरपूर्वक कुर्सी पर बैसाबैत बाजल—'नहि खेथिन त' भोजन बर्बाद भ' जेतै, बस पाँच मिनट बैठथिन, हम भोजन लगबाबैत छियनि।' एतेक कहि सुक्खू आँगन दिस विदाह भ' गेल आ रामकृपाल लड़काक पितास' बतियाए लागल—'एली ग' अपना मोनस' लेकिन जेबै त' घरबैयेके मोनसे ने!'

लड़काक पिता विवश भ' बाजल—'जे करू अपने सभ।'

रामकृपाल कटाक्ष कएलक—'जे करी हमसभ से नहि, हमरा बूझाय हैक' अपने सेहो पुरनके खियालक लोक छी, पुरनका लोक सभके विचार रहै छलै जे जाधरि कुटमैता पक्का नहि भेल हैक' ताधरि कुटुमके घर भोजन नहि करबाक चाही।'

रामकृपालक कटाक्ष पर लड़काक पिता दृढ़तास' बाजल—'जदि ई बात हइ त' आब हमसभ बिना खयने एत' से जेबे नहि करब।'

किछुए देरक बाद सुक्खू आँगनस' एक लोटा पानि लेने आयल आ कुटुम सभक लगीच आबि कहलक—'चलै जाथिन, पँघति तैयार भ' गेल छनि।'

रामकृपाल आश्चर्यमे पड़ैत बाजल—'एतेक जल्दी भोजनोके व्यवस्था भ' गेलै हौ सुक्खू भाइ!'

सुक्खू मुस्कियाइत रामकृपालस' कहलक—'पहिनहिस' व्यवस्थामे लागल छलै, एकबेर हम कहनहुँ रहियै, कुटुम सभ पहिले बेर अबै छथिन,

खेथिन कि नहि खेथिन, त' कहलकै कि कुटुम सभ कि कोनो आन लोक छथिन। सभ हमरा भाइके नङटिएमे लगै छथिन, सम्बन्ध होइक कि नहि होइक, बिनु खयने-पीएने जाइ देबै त' हमरा भाइके ऊ सभ की कहथिन!'

सुक्खू रामकृपालस' आठ-नौ बर्खक जेठ छल आ दुनूमे भैयारीक रिश्ता सेहो छलै तेँ रामकृपाल व्यंग्य करैत बाजल—'कहयबला बिल्कुल सही कहने हइ सुक्खू भाइ, सारी खुदाइ एक तरफ, जोडू के भाइ एक तरफ।'

रामकृपाल निशाना सधने छल सुक्खू पर मुदा घायल भेल अशोक, मुँह-हाथ धोइत मुस्कियाइत बाजल—'सार, सुनने नहि छियैक' जे लड़का भरोसे लड़िकोरिओ पला जाइ हइक'। भूख लागल हैक' त' चलू हमरे सभके बहन्ने अहूँ खा लेब।'

—'हँ-हँ चलू न, हमहुँ चलिते छी।' कुटुम सभके अरियातिक' सभ आदमी अँगना ल' गेल आ असोरा पर बिछाओल जाजिम पर बैसा देलक। सुक्खू दुनू सार-बहनोइ रामकृपालके खूब आग्रह कएलक मुदा ओ भोजन करबाक लेल तैयार नहि भेल। हँ, एतेक काम ओ जरूर कएलक, बौन बूढ़ाके गार्जियन रूपमे कुटुम्ब सभ संगे बैसा देलक।'

अपना हैसियतके हिसाबस' खजौलीबाली भोजनक खूब नीक व्यवस्था कएने छल, दालि-भात, दूगो तरकारी, रंग-विरंगक तरुआ, चिप्स, पापड़, अचार, सुधाक डिब्बाबला दही आ चीनी आदि।

कुटुम्ब सभ जखन खा-पीक' अँगनास' बहराय लागल त' निरिया अशोकस' कहलक—'मामा, माय कहै हइक' रूक' लेल।'

संगमे लड़काक पिता सेहो छल। अशोक हुनकास' कहलक—'गोसाँइ, पाँच मिनट बैसका पर बैसू तब तक हम दीदीस' भेंट क' लै छियैक'।'

—'अच्छा, ठीक हइक'।' एते कहि ओ आँगनस' बाहर निकलि गेल।

खजौलीबाली भाइक नजदीक आएल त' भाइ पैर छूबिक' गोड़ लगलक, ओ आशीर्वाद द' क' नहिराक हाल-समाचार लिअ लागल—'कनियाँ आ बाल-बच्चा सभ ठीक ह' क'।'

—'हँ, सभ कोइ ठीके हौउक'।'

—'आ माय?'

—'माइओ ठीके हौउ।'

—'हम असगरूआ भ' जाइ छीक', ओना कहियास' नियारै छियैक' जे बूढ़ माय हैक', एक दिन फुर्सति निकालिक' भेंट-घाट क' एबै लेकिन जाएले नहि पार लगै हइक'।'

—'घरमे त' असिया रहबे करै हौउक', एक-दू दिन ऊ नहि घर सम्हारि लेतौ?'

—'हँ हौ बौआ, से त' तोँ ठीक कहै छहक, एखनिओ घरक काम-धन्धा कोनो हम करै छियैक', सभ त' ऊहे करै हइक', मुदा जुग-जमाना खराब हइक' से सियान बेटीके छोड़िक' हमरे नहि जायके मोन करै हैक', अच्छा, अखनि छोड़' अइ बातके, ई कह' जे लड़काबलाके कथी सभ माँग-चाँग हइक'?'

—'गै, लड़काबलाके त' हम ओतउ खरिहारिक' कहलिए ग' जे बेसी तिलक-दहेज मँगबै त' हमर पहुना नहि सकत, तैपर ऊ हमरा ओतय कहनहुँ छल, परिवार वैष्णव हेबे हइ आ जे कहीं लड़कीओ हमरा पसिन भ' गेल त' कुछ नहि लेबै, आदर्श बियाह क' लेबै, लेकिन सुनयमे अबै हैक' जे लड़का कहै हय हमरा एगो मोटरसाइकिल चाही।'

—'अँय हौ, तब हम सकबै, तोँ त' बुझिते छहक हमरा घरक हालति, घरमे एको छिद्दी पाइ नहि हइक'। जे खर्चा होतइ से सभ कर्जा-बियान ल' क' आ पहुना असगर कमौआ ह' क', कत' से सधैतै?'

कुटुम्ब सभके गहबर प्राँगणमे अरियातिक' सुक्खू सेहो अँगना चलि आएल छल आ खजौलीबाली दुनू भाइ-बहिनक गप-सप सुनि रहल छल। अशोक कहि रहल छलै—'अच्छा, तोँ मोटरसाइकिलके चिन्ता छोड़ि दिही। ऊ हम अपना साढूके कहिक' कोनो नहि कोनो तरहे मनबा लेबै।'

—'तैयो त' भाड़ा-बर्तन, कपड़ा-लत्ता, खाट-पलंग आ चारिओ अना सोन त' दिही पड़तै, नहि त' लोक की कहत, केहन भिखमंगा घरमे बियाह भेलै ग' जे किछु नहि देलकै।'

—'हमर कनियाँ कहै हय, असिया बियाहमे हमहीं कन्यादान करबै आ पाँचो सेट भाड़ा-बर्तन देबै।'

—'तैयो मारि कर्जा भ' जेतै भाइ हौ।'

खजौलीबालीके एना उदास होइत देखिक' सुक्खूके नहि रहल गेलै, बाजल—'यै जग होइ हइक' जगदीशके, अहाँ पहिनेस' चिन्ता नहि करू, हम

छी किने, कर्जा होइय त' सधा लेबै।'

—'कतयस' सधा लेबै?'

अशोक बहिनके हिम्मति बढ़ाबय लेल समझाबैत कहलक—'तोँ नान्हिओ टा बातके तीलक तार बना दै छही दीदी, पहिने भगवानस' मनो जे कोनो तरहे शादी-बियाह नीकस' निपटि जाउक, कर्जाके चिन्ता नहि कर'। एमकी कपासक सीजनमे गाड़ी भरय लेल हम पहुनोके अपने संगे ल' क' गुजरात चलि जेबै। नहिओ नहि त' चारि-पाँच महीनामे पचास-साठि हजार रुपया खोराकी काटिक' बचाइए लेतौ आ जे फेर थोड़-बहुत कर्जा रहि जेतौ से अगिला साल सधा लेतौ, अइमे एतेक चिन्ताके कोन बात हइक'!'

गुजरातक नाम सुनिते सुक्खू दुनू परानीके एगो हृदयविदारक घटना मोन पड़ि गेलै आ ओ दुनू डर आ दाम्पत्यक प्रेमक मिश्रित भाव लेने एक-दोसराक आँखिमे देखय लागल। घटना सात-आठ साल पहिनेके छलै, घटना घटित होबयस' पहिने सुक्खू सेहो गामक मजूरक संग धान-गहूम रोपय-काटय लेल सीजने-सीजने पनिजाब चलि जाइत छल, कमाइओ नीक भ' जाइत छलै। ओहू साल ओ गामक आठ-दस टा मजूरक संग जीरी लगाबय (धान रोपय) लेल पनिजाब गेल रहय। सरदार एकरा सभके मोटर (बोडिंगबला घर) पर रहयके व्यवस्था लगा देने रहै आ ई सभ अपनामेस बुधन सहनीके चुनिक' लङरी (भनसिया)मे राखि लेने रहय, बुधना एकरा सभके नित्य दिन आठ बजेस' पहिने रोटी-तरकारी बना-खुआक' जीरी लगाबय लेल भेजि दैत रहै आ फेर ओ दुपहरक भोजनक व्यवस्थामे लागि जाइत रहय। बारह-एक बजे तक जखन गरमा-गरम भात-दालि-तरकारी तैयार भ' जाइत रहै त' सभ आदमी फेर मोटर पर आबिक' खा-पी लैत रहय आ बिनु पल भरि विश्रामके जीरी लगाबय लेल चलि जाइत रहय आ तकर बाद एकहिबेर मुनहारि साँझक' मोटर पर आबि खा-पीक' आराम करैत रहय। बड़ भीड़गर काम रहै, निहुरल-निहुरल डाँड़-पीठ अकड़ि जाइत रहै। फेर दोसर दिन केकरो काम पर जायके हिम्मति नहि होइत रहय मुदा गरीब मजूरके दोसर विकल्पे कोन रहै! हजारो कोस दूर सभ अपन बाल-बच्चा परिवारके छोड़िक' परदेशमे किछु कमाए आएल छल, बैसिक' कोना रहि सकै छल। नहि चाहितो विवश भ' क' काम पर जाही पड़ैत रहै।

एक दिनक गप छै, बुधन आने दिन जकाँ ओहू दिन सभके

रोटी-तरकारी बना-खुआक' जीरी लगाबय लेल भेजि देलक आ फेर किछु देरक विश्रामक बाद खाइक बनाबय लेल मोटर चालू करय गेल। मोटर चालू करबाक लेल डायरेक्ट स्वीच नहि रहै, सरदारजी बिजलीक मेन तारमे कुण्डी फँसाक' एगो अतिरिक्त तार मोटर घरमे लाबि देने रहै। ओहि तारमे मोटरबला तार फँसएलास' मोटर चालू भ' जाइत रहै। आने दिन जकाँ बुधना ओहू दिन खालिए पैरे तार फँसबैत रहय कि कोना-ने-कोना बिजलीक नंगा तारमे ओकर हाथ छुआ गेलै आ किछुए सेकेण्डक बाद ओ कारी सियाह भ' क' जमीन पर खसि पड़ल। कने देर ओ दुख-दर्दस' छटपटाइत रहल, कने देर ओ अपना लोकस' सम्बल आ सहारा पाबय लेल कछमछाइत रहल, कने देर ओ घर-परिवार आ मातृभूमिक विरह-वेदनामे पछताइत रहल मुदा अन्तिम समयमे ओ सभ दुख-सन्ताप, विरह-वेदना आ मोह-मायाके बिसरि मृत्युक कोरामे जाक' बैसि गेल।

दुपहरमे जखन सभकियो जीरी लगाक' आयल त' देखैत अछि चुल्ही-काठी बूझाएल, खाली बर्तन-बासन सभ ओहिना जहिजतर ढनमनाएल। बुधनाके कोनो अता-पता नहि पाबि सभ आदमीके मोन पित्ते अघोर भ' गेलै। बौधा गरियाबैत बाजल—'आइ बूझाइ हौउक सार भूखले राखि देतौ।' सुक्खू एम्हर-ओम्हर देखैत बुधनाके किलोल करय लागल—'बुधना, रै बुधना, बुधना छे रै...' आ बहत्तरा डाँड़ सोझ करबाक खियालस' मोटर घरमे पैसैत पनिजाबीमे गारि दिअ लागल—'पैन दी फूदी इथे अबय ह' क' त' सभ आदमी पहिने ओकरा बान्हिक' पीटअ, तबे कोनो गल्ल बात करिह'।'

बहत्तरा आधा पनिजाबी आ आधा मैथिली मिलाक' बुधनाके गरियाइए रहल छल कि एकाएक ओकर नजरि बुधनाक लहास पर गेलै। ओ बफारि काटैत डिरियाएल—'बाप रे बाप, जुलूम भ' गेलै हौ सुक्खू भैया, हौ जल्दी दौड़ै जाइ जा हौ, बुधना एतय मरल पड़ल ह' क' हौउ भाइ सभ।'

सभ आदमी मोटर घरमे दौड़ल आ बुधनाक कारी सियाह लहास देखिक' कने देर स्तब्ध भ' गेल। ओकरा सभके बूझबामे कनिको भाङठ नहि भेलै कि ई बिजलीक करेन्टस' मरलै ग'। बौधा हाकरोस पाड़ैत सरदार लग पहुँचल आ एहि दुखद खबरिके जनतब देलक। सरदार सेहो दौड़ल मोटर घर आएल आ बुधनाक लहास देखि पिण्डक (गामक) गणमान्य लोक सभके फोन मिलाबय लागल। देखिते-देखिते कनिके देरमे लोकक भीड़

लागि गेलै। फेर सभ आदमी विचार-विमर्श क' क' थानाके बजौलक, लहासक पंचनामा भेलै आ तकर बाद खेबा-पीबा राति धरि एगो एम्बुलेंसके बुक करबाक' सैनी, बहत्तरा आ सुक्खूक संग लहासके बिहार लेल विदाह कराओल गेल।

दोसर दिन मुनहारि साँझक' लहास बिचखाना पहुँचल। बौधा पनिजाबस' फोन क' क' बुधना गिरहतके एहि मनहुस खबरिके जनतब द' देने रहय। पूरा बिचखाना गामक लोक शोक संतप्त भ' लहासक प्रतीक्षामे बुधना घर पर पहिनहिस' भीड़ लगौने छल। बुधनाक बाल-बच्चा आ परिवारक हृदयविदारक विलाप सुनि लोकके छाती फाटि रहल छलै। स्थितिके देखैत टोलाक लोक जल्दीए बुधनाक परिवार आ सर-समाजके ओकर अन्तिम दर्शन करबाक पहिनहिस' तैयार राखल चचरी पर लहासके राखि श्मशान घाट दिस विदाह भ' गेल।

सुक्खू जखन बुधनाक अन्तिम संस्कारस' घर आएल त' खजौलीबाली ओकरा भरि पाँज पजियाक' हबोढेकार कानय लागल। सुक्खूके सेहो कुहेस फाटि गेलै। माय-बापके एना भ' कानैत देखि असिया तीनू भाइ-बहिन सेहो कानय लागल। सुक्खू कोनो तरहे अपनाके सम्हारैत खजौलीबालीस' कहलक—'हम ठीक छीक', चुप भ' जाउ, धीया-पूता हेहरू होइ हैक'।' खजौलीबाली सेहो अपन आँचरक कोरस' आँखिक नोर पोछैत बाजल—'पहिने अहाँ सप्पत खाउ जे नूने-रोटी सभ परानी खैब लेकिन बाल-बच्चा आ हमरा छोड़िक' अहाँ कहिओ बहरा कमाय लेल नहि जायब।' सुक्खू अपन नोरस' डबडबाएल आँखिके लिलुआस' पोछैत कहलक—'अहाँ सभके छोड़िक' आब हम अपने कतौ नहि जायब।'

घटनाक पटाक्षेप भेलै दीनाक किलोलस', दीना 'मामा-मामा' सोर पाड़ैत अँगना आएल आ अशोकस' कहलक—'मामा, कुटुम सभ अगुताइ हैक', कहय हैक' जल्दी आबय लेल जे आब अबेर भेल जाइ हइक'।'

अशोक धड़फराएल बहिन-बहनोइके गोड़ लागैत बाजल—'दीदी, आब जाइ छियौक'।' खजौलीबाली अशोकस' किछु कहय चाहय छल, ताहि लेल रोकबो कएलक—'बौआ कने सुन' न एगो बात कहै छिय।' मुदा अशोक बहिनक गपके ओतेक गम्भीरतास' नहि लैत आगू बढ़ैत कहलक—'नहि दीदी, आब नहि रूकबौ, रस्ता बड़ खराब हइक', अन्हार भ' जेतै त' बड़

दिक्कत होत।' पाछू लागल सुक्खूओ गहबर तक आएल। एतेक देरमे टुन्नू एकबेर आर चौक परस' पान आनिक' कुटुम्ब सभके बाँटि रहल छल, अशोक ओहिमेस' एक खिल्ली पान उठबैत कुटुम्ब सभस' कहलक—'त' आब चलक चाही।'

लड़काक पिता अशोकस' पुछलक—'हिनका सभस' टेम लेलियै जे कहिआ एथिन?'

अशोक माथ छूबैत बाजल—'जा से त' बिसरिए गेल छलिए ग'।'

अशोक, सुक्खूस' किछु कहितय ओहिस' पहिने सुक्खू रामकृपालस' पुछलक—'भाइ यौ रविक' फुर्सति हैक'?'

—'हँ हौ, रवि दिन फ्रीए छीक'।'

रामकृपालस' आश्वस्त भेलाक बाद सुक्खू कुटुम्ब सभस' कहलक—'आइ सोम भ' गेल, अजुके सातम हम सभ रविक' पाँच गोटेस' बारह-एक बजे तक अबै छीक'।'

फेर सभ आदमीके नमस्कार-पाती भेलै आ कुटुम्ब सभ विदाह भ' गेल।

चारि

असिया बियाहके लमसम बरख लागि गेल छल, एहि एक बरखक बीचमे सुक्खूक जिनगीमे बहुत किछु बदलाव भेल छलै, खजौलीबालीक लाख मना केलाक बादो ओ एमकीक सीजनमे अपना सारक संग कमाए लेल गुजरात चलि गेल रहै, जेनाइओ मजबूरी रहै। बियाहमे लमसम एक-सवा लाख रुपया कर्जा भ' गेल रहै। कतयस' सधाबैत बेचारा, ओनाहितो, धर्म, नैतिकता आ मर्यादा ओकरे व्यक्तित्व पर छजैत छै जे आर्थिक दृष्टिकोणस' भरल-पूरल लोक रहै छै, कर्जास' दबाएल गरीब मजूर लेल ई पैघ-पैघ अलंकारयुक्त शब्द मात्र ढकोसला आ देखावा बनिक' रहि जाइ छै आ सुक्खूके कोनो तरहक ढकोसला एकदम नहि पसिन छलै, जाधरि निमहलै ताधरि निमाहलक अपना बाहर नहि जायबला प्रतिज्ञाके, आब नहि निमहेबला रहलै त' तोड़ि देलक। एहिमे ओकरा रत्तिओ भरि उचित-अनुचितक खियाल तक नहि एलै आ नहि मिसिओ भरि पछतावा भेलै।

गुजरातस' कमाक' ओ घर-परिवार चलैबितो आधा-छिधा कर्जा समाप्त क' देने छल। गामोमे जहियास' आएल छल, एको दिन बैसिक' नहि रहै छल। जाहि दिन गिरहतके कोनो काम रहै छलै त' गिरहतमे बोनिहरि क' लै छल नहि त' कतहु-ने-कतहु मजूरी करय लेल निश्चिते चलि जाइत छल। खजौलीओबालीके वैह स्थिति छलै, जँ कोनो गिरहत किसान किछु काटय-खोटय लेल कहि दै छलै त' बोनि करय चलि जाय छल, नहि त' बकरी-छकरी ल' क' भरि दिन बाध-बोनमे बौआइत रहै छल आ ओम्हरेस' जरना-काठी सेहो बिछ-बाछिक' मुनहारि साँझ घर अबै छल।

एम्हर टुन्नूओ सेकण्ड डिविजनस' मैट्रिक परीक्षा पास क' क' भारती मण्डन कॉलेज, रहिकामे एडमिशन करबा लेने छल, मुदा पढ़य-लिखयस' बेसी ओ एखनो क्रिकेट खेलयमे ध्यान लगौने रहै छल आ क्रिकेटस' किछु उपार्जन केनाय सेहो सीख गेल छल। आब ओ अपना टीमक अलावे दोसरो टीममे बोरो बनिक' बड़ी दूर-दूर तक मैच खेलय चलि जाइत छल, जाहिस' किछु पाइ आ प्रसिद्धि, दुनू मिल जाइ छलै, लेकिन ओतेक नहि जतेक कि ओकरा

घर-परिवारक आवश्यकता छलै, मुदा एतेक जरूर भ' जाइ छलै, जाहिस' ओ अपना स्वयंके मेन्टिनेन्स क' लैत छल अर्थात् ओ एखनो धरि घर-परिवारक उत्तरदायित्वस' अनभिज्ञ छल लेकिन एकरा ठीक विपरीत असिया जहियास' सासूर बसय लागल छल, निरियाक पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ि गेल छलै, ओ आश्रमक भार सम्हारितो अपन पढ़ाइ-लिखाइ जारी रखने छल।

कुल मिलाक' ओतेक बढ़िया त' नहि कहक चाही तैयो सुक्खूक परिवार लमसम ठीक-ठाक चलि रहल छलै, सभ अपना-अपना काममे व्यस्त आ मस्त छल। सुक्खूके गुजरातस' अएला पाँच महीना भ' गेल छलै। एहि बीचमे ओ गिरहतक खेती-बारी सम्हारिक' दस कट्ठा बटैया धानो रोपि लेने छल। आब भादव मास समाप्त होइबला छलै आ आसिनस' गुजरातमे कपासक सीजन शुरू भ' जाइ छलै, जाहि लेल एक दिन सार फोन क' क' कहनहुँ रहै—'पहुना, दुर्गा पूजाके बितलाक दू दिन बाद गुजरात चलैके हैक', हम टिकट निकलबा लै छीक', अहाँ तैयार रहब।' मुदा दुख-सुख जिनगीक दूगो एहन पहलू होइ छै जे कखनो बिनु बुलाएल जिनगीमे आबि आदमीक सभ बनल-बनाएल योजनाके चौपट क' दै छै। आइ दू दिनस' खजौलीबालीके तबियत बहुत खराब छलै। माहबारीक असहनीय दर्द आ अत्यधिक रक्तस्रावस' ओ बिस्तर ध' लेने छल, हालाँकि काल्हि जखन ओकरा दर्द नहि बर्दाश्त भेल रहै त' सुक्खूस' कहनहुँ रहै—'यौ, दरदस' डाँड़-पेडू फाटल जाइ हैक'। हमरा लेल दू गो दरदके दवाइ आनि दिअ।'

सुक्खू ओकरा गपके ओतेक गम्भीर नहि ल' क' दूगो दर्दक दवाइ आनि देलकै जाहिमेस' ओ एगो गोटी खाक' राति भरि निश्चिन्त भ' क' सूतल मुदा आइ भोरस' फेर वैह कछमछी आ छटपटाहटि। बर्दाश्त नहि भेलै त' कहरैत निरियाके सोर पाड़िक' कहलक—'बौआ गै, एक गिलास पानि लाबि द', दरदके दवाइ खायब।'

निरिया मना कएलक—'नहि, बासिए मुँहे दवाइ नहि खो, खराबी करतौ।'

खजौलीबाली खेखनैत कहलक—'नहि गै बेटा, दवाइ नहि खायब त' दरदे मरि जायब।'

मायके छटपटाइत देखि निरिया मायक पँजरामे बैसिक' डाँड़-पीठी ससारय लागल त' देखै अछि मायक साड़ी शोणितस' बोदम-बोद भेल। ओ

मायस' कहलक—'माय उठ त' नुआ बदलि दै छियौक'।'

खजौलीबाली ना-नुकुर करैत कहलक—'नहि गै बौआ, बर्दाश्त नहि होइ हैक'। पाँच रुपयाबला एगो बिस्कुट पैकिट आनि दू, दूगो बिस्कुट खाक' दवाइ खा लेब, तब नुआ बदलि लेब।'

निरिया तखा परस' एगो पँचटकही ल' क' बिस्कुट पैकिट लाबय लेल विदाहे भ' रहल छल कि कतहुस' घुमि-घामिक' टुन्नूओ अँगनामे चलि आएल। ओ पँचटकही सिक्का टुन्नूके द' क' बिस्कुट लाबय लेल दोकान भेज देलक आ घरमे जाक' मायके सहारा द' उठाबैत कहलक—'उठ माय, कनिके बर्दाश्त कर त' जाबे भैया बिस्कुट ल' क' अबै हौउक', ताबे हम नुआ बदलि दै छियौक'।'

निरियाक दबाव पर खजौलीबाली नहि चाहितो उठिक' ठाढ़ हुअ लागल त' माउसक लोथड़ा जकाँ शोणितक थक्का गिरलै, जकरा देखिक' निरिया मायके नुआ बदलैत कहलक—'तोँ एना जे अनठियबैत रहबे त' नहि जीबे, मरि जेबे। तोरा दू-तीन महीनासे हम देखै छियौक'। सभ बेर कहै छही दरद होइ हैक', दरद होइ हैक' आ कोनो डागडरस' देखबै छही नहिए, आइ आबय दिही बाबूके, हमहीं कहै छियै जे मायके कोनो बड़का डागडर ल' ल' जाक' देखा दहक।'

जानक डर केकरा नहि होइ छै, खजौलीबाली किछु नहि बाजल चुपचाप बिछान पर पड़ि रहल। निरिया बदलल नुआस' धरती परहक शोणित साफ क' क' खींचय लेल गल्लीमे ध' आएल आ गोबर माटिस' ओते दूर घरके नीप लेलक, ताधरि दोकानस' बिस्कुट ल' क' टुन्नूओ चलि आएल। ओ एक गिलास पानि आ बिस्कुट पैकिट ल' क' मायक हाथमे देलक, खजौलीबाली जबर्दस्ती तीन-चारिटा बिस्कुट खाक' सिरहन्नामे राखल दर्दक दवाइ खेलक आ फेर बिछौने पर औंघरा गेल। टुन्नू मायक सिरहन्नामे बैसिक' माथ दबाबय लागल आ निरिया मायक गोरथाड़ीमे बैसल पैर जाँतय लागल।

सन्ततिक सेवा-शुश्रूषास' खजौलीबाली भाव-विभोर भ' गेल छल। ओ नोर भरल डबडबाएल आँखिस' कखनो बेटाके मुँह निहारि रहल छल त' कखनो बेटीके। मायक ई हालति देखि दुनू भाइ-बहिनके सेहो नोरस' आँखि भरि गेलै। टुन्नू हाथस' मायक आँखिक नोर पोछैत कहलक—'नहि कान

माय, बाबू अबै हौउ त' बेनीपट्टी ल' जा क' कोनो बड़का डागडरसे देखा दै छियौक'।'

सुक्खूके बटाइबला खेतक धान कमायके धुनि सवार छलै। ओ चारि बजे भोरे-भोर जे लोटा ल' क' दिशा-मैदान करै लेल बाध निकलैत छल से एकहि बेर आठ बजे धरि घर आबैत छल आ फेर किछु जलखै क' क' राजमिस्त्रीक संग मजूरी करबाक लेल विदाह भ' जाइत छल। आइयो आठ बजे ओ घर आएल त' 'निरिया-निरिया' सोर पाड़ैत बाजल—'बौआ, जलखै बनि गेल हौउ त' ला हम दूगो रोटी खाक' काम पर जाइ छी।'

बापक आवाज सुनि निरिया घरस' बहरायल आ कानैत कहलक—'नहि, आइ नहि जा कतौ काम करै लेल, पहिने मायके बेनीपट्टी ल' जाक' कोनो बड़का डागडरस' देखा दहक, नहि त' ई मरि जेतै!'

सुक्खू चेहाइत पुछलक—'की भेलै ग', कथी लेल मरि जेतै?' आ निरिया किछु जवाब दितै ताहिस' पहिने खजौलीबालीके देखै लेल गोसाँइ घरमे पैसि गेल। टुन्नू एखनो मायक सिरहन्नामे बैसल मायक माथ दबा रहल छल आ खजौलीबाली हाथस' पेटके दबौने बेसुध पड़ल आँखिस' नोर बहा रहल छल। सुक्खूके खजौलीबालीस' किछु पुछबाक हिम्मति नहि भेलै। ओ सोझे टुन्नूस' कहलक—'जो बेटा, जल्दीए एगो टेम्पू रिजरब करबाक' आन ग', तब तक हम गिरहत ल' स' कुछ पाइके व्यवस्था कएने अबै छीक'।' एतेक कहि सुक्खू गिरहत ओहिठाम विदा भ' गेल आ टुन्नू टेम्पूक व्यवस्थामे चौक दिस चलि गेल।

एम्हर टोलाक स्त्रीगण सभके जनतब भेलै त' उहो सभ एकाएकी जिगेसामे आबय लागल, दीनाक परिवार रहिकाबाली खजौलीबालीके तेल-कूर औंसय लागल त' राँटीबाली हाल-चाल पूछैत पैर दबबय लागल आ बलाइनबाली अपन सांत्वना भरल बोलीस' ओकर हिम्मति बढ़बय लागल।

निरिया भाइ-बापके आबयस' पहिने रोटी आ अल्लूके भुजिया बनाक' तैयार क' लेने छल। ओ थारीमे दूगो रोटी आ भुजिया ल' क' मायके दिअ गेल त' माय मना केलकै—'नहि खेबौ बेटा, अखनि हमरा एको रत्ती खाइके मोन नहि हैक'।' तैपर बलाइनबाली कहबो केलकै—'कनियाँ, जीह जाँतिक' दूइगो रोटी खा लू, नहि त' कखनि आएब कखनि नहि, भरि दिन भुखले रह' पड़त।'

रामकृपालके परिवार राँटीबाली मैट्रिक पास जागरूक महिला छल, बलाइनबालीके समझाबैत कहलक—'अखनि छोड़ि देथिन दीदी, नहि खियबथिन, हिनका अल्ट्रसाउण्ड करबाबय पड़तै आ अल्ट्रसाउण्ड खाक' नहि होइ हइक'।'

खजौलीबालीके दर्दक दवाइ किछु असर कएने छलै ओ राँटीबालीके मुँह निहारैत बाजल—'कनियाँ, दू-तीन गो बिस्कुट खयने छियैक'।'

राँटीबाली आश्वस्त कएलकै—'दूगो-तीनगो बिस्कुट खयलास' कोनो दिक्कत नहि होतनि।'

किछु देरमे सुक्खू पाइक व्यवस्था क' क' घर आएल त' निरिया रोटी-भुजिया परोसिक' आगूमे देलकै मुदा ओ खायस' मना करय लागल लेकिन बलाइनबालीक जबर्दस्तीक आगू ओकर नहि चललै। ओ केनाहितो दूगो रोटी खाक' हाथ धो लेलक, फेर कनिए देरक बाद टुन्नूओ एगो टेम्पू रिजर्व करबाक' गहबरक आगूमे लगा देलक आ अँगना आएल। निरिया ओकरो आगूमे रोटी-भुजिया परोसिक' द' देलक आ स्त्रीगण सभ संग मायके सम्हारने टेम्पू तक आएल आ बैसा देलक।

सुक्खू टेम्पू पर बैसैत बलाइनबालीस' कहलक—'अहूँ चलियौ न भौजी।'

बलाइनबाली जहिना छल, तहिना टेम्पू पर बैसैत बाजल—'हँ यौ बौआ, चलबे कएला नहि, टोला-परोसामे कथी लेल लोक रहै हइक', खाली भोजे-भात संग मिलक' खयबा लेल, दुख-सुखमे संग पूरय लेल नहि!'

बलाइनबालीके माथ पर नुआ कने फाटल छलै तेँ राँटीबाली कहलक—'दीदी साड़ी बदलि लौथ ग', मथा पर फाटल छनिक'।'

राँटीबाली गपके ओतेक गम्भीरतास' नहि ल' क' बलाइनबाली सीधा-सीधी कहलक—'जैहे हइ सेहे रह' दहक कनियाँ, बेर-बिपतिमे ओते' नहि देखल जाइ हइक'।'

एतेक देरमे टुन्नूओ आबिक' टेम्पूमे बैसि गेल छल, टेम्पूबला टेम्पू स्टार्ट करय लागल त' निरियाक आँखि एकबेर फेर नोरस' भरि गेल। खजौलीबाली बेटीक डबडबाएल आँखि देखिक' रहिकाबालीस' कहलक—'कने घर-दुआर देखबै कनियाँ, निरिया असगरबे रहतै।'

रहिकाबाली, खजौलीबालीके आश्वस्त करैत कहलक—'ई जाउथ पहिने, नीके-नीके आबौथ, निरियाके चिन्ता नहि करौथ, एतय हमसभ छिते

छियै, निरियाके नहि कोनो दिक्कत होतय।' रहिकाबालीके गप समाप्त होइते टेम्पूबला टेम्पूके आगू बढ़ा देलक, आ सभ स्त्रीगण निरियाके ल' क' अँगना चलि गेल।

सुक्खू खजौलीबालीके ल' क' स्त्री-प्रसूति रोग विशेषज्ञ बेनीपट्टीक नामी डॉक्टर उदय रामक क्लिनिक पर पहुँचल। ओ ओतय क्लिनिकमे खजौलीबाली, बालाइनबाली आ टुन्नूके एगो बैंच पर बैसाक' अपने कम्पाउण्डर लग गेल आ डॉक्टर साहेबके तीन सय रुपया जे फीस रहै से जमा क' क' खजौलीबालीके नाम लिखाक' टुन्नूआक बगलमे आबि बैसि गेल। लमसम एक घंटा बितलाक बाद कम्पाउण्डर खजौलीबालीक नाम ल' क' बजौलक त' सुक्खू दुनू परानी डॉक्टरक चैम्बरमे घुसल। डॉक्टर साहेब खजौलीबालीस' पहिने दिक्कत आ फिरिसानी पुछलक आ तकर बाद पर्ची पर किछु लिखैत सुक्खूस' मैथिलीएमे कहलक—'एहिमे खून-पेशाबक जाँच आ अल्ट्रासाउण्ड टेस्ट लिख देलहुँ अछि, पहिने ई सभ करबा लिअ, तकर बादे पता चलत कि पेशेन्टके केना की स्थिति छै, तखनहि किछु कहब आकि कोनो दवाइ लिखब।'

सुक्खू डॉक्टर साहेबके चैम्बरस' निकलिक' कम्पाउण्डरक हाथमे पर्ची देलक आ कम्पाउण्डर खजौलीबालीस' खून-पेशाब ल' क' अल्ट्रासाउण्डक जाँच लेल बेनीपट्टीक इन्द्रा चौक जाइ लेल कहलक। टेम्पू रिजर्व रहबे करै, चारू गोटे टेम्पूमे बैसल आ इन्द्रा चौक पहुँचि गेल। अल्ट्रासाउण्डबला खजौलीबालीके पहिने खूब पानि पीबय लेल कहलक आ संगे हिदायतो देलक जे जखन खूब जोरस' पेशाब लागि जाएत, तखन हमरा कहब, हम तखने अल्ट्रासाउण्ड करबै।

ओतहि बगलमे चापाकल रहै, बलाइनबाली, खजौलीबालीके चापाकल पर ल' गेल आ भरि इच्छा पानि पीआक' अल्ट्रासाण्डबला वेटिंग रूममे लाबि बेंच पर बैसा देलक। खजौलीबालीके बूझल रहै जे बलाइनबाली बासिए मुँहे आएल छै से ओ सुक्खूके इशारास' बजाक' कहलक—'यौ, दीदी बासिए मुँहे आएल छथिन, जाउ न होटलमे ल' जाक' कुछ खीआ दिऔ ग' न।'

सुक्खू बलाइनबालीस' किछु कहितय ताहिस' पहिने बलाइनबाली खजौलीबालीस' कहय लागल—'नहि हइ कनियाँ, अखनि हमरा भूख नहि लागल हैक', हम नहि किछु खेबह।' तइ पर सुक्खू कहबो केलकै—'कथी लेल

नहि खेबै, एक बजैत होतइ, चलू कुछ खा लू ग', बासिए मुँहे नहि रहू।'

बलाइनबाली फेर मना कएलक—'अहाँ नहि बूझै छियै बौआ, डागडरी घरमे एला पर हमरा खाहीके मोन नहि होइत रहै हैक', अखनि हम नहि कतौ जैब।'

सुक्खू एकबेर फेर कोशिश कएलक। ओ टुन्नूक हाथमे एगो नमरी दैत कहलक—'जो रे बौआ, काकी लेल चारिगो सिंघारा आनि दिही ग', एतय खा लेतै।' बलाइनबाली टुन्नूआक हाथ पकड़ि लेलक आ सुक्खूस' कहलक—'अहाँ जिद्द नहि करू न बौआ, पहिने कनियाँके नीकस' जाँच हुअ दियौ त' हम दुनू दियादनी कुछ खाक' पानि पी लेब।' सुक्खू विवश भ' गेल, फेर बलाइनबालीस' किछु नहि कहलक।

लमसम पौन एक घंटाक बाद जखनि खजौलीके जोरस' लघुशंका महसूस भेलै त' जाक' ओ अल्ट्रासाउण्डबलाके कहलक, अल्ट्रासाउण्डबला खजौलीबाली दुनू परानीके ल' क' जाँचबला रूममे गेल आ फेर दस मिनट धरि ओहिमे राखिक', अल्ट्रासाउण्डक जाँच क' क', दुनू परानीके बाहर भेजय लागल त' सुक्खू अल्ट्रासाउण्डबलास' ओहि जाँचबला रूममे पूछि लेलक—'आब पेशेन्ट खा सकै हइ' त' ओ कहलक—'हँ जाउ, किछु खीआ दियौ, ताधरि अहाँक अल्ट्रासाउण्डबला फोटो सेहो सूखि जाएत।'

रूमस' बाहर आबि सुक्खू बलाइनबालीस' कहलक—'चलू भौजी, आब अहूँ दुनू कोइ कुछ खा लू ग'।'

बलाइनबाली सुक्खू तीनू परानीके संग बाहर आएल, बाहरमे दू टा होटल रहै, जाहिमे दालि-भात-तरकारी मिलैत रहै आ तीन-चारिगो नाश्ताक दोकान रहै, जाहिमे घुघनी-चूरा-मुरही, कचरी आ सिंघारा मिलैत रहै, सुक्खूके आन्तरिक इच्छा रहै जे दुनू महिलाके दालि-भात-तरकारी भरि पेटक' खुआ देबै, यैह सोचिक' ओ होटलमे जाय लागल त' बलाइनबाली मना कएलक—'कथी लेल बेसी खर्चा करै छीक', पाइ रहत त' दवाइ-बिरोमे काम देत, ओनाहिओ होटलमे एक मुट्ठी भात देत आ साठि-सत्तर रुपया ठकि लेत। एहिस' नीक हमरा दुनू दियादनिके घुघनीए-चूरा खिआ दिअ, पानि पी लेबै त' पेट भरि जेतै।'

बलाइनबालीके हँ-मे-हँ मिलबैत खजौलीबाली बाजल—'हँ, दीदी ठीके कहै छथिन, हमरो भात खायके एकोरत्ती मन नहि हैक'।'

सुक्खू विवश भ' क' सभके ल' क' नाश्ता दोकानमे बैसि गेल। दुनू महिला एक-एक प्लेट घुघनी-मुरही-चूरा खयलक आ सुक्खू दुनू बाप-बेटा दू-दूगो क' सिंघारा।

खा-पीक' जखन सभकियो अल्ट्रासाउण्डबला लग आपस आएल त' अल्ट्रासाउण्डबला सुक्खूके देखिते कहलक—'अहाँ पेशेन्टक रिपोर्ट तैयार भ' गेल अछि, ल' लिअ।'

सुक्खू रिपोर्ट लैत अल्ट्रसाउण्डबलास' पुछलक—'की दिक्कत हइक'?'

अल्ट्रसाउण्डबला अनठियाबैत बाजल—'जाउ न, डॉक्टर साहेबके देख' देबै, ओ सभ बात अपने कहि देताह।'

सुक्खू बूझि गेल जे ई सभ किछु जनितो अनठियाबैत अछि तेँ ओ फेर ओकरास' दोबारा किछु नहि पुछलक। सभके ल' क' बाहर चलि आएल आ टेम्पू पर बैसि क्लिनिक लेल विदाह भ' गेल।

क्लिनिक पहुँचिक' सुक्खू अल्ट्रासाउण्डक रिपोर्ट कम्पाउण्डरक हाथमे देलक, त' ओ रिपोर्टके उल्टा-पुल्टाक' देखैत सुक्खूस' कहलक—'डॉक्टर साहब एखन बैसले छथिन, कने देर बैसू तहन बजाबैत छी।'

सुक्खू जाक' टुन्नूआक बगलमे बेंच पर बैसि गेल आ कम्पाउण्डरक बजाहैटके प्रतीक्षा करय लागल। लमसम पन्द्रह मिनट बाद कम्पाउण्डर सुक्खू दुनू परानीके डॉक्टर साहेबके चैम्बरमे भेजलक। डॉक्टर साहब सुक्खू दुनू परानीके कुर्सी पर बैसैक इशारा क' क' सुक्खूस' साफ-साफ कहलक—'हिनका बच्चेदानीमे गाँठ भ' गेल छै, आब दवाइस' ठीक नहि होत, ऑपरेशन करबाक' बच्चेदानी हटबाबय पड़त, आ उहो जल्दीए, ज्यादा लेट करबै त' पेशेन्टक लेल खतरा बढ़ि जाएत, फेर कतबो पाइ लगेबै त' कोनो फायदा नहि होत।'

ऑपरेशनक नाम सुनिते खजौलीबालीक रूह काँपि गेलै। ओ भयाक्रान्त भ' सुक्खूक मुँह निहारय लागल आ सुक्खू डॉक्टरस' अपन असमर्थता कहय लागल—'अखनि ओते पाइ ल' क' नहि एली ग' डागडर साहेब, हमरा लग कमे-समे पाइ हैक'।'

डॉक्टर, सुक्खूके समझाबैत कहलक—'एखन हिनका शरीरमे खूनक कमी छनि, ऑपरेशन नहि हैत। हम पन्द्रह दिनक दवाइ लिख दै छी, खेथिन त' शरीरमे किछु खून बढ़ि जेतनि, तखन आबिक' भेंट करब।'

डॉक्टर दवाइ लिखिक' पर्ची सुक्खूक हाथमे दिअ लागल त' सुक्खू डेराइते पुछलक—'ऑपरेशनमे कते खर्चा लागि जेतै डागडर साहेब?'

डॉक्टर साहेब कहलक—'सताइस-अठाइस हजार रुपया लमसम लागि जाएत, आउर किछु विशेष जानकारी लेबाक अछि त' कम्पाउण्डरस' पूछि लेब।'

सुक्खू दुनू परानी डॉक्टरक चैम्बरस' निकलिक' बाहर आएल, खजौलीबाली, बलाइनबालीक बगलमे बैसि गेल आ सुक्खू टुन्नूके संग क' क' क्लिनिकक मुँह पर जे दवाइ दोकान रहै, ताहिमे दवाइ कीनय चलि गेल। ओ आइ गिरहतस' पाँच हजार रुपया सूदि पर ल' क' आएल छल आ एक-आध हजार रुपया ओकरा अपनो लग छलै, जाहिमेस' डागडरक फीस आ जाँच-फाँचमे पनरह-सोलह सय रुपया खर्चा भ' गेलै, तीन हजार रुपया दवाइमे सेहो लागि गेलै, आब गिरहतबला पाइमेस' ओकरा लग मात्र चारि सय रुपया बँचि गेल छलै आ एखन टेम्पूबलाके सात सय रुपया भाड़ा दिअके बाँकीए छलै। माने कि आइ ओकरा पाँच हजारस' किछु बेसीए रुपया खर्चा भ' गेल छलै।

दवाइ कीनिक' सुक्खू कम्पाउण्डरके देखबय लेल आएल त' बलाइनबाली आ खजौलीबाली सेहो सहटिक' ओतय चलि आएल, कम्पाउण्डर खजौलीबालीके दवाइक खोराकी समझा-बूझाक' सुक्खूस' कहलक—'जेना हुए तेना, हिनका ऑपरेशन करबाइए देबै, अनठिएबै नहि।'

सुक्खू टेबुल परस' दवाइक पलोथिन उठबैत बाजल—'जाइ छियैक' घर पर त' पाइ-कौड़ीके व्यवस्था करै छियैक'।' आ फेर बलाइनबालीस' कहलक—'चलू भौजी, आब चलै छी।' एतेक कहि सुक्खू ओतयस' विदाह भ' गेल। पाछू-पाछू बलाइनबाली, खजौलीबाली आ टुन्नू संग लागि गेल। क्लिनिकक बाहर टेम्पू छलै, सभकियो टेम्पूमे जाक' बैसि गेल। खजौलीबाली भय आ चिन्ताके मिलल-जुलल भाव लेने बलाइनबालीके कहलक—'हमरा अपरेसनसे बड़ डर लगै हैक' दीदी, आब जानि नहि की होत, जिअब आकि मरब!' फेर निसास छोड़ैत भगवानके कोसय लागल—'ई बेइमनमा दैवो हमरे सन-सन गरीब लोक लेल दुखो-क्लेश रखने रहै हइक'। एक त' बेटीक बियाहक कर्जा अखनि रखले हैक' आ देखथिन फेर कहै हइक' तीस हजार रुपया हमरेमे लगतै!'

बलाइनबाली, खजौलीबालीके किछु उतारा दितय ताहिस' पहिने सुक्खू बाजल—'आ आइ जे पाँच हजार रुपया गिरहतस' अनने छलियै ग' से बिसरि गेलयै! ऊ पाइ त' आइए खर्चा भ' गेलै।'

खजौलीबालीके दैहिक कष्ट त' छलैहे मुदा जखनस' दर्दक दवाइ खएने छल, किछु आराम छलै, बाजल—'जा! ऊ त' हम बिसरियै गेल छलियै ग', हमरा बूझाइ हैक' नहिओ नहि त' हमरामे चालीस हजारस' बेसीए लागि जेतै।'

बलाइनबाली सुक्खू दुनू परानीके सांत्वना दैत कहलक—'की करबै बौआ, जे खर्चा हुअके हइ से त' होबे करतै, भगवानके कहिऔ कहुना एकर दुख-क्लेश मेटा दैक आ हमरा समाँग दिअ, कर्जाके चिन्ता-फिकीर नहि करू, समाँग रहत त' सभ सधा लेब।'

सुक्खू बलाइनबालीके अपन असमर्थता बतौलक—'कत'स' सधा लेबै भौजी, कहै छलियै ग' मारि कर्जा-बिआन हैक', गुजरात चलि जायब, हमर सार टिकटो छलै बना लेने, आब एकरा एहन हालतिमे छोड़िक' केना गेल होतै!'

टेम्पूबला टेम्पू चलबैत ओकर सभक गप सुनि रहल छल। ओ सुक्खूस' कहलक—'हौ भैया, बूढ़-पुरनियाँ सभ ओहिना नहि कहने हइक' बड़-बेमारी आ केस-फौदारीमे बनलो घर बिलटि जाइ हइक', ऊ सभ एहि बातके अनुभव कएने होतै।'

एहिना गप-सप करैत जखन सभकियो घर पहुँचल त' खजौलीबालके कुशल-क्षेम पूछ' लेल टोलाक जनिजाति सभ फेर एकाएकी अँगना आबय लागल। राँटीबाली सेहो अँगनामे आएल छल। ओ खजौलीबालीक लगमे जाक' बैसैत पुछलक—'डॉक्टर की कहलकनि दीदी, कएलकनि सूइया-दवाइ?'

खजौलीबाली व्यथित मोनस' बाजल—'कहलकै ग' बच्चेदानीमे गिट्ठह भ' गेल हइ, अपरेसन क' क' बच्चेदानी निकलबाबय पड़तै।'

राँटीबालीके बच्चेदानी कैन्सरके विषयमे थोड़-बहुत बूझल छलै। ओ निधोख बाजल—'तब त' जते जल्दी होइ छनि, तते जल्दी बच्चेदानी हटबाइए लौथ दीदी, नहि त' हिनका कैन्सरके डर छनि।'

बलाइनबाली एखनो खजौलीबालीके बगलमे बैसले छल। कैन्सरके नाम सुनि ओ घोघनाइत बाजल—'ई त' आउर जेहो नहि सेहो बेमारीके नाम ल' क' लोकके जीह-आँत डेरा दै हइक'! जदि एहन कोनो बात रहितै त'

डागडर नहि कहितै!'

सुक्खू बकरीबला घरमे मचान पर बैसल जनिजाति सभक गप सुनि रहल छल। अँगनामे आबि बलाइनबालीस' कहलक—'भौजी, राँटीबाली कनियाँ ठीक कहै हैक', हम त' डागडरके बातेस' बूझि गेल छलियै ग', डरे अहाँ सभके नहि कहली ग' लेकिन अखनि डेरायबला बात नहि हइक', सोलहम दिन हम एकरा अपरेसन करबाइए देबै ग'।'

राँटीबाली सुक्खूक समर्थन पाबि उत्साहित छल बाजल—'ई बूझि गेलखिन भैया, तबे ने कहय छथिन कि हम सोलहम दिन ल' जा ऑपरेशन करबा देबै, आ जे कते आदमी नहि बूझै हइ त' अनठिया नहि दै हइक', ताहि लेल हमर कहब हैक' जे बर-बेमारीमे नहि अनठियाबी आ नहि छुपाबी-नुकाबी, इलाज कराबी।'

बलाइनबाली डॉक्टरके गरियाबैत बाजल—'त' डगडरबाके मुँहमे लकबा ध' लेने छलै ग' जे खोलिक' नहि बजलै ग'।'

राँटीबाली बलाइनबालीके समझाबैत कहलक—'दीदी, डॉक्टर साहेब खोलिक' केना कहतनि गिट्ठहोमे कि कोनो सभ गिट्ठह कैन्सरे होइ हइक', सयमेस' एक-आध गिट्ठह कैन्सरक रूप ल' लै हइक' लेकिन डर त' जरूरे रहै हइक'।'

साँझ-बातीक टेम भ' गेल छलै। निरिया जखन अपना घर-अँगनाबला बल्बके स्वीच ऑन केलक त' राँटीबालीके अपना घरक ध्यान एलै। ओ ठाढ़ होइत खजौलीबालीस' कहलक—'दीदी, आब ई अराम करौथ, साँझ-बातीके टेम भ' गेलै, हमरो घर-दुआर अन्हारे होतै, जाइ छियै बल सभ बारि देबै।'

राँटीबालीके जाइते बलाइनबाली सेहो विदाह होइत खजौलीबालीस' कहलक—'हँ हइ कनियाँ, अन्हार भ' गेलै, आब हमहुँ जाइ छीक', काल्हि फेर भेंट करह एबह।'

जनिजाति सभके विदाह भेलाक पछाति निरिया रतुका खाना बनाबय लेल जड़ना-काठी ओरियाबय लागल आ सुक्खू तीनू परानी ओतहि असोरा पर बैसल दुख-सुख बतियाइत एक-दोसराके सम्बल आ सहारा दिअ लागल।

पाँच

दुर्गा पूजाक कलश स्थापन पड़ला तीन दिन भ' गेल छलै। आइ सुक्खूके खजौलीबालीके ल' क' ऑपरेशन करबाबय लेल बेनीपट्टी जेबाक छलै। ओ पाइ-कौड़ीक व्यवस्था क' क' तैयार छल मुदा खजौलीबाली ना-नुकुर क' रहल छलै। ओकर कहब छलै, एते दिन किछु नहि भेल त' एहि आठ-नौ दिनमे पहाड़ नहि खसि पड़तै, दुर्गा पूजाक बितलाक दू दिन बाद ऑपरेशन करबा लेब मुदा सुक्खूक संग-संग ओकर परिवारक सदस्य सभ खजौलीबालीक ई गप मनबाक लेल तैयार नहि छलै।

असियाके मेहमान पनरह दिन पहिनहि बाहर कमाय लेल चलि गेल छलै। जखन असियाके जनतब भेलै कि मायके एहन सन हालति अछि त' ओ साउसके कहलक—'हम मायके देख' लेल बिचखाना जायब।' तखन साउस, ससुरके संग क' क' आठ दिन पहिनहि पहुँचबा देने रहै, एम्हर खजौलीबालीक बेमारीक हालति सुनि एक दिन भाइ-भौजाइ दुनू परानी ओकर बूढ़ मायके ल' क' सेहो भेंट-घाट कर' लेल बिचखाना आएल रहै। भाइ-भौजाइ त' भेंट-घाट क' क' ओही दिन चलि गेल रहै मुदा माय नहि गेलै। ओ बेटास' कहने रहै—'बेटी नीके-नीके असपतालस' घर चलि आएत त' आठ दिन रहिक' हमहुँ टुन्नूके संग क' क' घर चलि आएब।'

असिया मायके समझाबैत कहलक—'तोँ कएला नहि जाइ चाहै छहीक'? तोरा कथीके दिक्कति हौउक', ओतह होस्पिटलमे हम आ बाबू तोरा संगे रहबे करबौ, एत' निरिया आ नानी घर-दुआर आ बकरी-छकरी सम्हारिए लेतहु आ टुन्नूआ कहिते हौउक' जे हम रोजे साइकिलस' खेनाइ पहुँचा देबै, तब तोँ फेर कएला नहि जाय चाहै छहीक'?'

खजौलीबाली असियास' कहलक—'तोँ नहि बूझै छहीक', अखनि मेला-ठेलाके दिन हइक', हम असपतालमे भर्ती रहबौ त' सभ आदमी हमरेमे घुरियाएल रहबे, केकरो दुर्गा मायके दर्शन करल पार नहि लगतहु।'

सुक्खू सेहो ओतहि छल, खजौलीबालीक गप सुनि तमसाइत असियाके भरना दैत बाजल—'सुनलही एकर बात, ई त' हमरा आउरके बताह बनाक'

छोड़ि देत, मेला देख'के कारणे अपरेसन नहि करबाबय चाहै हइक'।'

निरिया मायके डाँटैत कहलक—'जाही न गै, कएला झूठोके सभके मथा खराब कएने छहीक', पहिने मेला-ठेला जरूरी हइक' कि पहिने जान जरूरी हइक'!'

चौतरफा दबाव पड़लास' खजौलीबाली खिसिया गेल छल, अड़दर-बड़दर बाजैत बाजल—'कहबी नहि हइक', मैया मरे धीया लै आ धीया मरे बुढ़बा भतार लै, सैहे हाल ई सभ हमरा कएने हैक'। हम कहिया मेला-ठेला देख' जाइ छीक' जे तखनि से हमरा सभ मिलक' लुलू-छुछू कएने हैक'। हम त' कहै छियै, नानी आएल हइक', तीनू भाइ-बहिन नानीके संग क' क' मेला-ठेला देखि लेत तब हमहुँ दू दिन बाद जाक' अपरेसन करबा लेब, हम कोनो कहै छियै अपरेसन नहि करबेबै।'

खजौलीबालीक माय अपन असमर्थतता जतबैत बेटीके समझौलक—'नहि गै बौआ, आब हम चल'-फिर'मे ओतेक नहि सकै छीक' जे मेला-ठेला देख' जायब। तोँ ओनाहितो कहिते छहक जे दुर्गा पूजाक बितला दू दिन बाद डागडर लग जेबे करब त' ओहिस' नीक आइये चलि जा, झूठोके बेमारी नहि बढ़ाबह।'

पारिवारिक सदस्य सभक जिद्दक आगू खजौलीबालीके नहि चललै, विवश भ' ओकरा हॉस्पिटलमे एडमिट होबैए पड़लैक। परिवारक योजनानुसार सुक्खू आ असिया, दुनू बाप-बेटी खजौलीबालीक सेवा-सुश्रुषाक लेल हॉस्पिटल चलि गेल आ टुन्नू साइकिलस' रोजक-रोज, एकहि टेममे दुनू टेम'क खैक पहुँचाबय लागल।

बिचखानास' बेनीपट्टी साइकिलस' जायमे एक घंटा लगैत छै आ ने कि टुन्नूके बेन्नीपट्टी जाइ-आबयमे दू घंटा लागि जाइत रहै आ एक दू-घंटा ओ ओतय हॉस्पिटलमे रहिक' माय-बापस' दुख-सुख बतियाइत, किछु सेवा-टहल सेहो क' दैत रहै। माय-बापक सानिध्य, आर्थिक विपन्नता, बेमारी आ एकाग्रचित साइकिलक सवारी, ओकरा व्यक्तित्वमे बहुत किछु परिवर्तन लाबि देलकै। आब ओ साइकिल चलबैत काल असगरमे बहुत किछु सोचैत रहै छल। दीदीके बियाहक कर्जा अखनि तक रखले हइक', ऊपरस' मायमे पैंतीस-चालीस हजार रुपया खर्चा भ' गेलै, बाबू कुछ कर्जा सधाइयो लितै से मायके बेमारीमे फँसिक' गुजरात नहि गेलै, बाबूके असगर

खेते-खेत बोनि कएने आकि राजमिस्त्री जरे खटनेस' कर्जा नहि सधेबला हइक', नहिओ नहि त' लाख रुपयास' ऊपरे कर्जा होतइ, तीन रुपया सैकड़ा चललै त' तीन हजार रुपया महीनास' बेसी सूदिए भ' जाइ हइक', ओहूमे कहिओ काल बाबू बैठारिए रहि जाइ हइक'। एम्हर, घर-परिवारक खर्चा आ बर-बेमारी से अलगे, नहि, बाबू बुते असगरे कर्जा नहि सधेबला हइक', आब हमरो कमाहि पड़तै।

ई क्रिकेट खेललास' आब पेट नहि भरयबला हइक'। दोसर गप, बिनु स्टेट लेबल मैच खेलने क्रिकेटमे कोनो कैरियरो नहि हइक' आ स्टेट लेबल मैच खेलाइ लेल प्रतिभाके संगे-संग पैसा आ पैरवी सेहो चाही आ हमरा लग नहि पाइ हैक' आ नहि पैरवी। झूठोके एतेक दिन हम क्रिकेटमे समय खराब केली, एतेक समय हम पढ़ाइ-लिखाइमे देने रहितियै त' आइ नीक विद्यार्थी रहिती, मुदा पढ़लो-लिखलोके की कोनो सभके नोकरी भइए जाइ हइक', हम त' कतेकोके देखने छियैक' बीए-एमए पास क' क' गाममे घुमिते रहै हइक', पढ़ाइओ-लिखाइ एकटा व्यापारे हइक'। पाइबलाके बेटा सभ एकस' एक कोचिंग आ इन्स्टच्यूटमे एडमिशन ल' क' अपन तैयारीके माँजि लै हइक' आ हमरा सन मजूर बापक बेटा त' मधुबनीओमे रहिक' सेल्फ स्टडी करब सेहो मस्किले हैक' त' झूठोके कथी लेल पढ़ै-लिखैके लौल कएने रहू! जेहन हमर बापक स्थिति हइक' तेहनमे हमरा कुछ कमेनाइ उचित हइक'।

मुदा हम काम कोन करबै! हँ, टोलाक छौंड़ा सभ त' राजमिस्त्री जरे खटिते हइक', ओकरे सभ जरे हमहुँ काम करय चलि जायब, लेकिन हम कहिओ काम नहि कएने छियै त' राजमिस्त्री जरे खटयमे लाजो होत आ अइ परोपट्टामेके लोकसभ हमरा चिन्हबो करय हैक', की कहत, देखही छौंड़ा नीक क्रिकेटर भ' क' राजमिस्त्री जरे खटै हइक'! सभ मजाक उड़ाएत! तँ फेर दोसर विकल्पो त' नहि हैक'! नहि, विकल्प हइक', एमकी जीजाजी अबै हइक' त' जीजेजी संगे राजस्थान चलि जायब, लेकिन जीजाजीके तँ अखनि मात्र पनरह-बीस दिन गेले भेलै ग'। आब एकहि बेर ऊ फगुआमे एतै, त' एतेक दिन हम बैठिक' रहब! नहि, तब तक हम राजमिस्त्री जरे काम पकड़ि लै छीक', जीजाजी एतै त' फेर बूझल जेतै। ओनाहितो विद्वान सभ कहने छथिन, अपन काम करैमे लाज नहि होबक चाही आ लाजे कथीके! कोनो कि हम चोरी-डकैती करबै जे हमरा लाज

होत आ मजाके कोइ केहन उड़ायत! अखनि हमर बाप करजास' बिकायल हैक' त' कोइ एको साँझक खेबा-खर्चा दै हैक' से मजाक उड़ायत! माय खाली नीके-नीके हॉस्पिटलस' घर आबि जाइक त' हमहुँ कमेनाइ शुरू क' देबै, दुनू बापते मिलिक' कमैबै त' बाबूके कमैनीस' करजा सधैत रहतै आ हम अपना कमैनीस' घरक खोराकी चला लेबै।

मजबूरी घुन जकाँ नहुँए-नहुँए ओकरा 'किछु करबाक अछि' बला आत्मविश्वासके काटय लगलै, गरीबी दिबार बनिक' ओकर नान्हिटास' जोगाओल क्रिकेटर बनबाक सपनाके धीरे-धीरे चाटय लगलै आ परिस्थिति ओकरा फँसबय लेल षड्यंत्रक जाल बिछौने बाट ताकय लगलै। कतेक आक्रमण सहैत बेचारा आ कथी-कथीस' लड़ैत! ओनाहितो आत्मविश्वासहीन आ आशरहित व्यक्तिमे संघर्षक क्षमता शून्य भ' जाइत छै। ओ बिनु कोनो विरोध आ प्रतिरोधके परिस्थितिक आगू अपनाके आत्मसमर्पण करबाक लेल तैयार भ' गेल।

जिनगी कोरा कागत जकाँ रंगहीन नहि होइत छै। जिनगी दुख-सुख, शोक-सन्ताप, हर्षोल्लास, व्यथा-विषाद, उमंग-उत्साह सन कतेको फिकगर आ ललितगर रंगस' रंगीन होइ छै। खजौलीबालीके हॉस्पिटलक आठ दिनक नारकीय अनुभवक संग एगो शुभ समाचार प्राप्त भेलै कि असिया आब माय बनयबाली अछि आ एहि दुखद घड़ीमे ई शुभ समाचार ओकरा लेल मृतसंजीवनीस' कम नहि छलै। ओ नानी बनबाक सुन्नर कल्पनामे अपन दैहिक दुखके बहुत हद तक बिसरय लागल छल। ओ ऑपरेशनक खर्चाके चिन्ता-फिकिरस' मानसिक रूपे उबरय लागल छल।

एम्हर सुक्खूके पहिनहिस' बूझल छलै कि आइ आठ दिनक बाद खजौलीबालीके टाँका कटतै से ओ हेड कम्पाउण्डरके ड्यूटी अबिते ओकरा ल' जाक' जे ऑपरेशनक हिसाब-किताब छलै, ताहिके चुकता क' क' खजौलीबालीक टाँका कटबा देलक आ जे थोड़-बहुत डॉक्टर साहब दवाइ लिखलकै से कीनिक' असिया हाथमे दैत बाजल—'बौआ, हम एगो टेम्पू रिजरब करबेने अबै छीक', तब तक तोँ ई दवाइ आ जे नुआ-वस्त्र ह' क' सभके सहियारिक' दुनू झोरामे ध' लह।'

एतेक कहि सुक्खू ओत'स' विदाह भ' गेल आ एम्हर असिया पहिने मायके माथ-केस बान्हि, टिकुली-सेनुर क' क' तैयार कएलाक बाद

अपनो तैयार भ' गेल आ फेर नुआ-वस्त्र आ दवाइ सभके झोरामे सैंतिक' बापक प्रतीक्षा करय लागल।

कनिए देरक बाद सुक्खू हॉस्पिटलक वार्डमे धड़फड़एल आएल आ असियास' कहलक—'बौआ, सभ कुछ सैंता गेलह?'

—'हँ।'

—'कुछ छूटल' ग' नहि ने?'

—'नहि, आब नहि कुछ छूटल हइक'।'

सुक्खू दुनू झोरा उठबैत बाजल—'टेम्पू अस्पतालक मुँह पर ठाढ़ हैक', मायके सम्हारिक' लेने आबह।'

सुक्खू चारि डेग आगू बढ़ल त' किछु मोन पड़लै। ओ पाछू घुमिक' असियास' कहलक—'टुन्नूके आइ खैक लेल मना कएने छलह किने?'

एमकी राजस्थान जाइस' पहिने असियाक मेहमान अपनबला पुरनका एन्ड्रॉयड मोबाइल असियाके द' गेल रहै। ओ मायक बाँहि पकड़ने डेग आगू बढ़बैत कहलक—'हँ, टाँका काटयस' पहिनहि हम फोन क' देने छलियै ग' कि आइ खैक ल' क' नहि अबिहे, हम सभ दस-एगारह बजे घर पहुँच जेबै त' घरे पर खा लेब।'

सुक्खू आश्वस्त भ' बाजल—'बढ़ियाँ कएलह जे मना क' देलहक, नहि त' ओकरा झूठेके फिरिसानी बढ़ि जइतै।'

गप-सप करिते सुक्खू तीनू परानी हॉस्पिटलस' निकलिक' टेम्पू लग आबि गेल। सुक्खू पहिने दुनू झोराके टेम्पूक पाछूमे राखि देलक आ फेर दुनू बाप-बेटी मिलिक' बड़ी सावधानीस' खजौलीबालीके टेम्पूक बीचला सीट पर बीचमे बैसाक' दुनू बाप-बेटी अगल-बगल बैसि गेल।

टेम्पूबलाके टेम्पू स्टार्ट करयस' पहिने असिया हिदायत दैत कहलक—'भैया, टेम्पूके हुच्ची सभस' बचाक' ल' चलबै, अखनि नया अपरेसन हइक'।'

टेम्पूबला असियाके आश्वासन दैत बाजल—'अहाँ निश्चिन्त रहू, हम चाचीके कनेको दिक्कत नहि हुअ देबै।'

टेम्पू आगू बढ़ैस' पहिने खजौलीबाली एक बेर हॉस्पिटल दिस गौरस' देखलक आ फेर मोने-मोन गोड़ लागिक' घरक लेल विदाह भ' गेल।

छह

खजौलीबालीके आइ ऑपरेशन करबाक' अएला तीन दिन भ' गेल छलै, डॉक्टरक हिदायतक अनुसार ओ भोरे-भोरे एक-डेढ़ घंटा नहुँए-नहुँए टोलाक पीसीसीबला सड़क पर घुमि-टहलि लैत छल। आइयो ओ घुमि-फिरिक' अँगना आएल। दवाइ खाइके रहै ताहि लेल ओसोराक कोन्टा पर बैसिक' बाँसक दातुनस' मुँह धोअ लागल। भिनसरक आठ-पौने आठ बाजि रहल छलै। असिया दुनू बहिन मिलक' तरकारी बना लेने छल आ चुल्ही लग बैसिक' गरमा-गरम सोहारी सेकि रहल छल। नानी सेहो चुल्ही लग एक कातमे बैसल छलै, सुक्खूके आइ अस्पतालस' एलाक बाद पहिल दिन राजमिस्त्रीक संग काम पर जेबाक छलै। ओ गोसाँइबला घरक असोरा पर बैसिक' गरमा-गरम सोहारी-तरकारी खा रहल छल कि एकाएक टुन्नूआ अँगनामे आबैत असियास' कहलक—'दीदी, हमरो खाइ ले' दे, आइस' हमहुँ काम करय लेल जाइ छियैक'।'

टुन्नूक गप सुनि सभ आश्चर्यस' ओकर मुँह ताकय लागल आ असिया चेहाइत बाजल—'तोँ कोन काम करय लेल जेबही?'

टुन्नू सहज भावमे बाजल—'मन्तोष चचास' काल्हि बात कएने रहियै, ओकरे जरे काम पर जेबै।'

मन्तोष महतो गामक जानल-मानल राजमिस्त्री छल। ओ आस-पड़ोसक गाममे स्क्वायर फिटक हिसाबस' मकान ठीका पर ल' क' बनबैत छल। ओकरा विषयमे ई गप प्रसिद्ध छलै कि ओ मजूरके दारू-मुर्गा खिआ-पिआक' दुहि लै छै, तेँ ओकरा संग जल्दी कियो मजूर काम करय नहि चाहय छल, मुदा सुक्खूके मन्तोष महतोक व्यक्तित्व आकि कृतित्वस' एतय कोनो लेना-देना नहि छल, ओकरा मतलब छलै त' टुन्नूके काम पर जायस' रोकयके। ओ टुन्नूस' साफ-साफ कहलक—'नहि, अखनि तोरा कमाय-खटायके कोनो जरूरी नहि हौउक', कते नीक पढ़ै-लिखै छैक', पढ़-लिख आ खेल-कूद, अखनि हम कमाय लेल छेबे छीक'।'

टुन्नू बापक मोन रखबाक लेल ऊपरका मोनस' कहलक—'काम

करबै त' कोनो कि हम पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि देबै! कामो क' लेबै आ साँझ-भिनसर पढ़िओ लेबै।'

सुक्खू, टुन्नूक क्रिकेट प्रेम आ क्रिकेटमे ओकर उच्च श्रेणीक प्रदर्शनस' अवगत छल, पुछलक—'आ क्रिकेट खेलनाइ छोड़ि देबही?'

टुन्नू जवाब देलक—'नहि, क्रिकेटो नहि छोड़बै, जहिआ मैच रहतै तहिआ छुट्टी मारिक' मैच खेल' चलि जेबै।'

खजौलीबालीके डॉक्टर बेसी जोरस' बाजय लेल मना कएने छलै तेँ ओ दातुन लेनहि नहुँए-नहुँए टुन्नू लग आएल आ धीरहिस' पुछलक—'अँय रौ बौआ, कहै जे छलही बीपीएलमे खेलाइ हइक', तँ बड़ पाइ मिलै हइक' से आब नहि होतौ?'

टुन्नू, मायक गलती शब्द उच्चारण पर अक्सरहेँ मजाक उड़बैत रहै छलै मुदा आइ ओ भीतरस' टूटि गेल छल। गम्भीर भ' क' बाजल—'बीपीएल नहि होइ हइक', आइपीएल होइ हइक' आ आइपीएल खेलय लेल पाइ आउर पैरवी चाही आ नहि त' फेर बहुत अधिक समय।'

—'त' फेर अगुताय कएला छेँक', समय दिही।' सुक्खू कहलक।

परिस्थितिक मारल टुन्नू नकारात्मकतास' भरि गेल छल, बाजल—'समयो देलास' कोनो जरूरी नहि हइक' कि आइपीएलमे हमरा सिलेक्शन भए जेतै! एहिस' नीक आब हमरा कामे-धन्धा कर' द'ह, मारि करजो भ' गेल ह' क', जेहे कुछ हमहुँ कमा लेबह त' कुछ तोरो मदति भ' जेतह।'

सुक्खू एगो पिता छल आ हरेक पिताके एगो सपना होइत छै कि हमर बेटा जिनगीक इम्तेहानमे सफल भ' देश-दुनियाँ आ गाम-समाजमे नाम-सम्मान प्राप्त करय मुदा ओ अपना बेटाके मजूर बनबाक लेल अग्रसर होइत देखि दुखित छल, समझाबय लागल—'बौआ रौ, तोँ घरक चिन्ता-फिकीर नहि कर, करजा हइक' त' आइ नहि काल्हि सधिए जेतै। एमकी हम घुरिया गेली तँइ किने, नहि त' गुजरात जाक' एक-एक पाइ सधा दितियै, हम तोरा लास्टो-लास्ट एतबे कहबौ कि अखनि पढ़-लिख, खेल-कूद, ओनाहितो तोरा अखनि कमायके उमेर नहि भेलौ ग'। जहिया उमेर होतउ आ एम्हर नहि कुछ होतोउ, तहिया मजदूरी करय लगिहे, अखनि नहि अगुतो।'

खजौलीबाली सेहो समझौलक—'बौआ हौ, गरीब घरमे जनम लेने छह त' आइ नहि काल्हि कमाहि पड़तह लेकिन जाबे तक बाप कमाइ ह'

क', ताबे तक पढ़ि-लिखि ल'। जिनगीमे ई पछताबा नहि रहतह कि हमर बाप हमरा नहि पढ़य-लिखय देलक।'

निरिया थाड़ीमे खैक निकालिक' टुन्नूक आगू राखि देने छलै। ओ पहिल कौर उठबैत मायस' कहलक—'तोँ सभ नहि बूझै छहीक', मारि करजा हौउक', तीन हजारस' बेसी महीनाके सूदिए चलै हौउक' आ बाबू फेर अगिले साल गुजरात जेतौ, ताबे तक पाइ बैठिले नहि रहतौ, डेढ़-दुगुना भ' जेतौ आ आइ नहि काल्हि हमरा कमाहिके हइक' त' कएला नहि हम अखनेसे कमाउ जे एकाएक एके बेर भार नहि पड़त।'

सुक्खू अन्तिम कोशिश कएलक—'बौआ रौ, जिनगी भरि हम मजूरी केली, हमर बाप-दादा सेहो सभदिन मजदूरीए कएलक मुदा जखनि नीक-नीक लोक सभ हमरा लग तोहर बड़ाइ करैत रहै छलौ ग' त' हमरा बूझाइत रहै छल जे हमर बेटा कम-स'-कम हमरा खनदानके नाम जरूर उच्च करत लेकिन आब तहूँ कहै छहीक' जे हम मजूरीए करब, लेकिन एगो बातके हमर तो गिट्ठह पाड़ि ले, मजूरी कर' लगबे त' फेर तोरा बुते कुछ नहि करल पार लगतौ।'

टुन्नू ई गप पहिनहिस' बूझै छल कि हम मजदूरी करय लागब त' फेर हमरा बुते किछु नहि करल पार लागत, मुदा ओकरा दोसरो विकल्प कहाँ कोनो देखाइत छलै! ओ हीया पर पाथर राखि मजदूर बनबाक निर्णय लेने छल मुदा बापक गप एकबेर फेरस' ओकरा भावुक बनाक' राखि देने छलै। ओ अपन टूटैत सपनाक कल्पना करय लागल। ओहि कल्पनामे कॉपी-किताब-पेन नहि छलै, बैट-बॉल, विकेट नहि छलै आ ने यार-दोस्तक संग एकतारा हाइ स्कूलक फिल्डमे खेलय-कुदयके आजादी छलै। ओहि कल्पनामे छलै तँ मात्र माथ पर ईंटा, हाथमे कोदारि, मालिकक उपेक्षास' भरल अपशब्द आ गुलामी!

मारि-पीटिस' लोकके दैहिक कष्ट होइत छै, अपमान-अनादर आ तिरस्कारस' लोकके मानसिक पीड़ा पहुँचैत छै मुदा टूटैत सपना, चकनाचूर होइत खवाब आ आशाक प्रतिकुल परिणाम, एकदम सोझे-सोझ अन्तर्मनके व्यथित क' क' राखि दैत छै। ओ वेदनास' भरल स्वरमे बापस' कहय लागल—'त' तो हमरा की कह' चाहै छहक कि हम जिनगी भरि मजूरी करैत रही आ तोँ सभ दिन बबुआनी करैत घुमैत-फिरैत रह' मुदा हमहुँ आब

सियान भेली, हमरो अपन बुद्धि-विवेक हैक', आब हमरा बुते नहि देखल जाइ हैक' तोहर आ मायके दुख-तकलीफ, तोँ दुनू खेते-खेते बोनि करह आ हम रइसक बेटा जकाँ कन्हा पर बैट ल' क' अइ गामस' ओइ गाम घुमैत रहू से आब हमरा नहि बर्दाश्त होइ हैक'।' टुन्नू बजिते-बजिते हुँचकि-हुँचकिक' कानय लागल। टुन्नूके कानैत देखि खजौलीओबालीके गरा-बकोर लागि गेल छलै। ओ अपन आँचरक कोरस' बेटाक आँखि पोछैत भर्राएल आवाजमे कहलक—'बौआ हौ, खाय कालमे लोक नहि कानै हइक', चुप भ' क' खा लू, अहाँके कमाहि जाइके हैक' तँ चलि जाउ, हमसभ नहि रोकब मुदा अखनि पढ़ौनी नहि छोड़ू, कमाइतो-खटाइतो पढ़िते रहब।'

टुन्नूक कानब सुनिक' दुनू बहिन आ नानी सेहो आबिक' टुन्नू लग ठाढ़ भ' गेल छल। बूढ़ी अपना दामादके समझाबय लागल—'छोड़ि देथिन, बुझनुक हइक', तबे ने माय-बापक फिरिसानी बूझै हइक'। आइ-काल्हिक बेटा सभ त' माय-बापके खढ़ो भरि नहि गुदानै हइक', भगवानस' कहथिन जे आँग-समाँग देने रहथिन, नहि नोकरी-चाकरी होतय तँ बोनि-बुत्ता क' क' अपन गुजर क' लेतै।'

टुन्नूक गप सुक्खूके सेहो भावुक क' देने छलै मुदा ओ अपन पुरुषार्थक बल पर नोरके आँखि धरि नहि आबय देलक। खा-पीक' उठि गेल आ चुपचाप भारी मोनस' काम पर जाइ लेल अँगनास' विदाह भ' गेल।

टुन्नू चुप भ' क' एखन खाइए रहल छल कि मन्तोष महतो गहबरक आगू मोटरसाइकिल ठाढ़ क' क' आवाज दिअ लागल—'चल' न हौउ टुन्नू, आब अबेर होइ ह' क'।'

निरिया मन्तोष महतोक आवाज सुनिक' आँगनस' बाहर आएल आ ओकरास' कहलक—'कनिके देर रूकह न, भैया खाइ हइक'।'

मन्तोष ओतय मोटरसाइकिल पर बैसैत बाजल—'अखनि खेबो नहि केलकौ ग'।'

किछुए देरमे टुन्नू खाक' अँगनास' बाहर आएल त' मन्तोष ओकरा मोटरसाइकिल पर बैसाक' काम करय लेल चलि गेल।

टुन्नू बच्चेस' ओतेक सुकमार नहि छल। मजूरक बेटा रहलाक कारणे ओ समय-समय पर माय-बापक संग धान-गहूम काटिक' बोझ-पाँज ढो लैत छल, बाप जे गिरहतके खेती बँटाइ करै छलै, ताहूमे ओ कोदारिस' आरि-कोन

बनाक' रोपनी-डोभनी क' लैत छल मुदा ओहि काममे आ एहि काममे जमीन-आसमानक अन्तर छलै। ओ ओकर अपन काज रहय छलै, जखन मोन होइ छलै त' करै छल आ जखन थाकि जाइत छल त' काम छोड़िक' आराम क' लै छल मुदा एतय मन्तोष महतो ओकरा कोल्हुक बैल जकाँ आठ-दस घंटा जोतनहि रहै छल। शुरू-शुरूमे दू-चारि दिन ओकरा बड़ कष्ट भेलै, हाथमे फोका सभ अलगि गेलै, चौबीसो घंटा देह-हाथमे दर्द रहय लगलै मुदा मजदूरी करबाक लेल ओ पहिनहिस' अपन मोनके मजगूत क' लेने छल। हारि नहि मानलक आ फेर धीरे-धीरे अभ्यस्त भ' गेल।

हालाँकि पूर्णरूपेण मजदूर भेलाक बादो टुन्नूके क्रिकेटस' मोह नहि भंग भेल छलै। ओ एखनो धरि अपन टीमक महत्वपूर्ण मैच रहै छलै त' मन्तोष महतोस' छुट्टी माँगिक' खेलाइ लेल चलिए जाइ छल। कहिओकाल कियो पाइ पर बोरो बनिक' खेलय लेल कहै छलै, त' ओ मन्तोषके खुशामदो क' क' कामस' अनुपस्थित भइए जाइत छल। हँ, रोजक-रोज हाइ स्कूलक फिल्डमे जे ओ खेलक अभ्यास करै छल से आब अबस्स छूटि गेल रहै मुदा ओहिस' ओकर खेल एखनो धरि जे चाही से प्रभावित नहि भेल छलै। हँ, मजूरी करबास' ओकर पढ़ाइ-लिखाइ जरूरी प्रभावित भेल छलै। आब ओ जेना पढ़ाइ-लिखाइस' एकदम साफे संन्यास ल' लेने छल, तहिना किताब-कॉपी कहिओ नहि छूबैत छल।

सात

मिथिलामे पलायन प्रमुख समस्या अछि जे बाल-बच्चा, परिवारक संग सरकारी चाकरी करैत अछि आकि जे उच्च दरमाहा पर बहु-बेटी परिवारक संग बड़का-बड़का कम्पनीमे देश-परदेश खटैत अछि, ओकर जिनगी मिथिलाक यायावर मजूरक अपेक्षा बहुत हद तक ठीक होइ छै, किएक त' ओकरा भाड़े पर सही मुदा नीक आवास मिलि जाइ छै, जाहिस' परदेशोमे एगो समाज आ सोसाइटी बनि जाइ छै। अड़ोसी-पड़ोसीस' नीक लगाव आ खान-पीअनबला व्यवहार बनि जाइ छै, हालाँकि हम ई नहि कहै छी जे ओकरा अपन लोक, अपन गाम-समाज आकि अपन मातृभूमिस' विछोहक गम नहि होइ छै। ओकरो अपन मातृभूमिक यादि ओतबे तड़पाबैत छै, जतेक कि एगो यायावर मजूरके तड़पाबै छै, मुदा ओकरा संग बाल-बच्चा, परिवार रहै छै, जकर मुँह देखिक' सबूर आ सन्तोष भ' जाइ छै मुदा यायावर मजूर सभ ककरा देखिक' सबूर आ सन्तोष करत! बेचारा एक तँ भीड़गर काम, दोसर अपमानित बिहारीक उपनाम आ तैपर नहि खाय-पीअय, रहयके कोनो ठौर-ठिकान! हिन्दीक प्रसिद्ध फिल्म मदर इण्डियाक ओ मशहुर गीत— 'दुनिया में आये हैं तो जीना ही पड़ेगा, जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा', ओकरा सभ पर बिल्कुल फिट बैठै छै।

ओ सभ अपनो घरमे मेहमान होइ छै। छह महीना, साल भरि पर महीना-पनरह दिन लेल घर आबै छै आ फेर मिथिलाक घर-आँगन, दुअरा-दलानके सुन्न क' क' चलि जाइ छै।

एहिबेर फगुआ खेलाइ लेल असियाक मेहमान एक महीनाक छुट्टी ल' क' घर आएल छल। असिया आसिनमे जे मायक ऑपरेशनमे बिचखाना आएल रहय त' एक-डेढ़ महीना रहिक' फेर सासुर चलि गेल रहय। खजौलीबालीक हार्दिक इच्छा रहै कि बेटीके पहिल जनमासुत बिचखानामे होइ से ओ असियाक साउसके फोन क' क' कतेको दिन अपन इच्छाके व्यक्तो कएने छलै। आइयो साँझमे जखन टुन्नू काम परस' घर आएल त' खजौलीबाली कहलक—'बौआ हौ, दीदीके फोन धरबहक त', कहै छियैक'

मेहमानके ल' क' फगुआमे एतय चलि आ।'

टुन्नूआ फोन धराक' मायके द' देलक। फोन उठलै त' खजौलीबाली—'हलो' कहलक आ असिया 'माय गोड़ लगै छियौक' बाजल। फेर खजौलीबाली आशीर्वाद दैत बाजल—'नीके रह, भगवान दुनू परानीके आँग-समाँग देने रहौक आ नीके-नीके उबरास क' दौक, ठीकस' छेँ किने बौआ?'

—'हँ, नीक छी, तोँ सभ ठीक छेँ किने?'

—'हँ हौउ, हमहुँ सभ ठीके छीक', मेहमान आ घरक लोक सभ नीक ह' किने?'

—'हँ, सभ कोइ ठीक हइक'।'

—'बौआ गै, फोन केलिऔ ग' जे मेहमान आ तोँ फगुआमे बिचखने चलि आब' न!'

असिया अपन विवशता कहलक—'गै, हम अपने मने केना अबियौ, माय-बाबू जाइ देथिन तबे ने एबौ।'

खजौलीबाली रुआबस' बाजल—'कत' हौउ समधिनी, दिही त' फोन, हम कहै छियैक'।'

अँगनेमे साउस रहै, असिया चुल्ही लगस' उठिक' साउसके फोन दैत कहलक—'हइय लेथिन फोन, हमर माय बतियेतनि।' असियाक साउस फोन लैत 'हलो' कहलक त' खजौलीबाली समाचार पूछय लागल—'समधिनी, ठीक छथिन?'

असियाक साउस बाजल—'हँ समधिनी, ठिके छियै, समधी आ बाल-बच्चा सभ ठीक छनि किने?'

—हँ, सभ ठीके हइक', कहलिएनि ग' मेहमान आ असियाके फगुआमे बिचखाना आबय देथिन न!'

असियाक साउस अपन विवशता सुनबैत मना कएलक—'नहि समधिनी, अखनि नहि बजबथिन। हिनका त' छोटकी बौआ हनि, खैक-पानि बना लै हनि, हमर त' दुनू बेटी ससुरा रहै हइक' आ हमरा चुल्हा-चौका छोड़ला आब बेसी दिन भ' गेल हइक' से चुल्ही लग बैठेक' एको रत्ती मोन नहि करै हैक', कनियाँ चलि जाइ हइक' त' हमरे बड़ परेशानी बढ़ि जाइ हैक'।'

खजौलीबाली उपाय बतौलक—'इहो छोटकी बौआ मंजूके बजा

लौथ, असिया दिया कहथिन जे दुजीवा जान छलै, ओकर माय-बाप नहि मानलकै, जबर्दस्ती ल' क' चलि गेलै।'

असियाक साउस सशंकित भ' बाजल—'ई कहै छथिन किने समधिनी, लेकिन हमरा नहि बुझाइ हैक' हमरा मंजूके ओकर साउस-ससुर आबय देतै!'

खजौलीबाली अधिकारक संग बाजल, 'किएक नहि आबय देतै, बेटी नहिरा-ससुरा जवानीमे नहि करतै त' कि बुढ़ारीमे कतरतै ग'! आब हमरे हिनका कतबो भाइ-भउजाइ कहतनि कि आबिक' भेंट क' जाइ लेल त' जल्दी पार लगतनि! सभ चीजक एगो समय होइ हइक', अखनि धिया-पूता सभके समय हइक', नहि रोकथिन, आबय देथिन।'

असियाक साउस बात खेपलक—'अच्छा, अबै छनि समधी त' कहै छियैक'।'

खजौलीबाली स्त्री विमर्श ठाढ़ केलक—'समधिनी, मौगी-मुड़ारिके बात मौगीए-मुड़ारि बुझतै कि मरद बुझतै जे समधी पर खेपै छथिन, ई नहि बूझै छथिन जे बेटीके पहिला जनमासुत नहिरामे होइ हइक'!'

असियाक साउस अपन सफाइ देलक—'समधिनी, हम सभ बूझै छियैक', तैयो घरक मालिकस' पूछ' पड़तै किने आ अखनि समयो कहाँ पुरलै ग', बैसाख लगारि समय पूरै हइक'।'

—'ताहि लेल त' कहै छियनि जे आबय देथिन, अखनि दू महीना हइक', दू महीनामे एत' कुछ आरामो क' लेतै।'

असियाक साउस हँसैत बाजल—'आ एत' दिया कि कहै हनि बेटी जे बड़ काम कर' पड़ै हैक'!'

खजौलीबाली गम्भीर भ' कहय लागल—'से आइ तक हमरा कहिओ नहि कहलक ग'। ऊ त' आउर हिनकर बड़ाइए करैत रहै हनि, कहैत रहै हनि जे घरक काम-धन्धा रहै हइ से करै छी नहि त' अँगने-घरमे सुतल-बैठल रहै छीक'। हमर साउस आइ तक हमरा कहिओ बाध-बोन जाइ लेल नहि कहलक ग'।'

अपन बड़ाइ सुनि असियाक साउस गौरवान्वित भ' बाजल—'बाध-बोनक काज करै लेल हम असगरे काफी छीक' समधिनी, ओना हम ई नहि कहै छियनि कि हम बड़ भारी तलेबरके बहु-बेटी छीक', अपना

पुतोहुके कहिओ नहि घरस' निकल' देबै, आइ नहि त' काल्हि बाध-बोन जाहि पड़तै लेकिन जाबे तक निमहै हैक', ताबे तक निमाहै छीक'।'

खजौलीबाली समधिनीक मोन पाबि सोझाँ-सोझी पुछलक—'त' असियाके कहिआ आबय देथिन समधिनी?'

असियाक साउस पुछलक—'आब फगुआके कएगो दिन रहि गेलै ग' से?'

खजौबाली जेना पहिनहिस' दिन जोड़िक' रखने छल, तहिना चट द' बाजल—'पाँचम दिन फगुआ हइक'।'

—'अच्छा, त' परसू होतनि तँ भेजि देबनि।'

आश्वासन मिललाक बाद खजौलीबाली समधिनीस' कहलक—'समधीनी, आब असियाके फोन देथिन, ओकरोस' दू गो बात बतिया लै छियैक'।'

असियाक साउस असियाके सोर पाड़ैत कहलक—'लिअ यै कनियाँ, हइय' मायस' बतिया लियौ।'

असिया एखनो चुल्ही लग बैसल खेनाइ बनाइए रहल छल। उठिक' अँगना आएल आ साउसक हाथस' मोबाइल ल' क' कानमे सटबैत पुछलक—'की कहै छेँ माय?'

खजौलीबाली खुश होइत बाजल—'साउस कहलखुन ग' परसू जाइ देबै, मेहमानके संग क' क' चलि अबिहे, आब हम फोन रखै छियौक'।'

असियो खुश भ' क' बाजल—'अच्छा, राखि दिही, परसू हम चलि एबौ' आ फोन काटि देलक।

आठ

होलीक चलते राजमिस्त्री सभ दू दिन पहिनहिस' काम बन्न क' देने छल। सुक्खू दुनू बाप-पूते एखन घरे पर रहै छल। एम्हर सम्मन जरैस' एक दिन पहिने असिया दुनू परानी सेहो बिचखाना चलि आएल छल। कुल मिलाक' फगुआक मदमस्त महीनामे खजौलीबालीक बाल-बच्चास' भरल-पूरल अँगना बड़ नीक लागि रहल छल।

बिचखानामे मात्र सोलह घर पासवान छल आ ओहि सोलहो घरमे ककरो कियो दर-दियाद नहि छल, मुदा आपसी मेल-जोल एतेक कि कियो बाहरबला अनुमान नहि लगा सकैत छल जे ई सभ अलग-अलग परिवार छै। फगुआ दिन दुपहरमे भरि टोलक युवती आ बाल-बुतरू सभ खजौलीबालीक अँगनामे धम्मगज्जर मचौने छल। शुरूमे त' खजौलीबाली किछु देर दामादके बचाबयके बहुत कोशिश कएलक। दामादके गोसाँइबला घरमे बन्न क' क' अपने केबारी लग बैसि पहरेदारी करैत रंग-अबीर खेलयबाली सभके ई कहि समझाबैत रहल जे 'मेहमानके रंग-अबीर नहि पचै हइक', रंगस' हिनका मोन खराब भ' जाइ हइक', छोड़ि दै जाही।'

एम्हर युवती आ बाल-बुतरू टोलीक नेतृत्व निरिया क' रहल छल। ओ टोलीके ललकारैत बाजल—'नहि, झूठ कहै हौउक'। ऊ फगुए खेल' लेल राजस्थानस' 'छुट्टी ल' क' आएल हइक' आ ताहूमे ससुरारि, एकरा बिनु कोइ रंग-अबीर लगौने चलि गेलै त' बूझ जे हारि मानि गेल।'

टोलीक सदस्य सभ पर ललकाराक असरि पड़लै। एगो आठ-दस बर्खक बुच्ची खजौलीएबाली पर एक लोटा रंग ढारिक' हँसैत बाजल—'होरी है भाई, होरी है, बुरा न मानो होरी है।' पाछू लागल टोलीक सदस्य सभ सेहो हँसैत बाजल—'बुरा न मानो होरी है' आ खजौलीबाली ठाढ़ भ' क' नुआ झाड़ैत गोधनाक' बाजल—'ई झटकिया बेटी त' आउर नहि कोनो लूड़ि-ढंगके हइक', देखही त' केना हमरा पर एक लोटा रंग ढारि देलक, कनिको बुझलकै जे काकी होत!'

कुसुम जातिक मलाहिन छल। निरियाक प्रिय सखी आ दुनू एकहि क्लासमे पढ़ितो छल। ओ खजौलीबालीके खिसियाबै लेल बाजल—'जीजा-साली

के बीच में जो आयेगा...' आ कुसुमक अधूरा वाक्यके पूरा कएलक टोलीक सदस्य सभ, 'चूर-चूर हो जाएगा।'

खजौलीबाली कुसुम पर खिसियाइत बाजल—'तोँ सभ त' आउर बाप-भाइके नाक-कान कटेबही।' टोली खजौलीबालीक गपक कनिको खराब नहि मानैत पिहकारी पाड़ैत जोरस' बाजल—'होरी है भाई होरी है, बुरा न मानो होरी है।'

निरिया मायके समझाबैत कहलक—'तोँ धिया-पूताक बीचमे एत' की करै छहीक', जो न एत'से।'

खजौलीबाली आँगनस' बाहर निकलैत बाजल—'हँ गै, खेल-बेल दाइ के आ नाम भौजाइ के करै छेँ, ओहि छौंड़ीके चस्काक' हमरा एक लोटा रंग ढरबा देलें ग' आ आब सतबरती बनै छेँ क'।'

मायके जाइते निरिया केबारीक जंजीर खोलिक' धकेललक त' केबारी भीतरस' सेहो बन्न रहै। ओ युवती सभस' कहलक—'गै डरपोकहा बिलैया लगा लेने हौउक'। आ फेर केबारी पीटैत मेहमानस' कहय लागल—'हय केबारी खोलू ने यौ, रंग-अबीरस' लोक एते कहूँ डेरेलै ग', तयमे फगुआ खेलय लेल छुट्टीए ल' क' आएल हैक'।'

मेहमान कोनो आन ठामक नहि छलाह, हुनको घर मिथिलेमे छलनि आ मिथिलाक गाम-घरमे पाहुन सभके फगुआमे केहन दुर्दशा होइत छै से हुनका नीक जकाँ बूझल छलनि। बाहरस' निरियाक सखी-सहेली सभ एकस' बढ़िक' एक शब्दक विषवान चला रहल छल। कियो हुनका मौगियहबा कहि रहल छलनि त' कियो घरघुसना आ कियो मनभौका उपनाम राखि हल्ला क' रहल छल आ ओ कान पर ढेला धेने गबदी मारने सभ सुनि रहल छलाह।

जखनि निरिया आ ओकर सखी-सहेलीक बहुत प्रयासक बादो मेहमान केबारी नहि खोललक त' सभ थाकि-हारिक' असियास' सहयोग माँगय लागल आ असिया एकटा योजना बनाक' ओकरा सभके ओतय असोरा पर दस मिनट धरि चुपचाप शान्त रहय लेल कहलक आ फेर दस मिनट पछाति केबारी धकलैत मेहमानस' कहलक—'खोलू न यौ, आब कोइ नहि हैक', सभ चलि गेलै।'

मेहमान डेराइते घरक भीतरेस' बाजल—'आ निरिया कत' है, अँगनेमे कि उहो कतहु चलि गेल हैक'? वैहे सभसे बड़का विभीषण बनल हैक'।'

असिया फूसि बाजल—'ऊहो सहेली सभके संग रंग-अबीर खेल' लेल चलि गेल हैक'।'

मेहमान असियाक रचल चक्रव्यूमे फँसिक' जखने केबारी खोललक, तखने निरिया आ ओकर सखी-सहेली सभ जबर्दस्ती घरमे घुसिक' रंग-अबीरस' हुनका सराबोर क' देलक आ जे थोड़-बहुत कोर-कसरि रहि गेल रहै से कने देरमे टुन्नूआक दोस्त सभ आबिक' पूरा क' देलक। मेहमान फगुआमे ससुरारि आबिक' मोनहि मोन पछता रहल छलाह। असियाक विश्वासघात पर खिसिआ रहल छलाह लेकिन ओहि खींसमे आक्रोश आ आवेशस' बेसी प्रेम आ सिनेह छलै।

मन्तोष महतो खाय-पीअयबला लोक छल। फगुआ बितला दू दिन भ' गेल छलै मुदा एखनो धरि ओकर खुमारी नहि उतरल छलै। एम्हर काम बन्न रहबाक कारणे टुन्नूके बेसी समय मेहमानक संग बितैत छलै। आइओ ओ बेरू पहर दुनू सार-बहनोइ नाश्ता-पानि करय लेल एकतारा चौक पर गेल छल। नाश्ता-पानी क' क' टेम पास करबाक लेल टुन्नू आ मेहमान ओतहि हाट पर एकान्त जगह ताकिक' दूभि पर बैसि गेल आ बातचीत करय लागल। बातेचीतक क्रममे टुन्नू अपन मोनक गप मेहमानस' कहलक—'जीजाजी, बाबूके मारि करजा भ' गेल हइक', घर पर दुनू बापुते रोजे कमाइ छियै, तइयो महीना भरिक सूदि नहि पूरै हइक' आ ओनाहितो आब बाबूके बाहर कमाइबला उमेर नहि रहलै तँइ हमर विचार हैक' जे हमहीं अहाँके संग कमाइ लेल राजस्थान चली आ बाबूके घरे पर रह' दियै। ऊ घर पर रहतै त' थोड़-बहुत कमाइओ लेतै आ अटाइ-बँटाइ खेती क' क' साल भरिक खेराकिओ जुटा लेतै।'

खजौलीबाली दामादके अक्सरहेँ समझाबैत रहै छल—'मेहमान, बाहरमे बड़ खतरा रहै हइक'। कुछ पूँजी जमा क' क' छोट-छीन धन्धा क' लौथ, नहि त' बँटाइ पर किछु खेत ल' क' उपजाबौथ लेकिन बाहर नहि जौथ।' वैह बात मेहमानके यादि एलै त' टुन्नूस' कहलक—'माय तँ बाहर जाइस' हमरो मना करैत रहै छथिन त' अहाँके केना बाहर कमाय लेल जाइ देत! ओना अहाँके विचार खराब नहि हैक' लेकिन हमर विचार हैक' अखनि अहाँ पढ़ाइ पर धिआन दिऔ, करजा त' आइ ने काल्हि सधिए जायत लेकिन पढ़ै-लिखैक उमेर फेर दोहराक' नहि आओत। पढ़ै-लिखैमे पाइ-कौड़ीक

दिक्कति होइ हैक' त' हमरो कहब, हमहुँ सम्हारि देब लेकिन पढ़ाइ-लिखाइ नहि छोड़ू।'

टुन्नू अपन कमजोरी बुझै छल। मेहमानस' कहलक—'नहि जीजाजी, आब हमरा बुते नहि होतै पढ़ल-लिखल। शुरूएस' हम क्रिकेटक पाछू पढ़ाइ-लिखाइ पर ओतेक धिआन नहि देलिए से पढ़ै-लिखैमे भुसकौल भ' गेल छीक'। खींचि-तीरिक' कहुना हम मैट्रिक पास केली ग'। आब आगू पढ़ैके हमरा हिम्मति नहि होइ हैक'।'

मेहमान सशंकित होइत बाजल—'जे काम करैके हिम्मति नहि हुए तकरा छोड़िए देबाक चाही, लेकिन हमरा नहि विश्वास होइ हैक' जे माय अहाँके बाहर जाइ देत!'

टुन्नू अगुताइत बाजल—'एकबेर नीकस' समझा-बूझाक' कहबै आ तैयो नहि मानतै त' घरसे भागिए जेबै।'

मेहमान बदनामीस' डेराइत बाजल—'तब त' माय-बाबूके नजरिमे अहाँ हमरा गिरा देब। माय-बाबू कहथिन टुन्नूके मेहमाने बहराके लोभ-लालच देखैने होतै, ताहि दुआरे घरस' भागि गेलै।'

टुन्नू, मेहमानस' खरिआरिक' पुछलक—'आ माय-बाबूके हम कहुना मना लेबै त' अहाँ अपना संगे ल' चलब किने?'

मेहमान टुन्नूके गारि पढ़ैत कहलक—'दूर बँहि, हम कोनो अहाँके ल' जायस' एकोबेर मना केली ग' जे अहाँ कहै छियैक' 'ल' चलब किने'। हम त' अहीं दुआरे कहै छीक' जे माय-बाबूजीस' पूछि लेबै त' अहूँ लेल नीक रहत आ हमहुँ बदनामीस' बाँचल रहब।'

—'अच्छा, नहि होइ हइ त' आइ रातिमे हम माय-बाबूस' बात करै छियैक', लेकिन अहूँ कने माय-बाबूके बूझेबै-समझेबै।' फेर अचक्के टुन्नूके किछु मोन पड़लै त' मेहमान किछु ओकरा जवाब दितै ताहिस' पहिनहि मेहमानस' पुछलक—'आ जीजाजी, अहाँ बाहर कहिया जेबै?'

मेहमान दिन गिनैत बाजल—'आइ अठारह तारीख भ' गेल, उनतीस-तीसके हम एत'स' चलबै आ एक तारीखके हम काम पकड़ि लेबै।'

टुन्नू खरिआरिक' पुछलक—'एत'स' जेबै कि भकुआस'?'

मेहमान टुन्नूके साफ-साफ कहलक—'जदि अहाँके जाइ दिअ लेल माय-बाबू तैयार भ' जायत त' हम दू दिन अगाते एत' चलि आएब, नहि

त' फेर हम भकुएस' चलि जायब।'

फेर थोड़ेक देर तक टुन्नू, केहन काम हइ, कतेक महीना देतै, खा-पीक' कतेक बँचि जेतै आदि अनेक तरहक प्रश्न अपना जीजास' पूछैत रहल आ ओकर जीजा ओकरा जवाब दैत रहल। जखन बेर डूबय लगलै, तखन टुन्नू जीजाके संग क' क' घर लेल विदाह भ' गेल।

रातिमे जखन सभकियो खा-पी लेलक त' टुन्नूआ माय-बापक समक्ष बाहर जाइबला गपके रखलक। बाप जतेक टुन्नू सोचैत छल, ओतेक विरोध नहि कएलकै कियैक कि ओ बूझैत छलै जे पढ़ाइ-लिखाइ आ क्रिकेट, मात्र दूगोमे एकर भविष्य छलै आ वर्तमानमे ई पढ़ाइ-लिखाइ साफे छोड़िए देने छै आ क्रिकेट सेहो आब तेरहे-बाइस खेलाइत छै त' फेर एकरा घर पर रहने फायदे कोन छै आ ओनाहितो घर पर रहलास' गुजर नहि होइबला छै, मुदा माय साफ-साफ मना क' देलक—'नहि बहरा एकदम नहि जो, कतेक नीक राजमिस्त्री जरे खटै छेँ, खटैत रह, बाहर गैने एकहि बेर तलेवर नहि भ' जेबे।' एम्हर टुन्नूओ जिद्द पकड़ने छल, मायके डराबैत-धमकाबैत बाजल—'अखनि कहै छियौक', जीजाजी जाइ हइक' जाइ दे त' नहि जाइ दै छै' क' आ बादमे घरसे असगरबे भागिक' दिल्ली-पनिजाब चलि जेबौ त' पछतेबे।' खजौलीबाली विवश भ' क' अन्ततः टुन्नूके बाहर भेजै लेल राजी भ' गेल।

नौ

आधा बैसाख बीति गेल छलै। रातिक आठ-साढ़े आठ बजैत होतै। गरमी-गुमारस' लोकक हालति खराब छलै। हँ, एगो राहत जरूर छलै कि जहियास' बिजली विभागक अर्द्ध सरकारीकरण भेल छलै, चौबीस घंटामे अठारह-बीस घंटा बिजली रहै छलै लेकिन भरि दिनक प्रचण्ड रौदक कारण पंखास' आधा राति धरि लूबला गरम हवा निकलैत रहै छलै। दुसधटोली त' मजूरक टोल छलैहे, भरि दुसधटोलीमे ककरो घरमे कूलरबला पंखा नहि छलै। सभ छतबला पंखा आ स्टैण्डबला पंखा लग अपना-अपना अँगना-घरमे बाले-बच्चे बैसल मजबूरीमे गरमे हवा देहमे लगा रहल छल। रामकृपालके मात्र दू कोठलीक पक्का मकान छलै। बेटा-बेटी घरमे पलंग पर पढ़ि रहल छलै आ अपने मारि खड़खड़ाइत पुरनका स्टैण्डबला पंखा चलाक' बरामदा परहक चौकी पर औंघराएल छल कि अचानक भनसाबला घरस' राँटीबाली धड़फड़ाएल आएल आ हड़बड़ाइत बाजल—'यौ बन्न करू न अइ खटाराके, कतहु के कोनो आवाज नहि सुन' दै हइक', जानि नहि टुन्नूआ घरमे की भेलै ग' की नहि, मारि कन्नारोहटि होइ हइक'।'

रामकृपाल सेहो धड़फड़ाक' उठल आ चेहाइत बाजल—'की भेलै!' मुदा ताधरि राँटीबाली ओत'स' दौड़ि गेल छल, पाछू-पाछू रामकृपाल सेहो बाले-बच्चे दौड़ल।'

टुन्नूआ अँगनामे हृदयविदारक दृश्य छल, खजौलीबाली छाती पीटैत बफारि काटि रहल छल—'रौ बाप रौ बाप, आब केकरा देखिक' सबूर करबै रौ बेटा, हौ बेइमनमा दैब, अछैत बेटा निपुत्तर बना देल' हौ बेइमनमा दैब, हौ गाम-समाजक लोक सभ हमरा मरलो बेटाके मुँह देखा दै जाय जा हौ, गाम-समाज लोक सभ!' आ फेर टुन्नूआके यादि पाड़ैत वियोग ध' क' दारुण विलाप करय लगैत छल— 'बड़ मना केलियै, बहरा नहि जो, गामेमे भीख-दुख माँगि गुजर क' लेबे, नहिए मानलकै, चलिए गेले रौ बेटा, रौ बेटा अह-ह-ह-ह'!' दुनू बहिनोके सेहो वैह हालति छलै—'भाइ रौ भाइ, कत' चलि गेलें रौ भाइ, आब हम दुनू बहिन केकरा हाथमे राखी बान्हब रौ भाइ,

हौ भैया हौ भैया, आब लोक सभ केकरा कहतै बौआबम हौ भैया, आब के हमरा अपन कमेलहा पाइ से सलवार-समीज कीनि देतै हौ भइया, हौ एकबेर अपन मुँह देखा जा न हौ हमर बड़का भैया!' आ फेर तीनू मायधिन बफारि कटिते-कटिते बेहोश भ' जाइत छल। भरि टोलक जनिजाति मिलिक' तीनू माय-बेटीके सम्हारिक' होशमे लाबैत छल आ फेर होशमे अबिते बफारि काटैत-काटैत दाँती लागि जाइत छलै।

बापके त' जेना सुधि-बुधि हरा गेल छलै तहिना नहि आँखिमे मिसिओ भरि नोर आ ने मुँह पर बेटाक मृत्युक शोक, एकदमस' माटिक मूर्ति जकाँ एकटक लगौने लोकसभके निहारि रहल छल। ओकर ई हालति देखिक' रामकृपालके शंका भेलै जे ओ एकाएक बेटाक मृत्युक खबरि सुनि कहीं पक्षाघातक शिकार त' नहि भ' गेलै! ओ ओकर बाँहि पकड़िक' झमारैत कहलक—'सुक्खू भाइ...यौ सुक्खू भाइ!' ओ किछु आर कहितय ताहिस' पहिने सुक्खूक चेतना जागृत भ' गेलै आ ओ ठोहि पाड़िक' कानय लागल।

सुक्खूके ओना भ' कानैत देखि रामकृपालके धैर्य नहि रहलै। ओ सुक्खूके पाँजमे भरिक' आर्त्त भावस' कहलक—'भाइ, विधिक विधान हम-अहाँ नहि बदलि सकै छियैक', ओकरा एहि धरती पर एतबे दिनक सुख-भोग लिखल छलै। आब अहाँ कनैत-कनैत मरिओ जाएब तैयो ओ घुरिक' नहि आओत, सबूर करहि पड़त।'

—'हौ केकरा देखिक' सबूर करू, एकेगो त' बेटा छल, उहो बेइमान छोड़िक' चलि गेल, निपुत्तर भ' गेली हम, आब हम केकरा लेल जीअब, हमहुँ मरि जायब।'

रामकृपाल ढाढ़स दैत बाजल—'भाइ, जीबय पड़त, एखनो एगो कुमारि बेटी हैक', अहाँ दुनू परानीके जे कुछ भ' जायत त' ओहि बेचारीके के देखतै!'

रामकृपालक गप सुनि ओ आर्त्त विलाप करैत अपन व्यथा कहय लागल—'माय बड़ मना कएने रहय बौआ रौ, नहि जो परदेश, हमहुँ बड़ कहलियै, पढ़-लिख लेकिन कएला मानत हमरा दुनूक बात! दीदी बियाहक आ मायक अपरेशनबला करजा अखनि रखले ह' क', फेर निरियाके बियाह करयके ह' से अलगे, घरमे पाइ-कौड़ीके सदिखन अभाव रहै हैक' आ तहूँ भरि दिन गिरहत खेतमे बोनि करैत रहै छह, आब हमरा नहि देखल जाइ

हैक'। हम राजस्थान कमाक' पाइ भेजि देब' आ तोँ एत' आरामस' घर चलबियह, उल्टे हमरे बुढ़बा जकाँ समझाब' लागै छल ग'।'

गामक एकटा प्रतिभाक मृत्यु भेल छलै। ई गाम-समाज लेल एगो बहुत पैघ घटना छलै। एहि दुखद घटनाक खबरि सुनिक' गामक स्त्रीगणस' पुरुष धरि बारहो-बरन एहि दुखद घड़ीमे दुखित परिवारके सांत्वना-सहानुभूति देबय लेल जुटि गेल छल मुदा सुक्खूक परिवारक हृदय-विदारक विलाप देखिक' जेना सभक सांत्वना-सहानुभूतिक शब्द पिघलिक' नोर बनि गेल छलै तहिना ककरो मुँहस' कोनो शब्द नहि बहराइत छलै। बस, सभकियो अपन-अपन आँखिस' बहैत झर-झर नोरके पोछैमे लागल छल। हँ, कियो-कियो हिम्मति जुटाक' एक-दूगो गप जरूर बाजि दैत छलै—'जुलम भ' गेलै, दूइओ टा बेटा रहितै त' एगो के मुइलाक बाद दोसराके देखिक' संतोष करितय, आब ककरा देखिक' सबूर करत बेचारा!'

—'टुन्नू खाली सुक्खूक बेटा भरि नहि छलै, ओ बिचखानाक हीरो छलै ग'। ओकरे चलते एहि दस कोसक परोपट्टामे बिचखानाक नाम चलै छलै ग', ओकरा मुइने बिचखानाके बड़ भारी छति भ' गेलै।'

भीड़मे सुक्खूक गिरहत लूटन पाँड़े सेहो उपस्थित छल। ओ सुक्खूके निठोहर भ' कानैत देखिक' बाजल—'अहा! एना नहि कर सुक्खू, सम्हार अपनाके, तोंही एना बताह भ' जेबही त' बेटी आउर परिवारके बोल-भरोस के देतौ, ओ सभ त' आउर कनैत-कनैत मरि जेतहु!'

एहि दारुण दुखक समयमे धीरज कोना राखैत बेचारा! हबोढेकार कानैत अपना गिरहतस' कहय लागल— 'अखनि त' एक महीना ओकरा गेले भेल छलै ग'। अहीं से ने किराया-भाड़ा लेल दू हजार रुपया ल' क' दुनू सारे-बहनोइके भेजने रहियै। पहुँचलाक बाद अगिले दिन ओकरा मेहमान काम पकड़ा देलकै। एक सप्ताह काम केने होतै त' एक दिन ऊ फोन पर हमरास' बतियालो रहै। कहैत रहै— बाबू हौ, बारह हजारक महीना पर मार्बल घिसाइबला फैक्टरीमे काम पकड़ि लेने छियै। मुदा एहि फैक्टरीमे चौबिसो घंटा धूरा-गरदा उड़ियाइते रहै हइ, से मुँह-नाक भरि जाइत रहै हइक'। दोसर, टंकीबला कइयेक दिनक जबकल पानि पिय' पड़ै हइ, से जोनरिस भ' गेल ग'। तइ लेल आइ कामो पर नै गेलियै ग', डेरेमे छियै क'! तइ पर हम कहनहुँ रहियै, ओतुक्का पानि नै सेट करै हउ त' घरे चलि आ,

एत्तहि इलाज करबा देबौ। मुदा हमर गप नै मानलक। कहलक जे एत्तहि खीरा-ककड़ी आ उखिकक रस खा-पीक' ठीक भ' जेबै। आइ पाँच-सात दिन होइ हइ क', मेहमान फोन केने रहथिन त' कहलखिन जे आइ टुन्नूके बोखार लागल हइक'। दबाइ दोकानबला से देखाक' तीन सय रुपैयाके दबाइ आनि देलियै ग'। तैपर माय कहनहुँ रहै जे जोनरिसमे बोखार लगनाइ बड़ खराब बात होइ हइक'। टुन्नूके घर पहुँचा देथिन। मुदा हुनका लग किराया-भाड़ा रहितै तबे ने ल' क' अबितथिन! कहलखिन चारि दिनमे महीना मिलि जाइ हैक' त' टुन्नूके घर पहुँचा देबनि नहि त' एतै कोनो नीक डाक्टरस' इलाज करबा देबै आ देखियौ छनेमे जे छनाक भ' गेलै!'

रामकृपाल आश्वस्त होबय लेल पुछलक—'भाइ, लहास कत' हइ, राजेस्थानमे?'

सुक्खू यथास्थितिमे जवाब दैत कहलक—'नहि हौ भाइ, बनारसमे हइक'। दुनू घर आबै लेल काल्हिए गाड़ी पकड़ि लेने रहै लेकिन बनारस पहुँचैस' पहिनहि बौआ कालक कालमे समा गेलै। आब रेलवेक सिपाही बौआके लहास संगे मेहमानोके पकड़ि लेने हइक', कहै हइ गामस' गवाही बोलाबय लेल, नहि त' मेहमानो के जेहलमे ध' देतै।'

सुक्खूक गप सुनिक' लोक सभ रामकृपालस' कहय लागल—'अहाँ टोल भरिमे बुझनुक आदमी छियै, दू-चारि आदमीके संग क' क' अहाँ बनारस जइयौ।'

विपत्तिक घड़ीमे ककरो संग देनाय रामकृपाल अपन कर्त्तव्य बुझैत छल। ओ सुक्खूके आश्वासन देलक—'भाइ, अहाँ ओतुका चिन्ता नहि करू, मेहमानके कुछ नहि होतै। हम तीन-चारि आदमीके ल' क' बनारस जाइ छीक'। आ एतेक कहिक' ओ बनारस जेबाक तैयारी लेल ओत'स' उठि गेल।

जाइस' पहिने समाजक दू-चारिगो प्रबुद्धजनस' विचार-विमर्श केनाइ रामकृपालके आवश्यक बुझेलै। ओ गामक सरपंच, सुक्खूक गिरहत आ दू-चारिटा टोलाक आदमीके ल' क' कने दूर एकान्तमे गप कर' चलि गेल। सभक विचार भेलै जे चारि चक्का रिजर्व कराबयमे बहुत खर्चा भ' जेतै आ सुक्खू पहिनहिस' विपतल छै से नहि त' तोँ सभ एतयस' मधुबनी लेल टेम्पू रिजर्व क' लैह आ मधुबनीस' कोनो टरेन पकड़िक' बनारस चलि जा, जदि

लहास लाबयबला बुझेतह त' ओतहिस' कोनो एम्बुलेन्स क' लिह', नहि त' हिन्दू धर्मशास्त्रक अनुसार दाह-संस्कार लेल बनारस सभस' उत्तम जगह छैहे।'

रामकृपाल मोबाइलमे समय देखलक त' रातिक साढ़े दस बजैत रहै। कतबो जल्दी करितय तैयो बारह बजे रातिस' पहिने मधुबनी नहि पहुँचल जा सकै छल। दोसर, मधुबनीस' बनारस होइत जाइबला पवन एक्सप्रेस आ स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस, दुनू ट्रेन दिनमे चलि गेल रहै, आब रातिमे मधुबनीस' बनारस जाइबला आर कोनो दोसर ट्रेन नहि छलै। ई फिरिसानी जखन रामकृपाल हुनका सभके कहलक त' ओ सभ रामकृपालके उपाय बतबैत कहय लागल—'तोँ सभ भोरे तीन बजे घरसे विदाह भ' जा, चारि बजे मधुबनीमे पटना जाय लेल कमला गंगा एक्सप्रेस हइ, ओकरा पकड़ि लिह' आ पटना पहुँचलाक बाद ओतयसे बनारस दिस जाइबला कोनो टरेन पकड़िक' सीधे बनारस चलि जइयह।' फेर वैह सभ रामकृपाल संग जेबाक लेल दीना, परमेसर आ जोगेन्द्रके तैयारो केलक।

एगारह बजे राति धरि गाम-समाजक लोक सभ अपन-अपन घर चलि गेल छल, रहि गेल छल त' मात्र दुसधटोलीक लोकसभ। ओकरा सभ लेल ई पहाड़ सनक दुखक राति काटब बड़ मस्किल छलै! तेहन समयमे ने ई दुखद समाचार मिललै जे कियो खेनहुँ-पीनहुँ नहि छल आ आब ई दुखद समाचार मिललाक उपरान्त कियो खाइओ कोना सकैत छल! सभ आदमी भूखल-पिआसल बाले-बच्चे ओहि छोट-छिन अँगनामे उपस्थित छल। बाल-बुतरू सभके जखन निन्न आबय लगलै त' ओ सभ दू-तीन टा फाटल-चीटल चटाइ बिछाक' बीचहि आँगनमे सुति रहल मुदा पुरुख लोकनि सभ एखनो सुक्खूके समझाबय-बूझाबयमे लागल छल त' स्त्रीगण सभ तीनू माय-बेटीके सम्बल बनि सम्हारैमे। आब ओ तीनू मायधिन किनसाइत दारुण दुखक सभ सिमानके लाँघैत-लाँघैत थाकि-हारि गेल, तहिना बेसुध-बेवश जकाँ बुझना जाइत छल, मुदा माय त' माय होइत छै! माय बेचारीके जखन शरीरमे कनिको ताकति संचित भ' जाइत छलै त' बताहिन जकाँ बड़बड़ाइत छाती पीटय लगैत छल।

मुदा ककरो दुख-सुख, व्यथा-विषादस' निष्ठुर समयके कोन मतलब! ओ त' स्वार्थी बनल सदति अपन राह चलैत रहै छै। रातिक अढ़ाइ बाजि गेल छलै, परमेसर रातिएमे मधुबनी तक जाए लेल कृष्णाक टेम्पू रिजर्व क'

लेने छल। रामकृपाल चारू आदमी बनारस जेबाक तैयारी लेल सुक्खूस' विदा ल' क' अपना-अपना घर चलि आएल आ नित्यक्रिया-कर्मस' निपटलाक बाद कपड़ा-लत्ता पहिरिक' सभ आदमी गहबर प्राँगणमे आबि टेम्पूक प्रतीक्षा करय लागल। रामकृपाल ओम्हरस' एम्बुलेन्सक किराया-भाड़ाक खिआल करैत जे घरमे आठ-दस हजार रुपया छलै से जेबीमे राखि लेने छल। कनिएँ देरमे कृष्णो टेम्पू ल' क' गहबर प्राँगणमे उपस्थित भ' गेल छल आ एम्हर चारू आदमी पहिनहिस' तैयार छलैहे, फटाफट टेम्पूमे बैसि विदा भ' गेल।

ओकरा सभके मधुबनीमे कमला गंगा एक्सप्रेस पकड़ा गेल छलै आ चारू आदमीके सीटो मिल गेल छलै। मधुबनीस' टरेनके खुलैत, राति भरि विश्रामक बाद, बैसाखक भोरका पछिआ हवा सेहो सिहकय लागल छलै। जखन भरि रातिक जगरनाक बाद ओकरा सभक देहमे ऊ भोरका हवा लागय लगलै त' बुझना भेलै जेना ओहि बसातक संग ओकर सभक चिन्ता-फिकीर उधिया गेलै। शोक-संतप्त देह एकदमस' शीतल हुअ लगलै आ आँखि अपने मने मुनाए लगलै। कखन कोन स्टेशन पार कएलकै, तकर कनिको जनतब नहि रहलै। ऊ त' पटनामे एगो सहयात्री जगा देलकै, नहि त' फेर चारू आदमी सुतले-सुतल आपिस मधुबनी चलि अबितय!

रामकृपाल जखन पटनामे पूछताछ खिड़की पर जाक' बनारस जाइबला गाड़ीक पता लगौलक त' पैंतालीस मिनट बाद अढ़ाइ बजे तीन नम्बर प्लेटफार्मस' गाड़ी खुलबाक जनतब भेटलै। इहे गप जखन ओ ओहि तीनू आदमीस' कहलक त' दीना धखाइते बाजल—'कक्का यौ, सभ आदमी काल्हि दुपहरिएक खैने-पीने छीक', भूखे-पिआसे हालति खराब भेल जाइ हैक' आ अखनि गाड़ीओमे लेट हइक' से नहि त' हमर विचार हैक', एतेक देरमे कुछ खा-पी लै जाइ जइती।'

रामकृपाल, जोगेन्द्र आ परमेसर दिस देखलक त' ओकरो दुनूके ठोर भूख-पिआसस' सुखाएल छलै आ ओकर अपनो सैह हालति छलै, हालाँकि एखन खाए-पीअए के उचित समय नहि छलै, मुदा सभ आदमी भूख-पिआसस' विवश छल। नहि चाहितो चारू गोटे प्लेटफार्म पर हाथ-मुँह धोक' स्टेशनक बगलबला एगो होटलमे बैसिक' जल्दी-जल्दी खा-पी लेलक आ नियत समय पर बनारस जाइबला टरेनमे बैसि गेल।

मोन भरि निन्न आ भरि पेट भोजनस' चारू आदमीके देहक रूहानी

त' फिरि गेल छलै मुदा दुखद घटनाक चलते एखनो सभकियो उदासे छल। टरेन खुलैत देरी दीना परमेसरस' चुनौटी माँगिक' खैनि घसय लागल आ रामकृपाल खिड़की दिस मुँह घुमाक' सोचय लागल, कोना हेतै टुन्नूआक लहास, कोन दशामे, कोन प्लेटफार्म पर, मेहमानके कियो सांत्वना देबयबला होतै कि नहि, ओ बेचारा असगर कोना सम्हारैत होतै लहासके! सोचि-सोचिक' ओकर देह सिहरि गेलै। ओ अपना जेबीस' मोबाइल निकालिक' मेहमानके फोन करय लेल बाध्य भ' गेल। चलैत काल परमेसर एगो कागत पर सुक्खूस' मेहमानक मोबाइल नम्बर ल' लेने छल। वैह कागत माँगि, ओ नम्बर डायल क' देलक। किनसाइत रामकृपालक नम्बर मेहमान पहिनहिस' सेभ कएने छल। फोन उठबिते व्याकुलतास' पुछलक—'बाबूजी, अपने सभ कत' पहुँचलखिन ग', अबय जाइ जौथ ने जल्दी, भोरस' हम हिनका फोन लगबैत-लगबैत तबाह भेल छीक', हिनकर मोबाइल नेटवर्कस' बाहर बतबै हनि। आब हमरो मोबाइल स्वीच ऑफ होइबला भ' गेल हैक'।'

रामकृपाल, मेहमानके आश्वस्त करैत कहलकै—'हम सभ पटनास' विदा भ' गेल छीक', तीन-चारि घंटामे पहुँचि जाएब, कोन प्लेटफार्म पर लहास हैक'?'

—'सात नम्बर पर।'

—'अच्छा ठीक हइ, हमसभ पहुँचै छीक'।' आ फेर मेहमानके सांत्वना दिअ लेल रामकृपाल बाजल—'मेहमान, जे होनी छलै से भ' गेलै, अहाँ बेसी चिन्ता-फिकीर नहि करब, किछु खैली-पी ली ग' की भूखले छी क'?'

मेहमान, रामकृपालक सांत्वना आ अपनत्वक भावनास' भावुक भ' गेल छल, बाजल—'बाबूजी, लहास छोड़िक' केना कतहु जइयै, कुत्ता-बिलाइ नोचि-खसोटि देतै, भरि राति असगरे जागिक' विहान केली ग'। एतय कोइ केकरो पूछ'बला नहि हइक', एक त' एम्हर बेसी आदमी नहि अबै हइक' आ जे कोइ एबो करै हइ त' पचास डेग अलगेस' मुँह-नाक पर रूमाल राखिक' चलि जाइ हइक'। के देखतै लहासके? परसुए के खएने छी, भूखस' पेटमे दरद करै छल ग' त' एक बोतल पानि पी ली ग'।'

रामकृपाल अपन तीव्र जिज्ञासाक कारणे मेहमानक फिरिसानी बिसरि गेल। ओ सोझे-सोझ पुछलक—'लहास महकि गेलै की?'

मेहमान छोट-छीन जवाब देलक—'बुझथिन सेहे।'

रामकृपाल अफसोच करैत बाजल—'ओह! जुलुम भ' गेलै! आब माय-बाप आ गाम-समाज ओकर मरलो मुँह नहि देखि पाओत! बुझाइ हैक' दाहो-संस्कार एम्हरे करय पड़तै।'

मेहमान हँ-मे-हँ मिलबैत बाजल—'हँ, बाबूजी, आब घर ल' जाइबला स्थिति नहि हइक' आ हमरो फोन स्वीच ऑफ होइबला हैक'। आब राखि देथिन।'

—'अच्छा, अपन खिआल राखब। हमसभ तीन-चारि घंटामे पहुँचै छीक'।' एते कहि रामकृपाल फोन काटि देलक। दीना, परमेसर आ जोगिनदरके खैनी दैत रामकृपालस' पुछलक—'कक्का यौ, की कहै छलै मेहमान, लहास महकि गेलै?'

—'हँ, मेहमान त' सैह कहि रहल छथिन।'

—'यौ कक्का, एहि जेठ-बैसाखक गरमी-गुमारमे बिनु बरफके कहीं एतेक देर लहास रहलै ग'!'

दीनाक गप सुनि परमेसर खौंझाइत बाजल—'अँय रौ, ओइ बेचारा लग जे पाइ रहितै त' ओकरा सुइया-दवाइ नहि करबितै जे छौंड़ा कच्छर काटिक' मरलै ग'! ऊ त' केन्हाइतो किराया-भाड़ा ऊपर क' क' छौंड़ाके घर पहुँचाबय लेल अबै छलै, ओकरा बरफ लेल कत'स' पाइ एतै!'

जोगेन्द्र परमेसरक हँ-मे-हँ मिलबैत बाजल—'हँ हौउ भैया, तोँ सही कहै छहक, छौंड़ा अभावे कच्छर काटिक' मरलै ग', ओकरा जोनरिसमे जे खीरा-ककड़ी, फूटि-तरबुज आ ऊखिक रस सभ खाइ-पीय लेल भेटितै आ नीकसे सुइया-दवाइ आ सेवा-टहल होइतै त' ऊ नहि मरितै। परदेशमे केकर के होइ हइक', मेहमान चलि जाइत होतै काम पर त' एकरा कोइ एक गिलास पानियो दइबला नै रहै होतै। असगरबे डेरामे काहि कटैत होतै। गाम-समाजमे रहितै त' ऊ नहि मरितै, सुक्खू भैया अपन देहो बेचिक' ओकरा बँचाइये लितै।'

परमेसर नम्हर साँस छोड़ैत बाजल—'बड़ मस्किल हइ परदेश कमेनाइ, लेकिन लोक करत की! अपना सभक ओत' करखाना सभ हइ नहि जे लोकके काम मिलतै आ नहि बेसी आब केकरो खेत-पथार रहि गेलै जे लोक बोनि-बुत्ता क' क' अपन आ अपना बाल-बच्चाके पेट पालत! मजबूरी हइक', परदेश जाहि पड़तै।'

जोगेन्द्र मैट्रिक पास छल, बाजल—'आ भोंट लिअ कालमे नेता सभ कहतह, बिहार में बन्द पड़े चीनी मिल, जूट मिल सभ खोलबाएँगे, घर-घर कुटीर उद्योग लगबाएँगे, हम अपने बिहारी भाइयों का पलायन रोकने के लिए नए-नए रोजगार का सृजन कर बिहार में ही काम लगबाएँगे, गुजरात, महाराष्ट्र, आसाम में बिहारी भाईयों को अपमानित होने से बचाएँगे, आ जीतलाक बाद सभ हवा-फूसि!'

जोगेन्द्रक गप सुनि रामकृपालके नहि रहल गेलै, ओ पुछलक—'अँय हौ, त' एहिमे दोख केकर?'

जोगेन्द्र चट द' कहलक—'ठकहरवा नेता सभक, आउर केकर!'

रामकृपाल ओकर गपके काटैत कहलक—'नहि हौ, बेसी हमर-तोहर दोख हयक', मुर्गा-दारू खा-पीक' अपन बहुमूल्य भोंटके साग-पातक भावमे बेचि दै छहक, जाति-पाति आ धर्म देखिक' चोर-उचक्काके नेता चुनि दै छहक आ कहबहक जे नेताके दोख हइक'! सभक माथमे छह जाति-धर्मक कीड़ा घूसल, हम हिन्दू छी त' ओ मुसलमान हइ, हम भूमिहार छी त' ओ गुआर हइ, हम दुसाध छी त' ओ चमार हइ! कहिओ आइ धरि कहलहक हम सभ मैथिल छी, कहिओ आइ धरि सोचलहक जे माय मिथिलाके विकास होयबाक चाही। नहि, एकदम नहि!

हौ, देश सर्वोपरि होय हइ, हमहुँ मानैत छियैक' मुदा जाधरि हमरा-तोरामे देशप्रेमक भावना संगे-संग क्षेत्रियताक भावना प्रबल नहि होतह, जाधरि हम-तोँ मिथिला विकासक मुद्दा पर एकमत नहि हेबह, ताधरि हमरा जनतबस' माय मिथिलाक विकास असम्भव बुझाइत हैक', आ जाधरि माय मिथिलाक विकास नहि होतह, ताधरि मिथिलामे पलायनक समस्या बनले रहतह, दिल्ली, बम्बइ, पनिजाबसे लहास अबिते रहतह।'

रामकृपालके जोगेन्द्र किछु उतारा दितै ताहिस' पहिने परमेसर बाजल—'भाइ यौ, सभ दिन सुनै छलियै ग' जे बाभन मैथिल होइ हइक', आइ अहाँ मुँहे पहिल दिन सुनै छियैक' जे अपनो सभ मैथिल छियै।'

परमेसरक गप रामकृपालके मिथिला-मैथिलीक प्रति समर्पित सेवा-भावनाके आहत क' देने छलै। ओ आवेशमे कने देर लेल बिसरि गेल कि हम एखन मैयतमे जा रहल छी। खौंझाइत नम्हर भाषण देबय लागल—'यौ, मिथिला क्षेत्रमे रहनिहार सभ जाति आ सभ धर्मक लोक मैथिल हइ, हम-अहाँ

जे मायक मुँहस' सीखने छी, सेहे अपन मातृभाषा हैक'। अपना सभ जइ भाषामे अखनि गप क' रहल छीक', सेहे मैथिली भाषा हइ, मुदा जे गप अहाँ अखनि कहलिए ग' से अहींटाके नहि, बहुतो ब्राह्मणेत्तर मैथिलक सोच हइक' जे मैथिल माने ब्राह्मण आ मैथिली माने ब्राह्मणक भाषा आ अइ सोच लेल हम जतेक दोख ब्राह्मणेत्तर मैथिलके दै छियैक', ओइसे बेसी दोषी हम मैथिल ब्राह्मणके मानैत छियैक', कियै कि ऊ सभ मिथिला-मैथिलीक नाम पर अपन रोटी सेकैमे लागल हैक'। हुनका सभके एकोरत्ती मोन नहि हइ जे मिथिला-मैथिलीक विकास होबाक चाही। ...आ जे से रहितनि त' ओ सभ मिथिलाक सभ जाति आ सभ धर्मक लोकके संग ल' क' चलैत मुदा ओ सभ त' अपन व्यक्तिगत आ जातिगत स्वार्थमे पड़िक' मिथिला-मैथिलीस' सम्बन्धित विभिन्न साहित्यिक आ सांस्कृतिक समिति-संस्थान पर अपन आ अपना समांगक आधिपत्य राखिक' मिथिला-मैथिलीक आन्दोलनसे अखनो धरि ब्राह्मणेत्तर मैथिलके बहुत दूर रखने छै। ...आ हमरा जनतबे ई सोच आर स्वार्थ राखयबला दुनू तरहक लोक मिथिला-मैथिलीक विकासक दुश्मन हैक'।'

एहि बेर जोगेन्द्र बाजल—'ओना अहाँ बाभन सभके दोख भलेहि दियौ भैया लेकिन वैह सभ विद्यापति स्मृति पर्व आ उत्सव मनाक' मिथिला-मैथिलीके प्रचार-प्रसार सेहो करैत रहै हइक'।'

जोगेन्द्रक गप रामकृपालके अनसोहाँत बुझना भेलै। ओ ओकर बातके काटैत कहलक—'जेकरा तोँ कहै छहक मिथिला-मैथिलीके प्रचार आ प्रसार, ओकरा हम बुझै छियैक' मिथिलाके संकुचित आ मैथिलीके गुलाम बनाबयबला षड्यंत्रक प्रयास। विद्यापति उत्सव आ पर्वस' मिथिला-मैथिलीके कोनो लेना-देना नहि हइक', ऊ बाभन सभके अपन जातीय पर्व आ पुरखा सभक तर्पण-त्योहार हइक'। जँ ऊ पर्व मिथिला-मैथिलीस' सम्बन्धित रहितै त' ओकर पोस्टर-बैनर पर विद्यापति, मण्डन मिश्र आ अयाची सन ब्राह्मणक विभूतिक संगे लोरिक, सलहेस, दुलरा दयाल सिंह, दीनाभद्री, माङगन खबास सन सेहो कोनो ब्राह्मणेत्तर मिथिलाक विभूति सभक एकटा कोन पर फोटो आ नाम रहितै! हिनको सभक नामे कोनो क्षेत्रमे एगो छोट-छीन पुरस्कारक आ सम्मान रहितै जाहिस' एम्हरको लोकके अपन साहित्यिक-सांस्कृतिक आ ऐतिहासिकता पर गौरवबोध होइतै, लोकमे मिथिला-मैथिलीक प्रति श्रद्धा आ सम्मान

बढ़ितै। तखन स्वभाविक छलै मिथिला-मैथिलीस' सम्बन्धित हरेक तरहक आन्दोलनमे लोक बढ़ि-चढ़िक' हिस्सा लितै, मुदा ओ सभ से नहि करतै, कियैक त' ओकर सभक मूल उद्देश्य मिथिला-मैथिलीक विकास नहि अपितु मिथिला-मैथिली पर अपन वर्चस्व आ आधिपत्य स्थापित केनाइ हइ।

ओना इहो गप सच हइक' जे विद्यापति स्मृति पर्व आकि मिथिला विभूति पर्वस' जुड़ल हरेक संस्था आ समितिमे अध्यक्ष आकि सचिव, कोनो एक पद पर एगो ने एगो दलित वा पिछड़ी जातिक जरूर रहै हइ मुदा एहूमे ब्राह्मण सभक षड्यंत्र हइक'। ओ सभ एहने बलिगोबिनाके चुनिक' पद दै हइक' जे ओ ओकर चाटुकार होइ हइ, जकरामे विरोध आ प्रतिरोधक क्षमता शून्य होइ हइ। ब्राह्मण सभ कहलक दिनके राति त' ओहो सभ कहलक राति। आ जँ कहीं एक-आध तेज दलित वा पिछड़ी जातिके ऊ पद मिलो जाइ हइ त' ओकरामे ब्राह्मणवाद भरि जाइ हइ। फेर उहो समाजक सभ जाति आ वर्गके नहि देखिक' अपन परिवार आ समांगके देख' लगै हइ। मतलब पद मिललाक बाद ब्राह्मण होइ आकि सोल्हकन, मिथिला-मैथिली हितक गप नहि सोचिक' अपन व्यक्तिगत स्वार्थके सोच' लगै हइ।'

जोगेन्दर रामकृपालक गपस' पूर्णरूपेण सहमत नहि छल। ओकरा नजरिमे मिथिला-मैथिलीके जे चाही से विकास नहि भ' रहल छै तकर सभस' पैघ कारण राजनीति छलै। ओ एहि मुद्दा पर एखन रामकृपाल संग तर्क-वितर्क करय चाहै छल। मुदा एगो स्टेशन पर टरेन रूकैत देखिक' परमेसर दीनासँ पुछलक—'कोन स्टेशन हइ रौ?'

दीना खिड़कीस' एम्हर-ओम्हर देखिक' बाजल—'आरा स्टेशन हैक'।'

टरेन रूकलास' बातचीतक दिशा बदलि गेलै, भेण्डर सभ सेहो बोगीमे चढ़िक' हल्ला-गुल्ला करय लगलै— 'हेय, गरमा-गरम लिट्टी, समोसे, हेय मूँगफली, टेम पास, हे गरमा-गरम चाय पीजिए, चाय।' रामकृपालके चाह पीबाक हिस्सक छलै। चाहबलाके देखिते अमल तेज भ' गेलै। चाहबलास' चारिटा चाह ल' क' चारू आदमी पीबय लागल। एम्हर टरेन दू बेर पों-पों क' क' खुलि गेलै।

खैनी खेनिहारके चाह पीलाक पछाति खैनीक अमल सेहो तेज भ' जाइ छै। परमेसर दीनाके हाथमे अपन चुनौटी दैत कहलक—'ले बौआ, एकेबेर खैनी बनो।' आ फेर रामकृपालस' पुछलक—'बनारस पहुँच'मे आब

कते देर लागत भाइ यौ?'

रामकृपाल बाजल—'जँ गाड़ी एहिना चलैत रहत त' तीन-चारि घंटामे पहुँचि जाएब नहि त' अबेरो भ' सकै हैक'।'

—'अँय यौ त' राति भ' जैत!'

—'त' की करबै, अपना हाथक बात हइक' जे चट द' पहुँचि जैब, गाड़ी-घोड़ाके बात हइ, देर-सबेर त' होबे करत।'

दीना खैनी घसि लेने छल, परमेसर दिस बढ़बैत रामकृपालस' कहलक—'अच्छा चलू ने कक्का, आब अबेरो होतै त' नहि कोनो बात हइक', लहास ल' जायबला झंझटि खत्म भ' गेल हइक', ओम्हरे दाह-संस्कार क' क' रातिमे टरेन पकड़ि लेब।'

रामकृपाल दीनास' कहलक—'अच्छा पहिने चल न, पहुँचलाके बाद जेहन स्थिति बुझैतै, तेहन सोचल जेतै।'

फेर सभकियो कुछ देर एम्हर-ओम्हरके गप-सप कर' लागल मुदा जखनि गाड़ी हिलैत-डोलैत छक-छुक आवाजक संग अपन उच्चतम स्पीड पकड़लक त' ओकर प्रभावस' चारू आदमी बैसले-बैसले औंघाय लागल, तकर बाद कियो केकरोस' कोनो विशेष बातचीत नहि कएलक, कखनो-कखनो चाह-चना-मूँगफलीबला भेण्डर बोगीमे आबिक' आवाज लगबैत छल त' केकरो-केकरो आँखि खुलि जाइत छलै मुदा एक-दोसराके बैसले-बैसले फोंफ काटैत देखि विवश भ' ओहो आँखि बन्न क' ओंघाय लागैत छल। चारि-पाँच घंटा समय कोना बितलै तकर केकरो पता नहि चललै, जखन गाड़ी काशी स्टेशन पार करय लागल त' अचक्के रामकृपालक आँखि खुलि गेलै आ ओ सभके धड़फराक' जगबैत कहलक—'आब बनारस पहुँचयबला छीक', सभकियो तैयार भ' जाउ।' लमसम दस मिनट बाद गाड़ी बनारस स्टेशनक तीन नम्बर प्लेटफार्म पर लागि गेलै, सभगोटे गाड़ीस' उतरि सात नम्बर प्लेटफार्म दिस विदा भ' गेल।

सात नम्बर प्लेटफार्म सहीमे सुनसान छलै। दूरहिस' देखा रहल छल उजरा गमछास' झाँपल टुन्नूआक लहास आ लहासक बगलमे उदास-हतास एसगरे बैसल मेहमान। रामकृपाल सभके देखतहि मेहमान भोकासी पाड़िक' कानय लागल। मेहमानके एना कानैत देखि दीनाके धीरज नहि राखल भेलै। ओहो मेहमानके भरि पाँज पँजियाक' हबोढेकार कानय लागल, बड़

भावुक दृश्य छलै, सभके आँखिमे नोर चलि एलै, रामकृपाल दुनूके एक-दोसरास' अलग क' क' समझाबय-बूझाबय लागल आ परमेसर अपना गमछास' दुनूके आँखि-मुँह पोछय लागल। किछु देर बाद जखन मेहमान अपन भावुकताके अपना कब्जामे क' लेलक त' लहासक मुँह परस' गमछा हटाबैत ओकरा सभस' कहलक—'हँय, देखय जाइ जेथिन न बौआके मुँह।'

गमछा हटिते लहास कने महकल, लेकिन ओतेक नहि जतेक कि ओ सभ मेहमानक बात पर सोचि लेने छल। हँ, लेकिन लहास आब घर ल' जायबला नहि रहि गेल छल।

रामकृपाल टुन्नूके मुँह देखैत बाजल—'ओह! बूझाइ हइ जेना अखनो सुतले हइक', कनिको लगबे नहि करय हइक' जे मरल हइक'!'

परमेसर लहासके गौरस' निहारैत बाजल—'आ देहो-दशा ओहिना बूझाइ हइक'। लगै नहि हइक' जे बेसी दिनस' बेमार भ' क' मरलै ग'। खाली जोनरिसके कारण देह-हाथ सभ पीयर भ' गेल हइक'।'

दीना भावुक भ' रामकृपालस' कहलक—'अपना सभके एगो समांग कम भ' गेल कक्का। ओह! ई क्रिकेट जे खेलाइ छल, दस गाममे एकर कोइ जोड़ा नहि छलै ग'।'

जोगेन्द्र, रामकृपालस' कहलक—'भैया, आब लहास अधिक देर राखयबला नहि हैक', जे करयके हैक' से जल्दी करू।'

रामकृपालके सेहो यैह विचार छलै। दीनाके लहास लग बैठाक' मेहमानक संग चारू आदमी लहासक पँचनामा कराबय लेल जीआरपी ऑफिस विदा भ' गेल। ओत' ओतेक दिक्कत नहि भेलै, जीआरपी के दरोगा नीक आदमी छलै। ओ अपना भरि एकरा सभके पूरा सहयोग कएलकै, दीनाके नहि रहितो ओकर बदलामे जोगेन्द्रस' औंठाक निशान ल' क' जल्दीए पँचनामा कागज तैयार क' देलकै आ फेर कागजक एक प्रति रामकृपालके दैत कहलकै—'यह कागज आप लोग अपने पास रखिएगा, लाश ले जाने में कोई दिक्कत नहीं होगी।'

रामकृपाल दरोगाके हाथस' पँचनामाक कागत लैत कहलक—'सर, लाश घर ले जाने लायक नहीं रहा, यहीं पर दाह-संस्कार कर देंगे।'

तैपर दरोगा कहबो कएलकै—'मणिकर्णिका घाट ले जाने पर खर्चा थोड़ा बढ़ जाएगा, अच्छा रहेगा राजा हरिश्चन्द्र घाट के विद्युत शवदाह गृह

में अन्तिम संस्कार कर दीजिए, खर्चा कम लगेगा।' आ फेर ओ एगो अपना सिपाहीके आदेश दैत कहलकै—'ये लोग बनारस शहर से अन्जान हैं, ठगा जाएगा। तुम हरश्चिन्द्र घाट के लिए दो-तीन सौ रुपया में एक ठो टेम्पू रिजर्व करवा दो।'

सभकियो हाथ जोड़िक' दरोगा साहेबक आभार प्रकट केलक आ फेर सिपाहीक संगे ऑफिसस' बाहर चलि आएल।

टेम्पू रिजर्व करबाबयस' पहिने रामकृपाल परमेसरक हाथमे एक हजार रुपया दैत कहलक— 'लिअ भैया, अहाँ जोगेन्द्रके ल' क' जाउ आ जतेक जल्दी हुए, कतहुस' दागक कपड़ा, फूल-अगरबत्ती आ एक डिब्बा सलाइ ल' क' सात नम्बर प्लेटफार्म पर पहुँचू, ताधरि हम सिपाहीजीक संगे एगो टेम्पू रिजर्व कराबैत छी।' पाइ ल' क' जोगेन्द्र आ परमेसर बजार दिस विदा भ' गेल, रामकृपाल आ मेहमान स्टेशन परिसरमे जतय टेम्पू सभ लागल छलै, ओतय पहुँचल।

पहिने लहास ल' जायके नाम पर कोनो टेम्पूबला तैयार नहि होइत छल आ जँ कियो तैयारो होइत छल त' सात-आठ सए रुपया भाड़ा माँगैत छल। सिपाहीजीक कतेक कहला-सुनलाक बाद एगो टेम्पूबला चारि सए रुपया पर तैयार भेल आ एगो दोगली दने सीधे सात नम्बर प्लेटफार्मक बगलमे जतय लहास राखल छल, ओतय टेम्पू लगा देलक।

किछुए कालमे परमेसर सेहो प्लेटफार्म पर पहुँचि गेल, सभकियो मिलि-जुलिक' लहासके दागक कपड़ा पहिरा-ओढ़ाक' फूल छिड़िया देलक आ अगरबत्ती-उगरबत्ती जराक' विधिवत ढंगस' लहासके टेम्पूमे राखि, हरिश्चन्द्र घाट लेल प्रस्थान क' गेल।

घाट पर पहुँचैत-पहुँचैत रातिक लमसम दस बाजि गेल रहै। परमेसर जल्दी-जल्दी दाह-संस्कारक सामान सभ खरीदय लागल आ रामकृपाल विद्युत शवदाहगृहमे पाँच सए एकावन रुपया जमा क' क' शवक नाम-ठेकान लिखा देलक। लमसम आधा-पौन घंटाक बाद विद्युत शवदाहगृहक एगो कर्मचारी एकरा सभके लहास ल' क' आबय लेल कहलक। सभकियो लहासके शवदाहगृहमे पहुँचाक' जखन अन्तिम दर्शन करय लागल, तखन ककरो धैर्य नहि रहलै। सभ एक-दोसराक गरदनि पकड़िक' ठोहि पाड़िक' कानय लागल।

शवदाहगृहस' निकलिक' सभकियो गंगाजीमे स्नान करबाक लेल घाट पर आबि गेल छल कि अचानक रामकृपालक मोबाइल घनघनाय लागल। देखलक त' घरक नम्बर छलै, फोन उठबिते ओम्हरस' राँटीबाली कने चहकैते कहलक—'यौ, अखनि तुरन्ते टुन्नूआके भगिना जन्म लेलकै ग', सातो पत्ता अनमन टुन्नूए जकाँ हइ, अखनि हम भरि टोलक जनिजाति सभ टुन्नूए अँगनामे छीक'।'

मनुक्खक भावना पोखरिक जबकल पानि जकाँ होइ छै। जेना पोखरिमे एगो ढेला फेकलास' शान्त स्थिर जल हिलकोर मार' लगै छै, तहिना मनुक्ख भावना छोट-छीन दुख-सुख, शोक-हर्षक अनुभूति पाबि उद्वेलित भ' जाइ छै। एहि दुखक घड़ीमे ई शुभ समचार रामकृपालक मोनक भावके स्थिर नहि रहय देलकै। कने देर लेल ओ सभ दुख-अवसाद, शोक-सन्तापके बिसरिक' प्रसन्नचित्त मुद्रामे ओकरा सभस' कहलक—'मेहमानके लड़का जनम लेलकै ग', हमर परिवार कहै हइ जे सातो पत्ता अनमन टुन्नूए जकाँ हइक'।'

रामकृपालक गप सुनि परमेसर गंगाजीके कल जोड़ि धन्यवाद ज्ञापित कएलक—'जय हे गंगा मैया, अहाँ बड़ दयामन्त छीक', दुखियाके दुख बड़ जल्दी सुनि लै छियैक'।'

जोगिन्द्र पुनर्जन्मक परिकल्पना करय लागल—'हौउ परमेसर भैया, अखने टुन्नूआके दाह-संस्कार केलह ग' आ अखने ऊ छौंड़ो जनम लेलकै ग', हमरा त' बूझाइ हैक' टुन्नूए दोहराक' जनम लेलकै ग'।'

रामकृपालके एम्हर गपमे बाझल बूझि राँटीबाली फोन राखि देने छल। रामकृपाल मोबाइलके जेबीमे राखिक' जखन मेहमानके गौरस' देखलक त' हुनको मुँह पर किछु संतोषक भाव नजरि एलै आ संगहि हुनकर भूख-पिआसक सेहो अनुमान लगलै। ओ सभके धड़फड़ाबय लागल—'हे, आब जल्दी-जल्दी स्नान करै जाइ जाउ, मेहमान तीन दिनक भूखल-पिआसल छथिन, बड़ भूख-पिआस लागल होतनि।'

सभकियो गंगाजीमे स्नान क' क' स्टेशन लेल टेम्पू पकड़ि लेलक आ फेर स्टेशन पहुँचिक' ओतय स्टेशनक बाहर एगो होटलमे खा-पीक' दुख-सुख, शोक-हर्ष, विषाद-उल्लासक द्वन्द्व-अन्तर्द्वंद्वमे फँसल रातिक बारह बजे पटना जाइबला टरेनमे बैसि रहल।

•